चक्रवर्ती तनूजाय सार्व भौमाय मंगलम्

श्रीमान्

सम्राट्-शुभागमन

जिसको

राजेंद्रनाथ पंडित.

संग्रहकर प्रकाशित किया.

बड़ोदा

श्री रामजन्म.  सम्वत १९६८.

बड़ोदा–श्री " गुजरात समाचार " प्रिं. प्रेसमें
महाशंकर लल्लुभाई भटने प्रकाशकके लिये छापा.

SAMRAT-SHUBHAGAMANA

Collected and Published.

By

RAJENDRANATH PANDIT.

BARODA.



27th March. 1912 A. D.



गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं नचवयः

अर्पण

श्रीमान्–महंत मथुरादासजी गुरुवर्य्य श्रीआत्मारामदासजी महाराज–प्रधानमंत्री श्री वैष्णव साधु महामंडल, एवं सम्पादक साधु–स्वस्थान–श्रीरामजी मंदिर बड़ोदा.

आप श्री कई वर्षोंसे तनमनधनसे साधु समुदायका महान उपकारकर रहे हैं। तथा कई वर्षोंसे आपका हमारा विशेष परिचय होनेसे स्नेह के उपहार स्वरूप यह "सम्राट–शुभागमन" पुस्तक हम आप के करमे अर्पण कर अपनेको धन्यमानते हैं–क्योंकि

"गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ती ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः"

विनीत

राजेन्द्र.



श्रीमान् महन्त श्रीमथुरादासजी गुरुवर्य्य श्रीआत्मारामदासजी महाराज
जागीरदार, प्रधानमंत्री—श्रीवैष्णव साधु महामंडल,
एवं "सम्पादक साधु" बड़ोदा।



सिंहासन स्थित प्रिया-युत सौख्यकारी,
सौदामिनी-सहित नीरद-कान्ति हारी।
त्रैलोक्यनाथ सुर-पूजित पाद पद्म,
श्रीराघवेंद्र भजरे मन ! छोड़ छद्म ॥ [गु. स. प्रे.]

भूमिका.



दोहा.

कृष्ण चरणको ध्यान करि, रमा पाद शिरनाय
श्री सम्राट–शुभागमन, संग्रह करुं चितलाय
सकल गुणनिकी खानि हैं, सदाप्रसन्न, रमेश
तिनके पद वन्दन करूं, जेहिं चाहत भूपेश
रंभा सरिस ललाम तनु, अशित नैन शुखदैन
सुरसुन्दरि जेहिं लखिनमै, वन्दन करौं चित चैन.

इंग्रेजी राज्यका महत्व बर्णन करना सूर्यको दीपकसे देखाने के बरोबर है । इसके संबन्धमें प्रथम जब श्रीमान् सम्राट भारतेश्वर सप्तम एडवर्डका लोकान्तर वास हुआ उस समय हमने " सम्राट् शोक शमन " नामक पुस्तक लिख हृदय वेदना शान्तकी थी, और वह पुस्तक श्रीमहंत मथुरादासजी आत्मारामदासजी के तरफ से छपाकर पाच सौ पुस्तकै मुफत वांटी गई थी । उसमें पाच भाषाओंमें घोषणा पत्र और अनेक कवियोकी कविता थी । सीघ्रहीं हमे यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ कि । श्रीमान् भारतेश्वर पंचम जार्ज भारतमे पधार क्रीट धारणोत्सब किया । इस महान् उत्सवके प्रसंगमे हम स्मरण स्वरूप करी कैया सक्के हैं । तौ भी यह महान उत्सव चिर स्मरण रहै इस उदेशसे विशेष कर बिद्यार्थी वर्ग इन उत्तम कविताओंको कंठस्थ कर राजनिष्ट हों येही प्रधान उदेश है।

यह बात तो निश्चै है कि किसी महान प्रसंगको ताजा करने के लिये "कविता" मुख्य साधन है। हम लोगोंका श्रीरामकृष्ण ऊपर क्यों अतुलनीय प्रेम है केवल कविता के लिये। यदि रामायण, भागवत, आदि ग्रन्थ न होते तो हम उनके गुण कैसे जानते इसी से हम कहते हैं कि इतिहास उसमें भी "पद्य" कीर्तिका मुख्य साधन है। इतिहास गद्य हो, तो एक वखत वांचलेनेपर फिर उसमे कमरुची होती है परन्तु पद्य कंठस्थ कर मनुष्य स्वभावसे ही चलते फिरते बोला करता है। इससे विशेष लाभ होता है। पहिले हमारा विचार था कि केवल संस्कृत कविताकी पुस्तक बने, फिर हमारे मनमें आया कि वह केवल संस्कृत जनोको ही आनन्द प्रद होगी इससे हिन्दी कविता भी ली जावें, जब हिन्दीका संग्रह किया तव यह बात निश्चै हुई कि सभी देशकेस्कूलौमें छात्रोंको और सर्व साधारणको अनुकूल पड़े इससे हमने कई भाषाओंके कविता का संग्रह किया। हमारी इच्छाथी कि इस पुस्तकमें पंजाबी, तेलंगु तामिल, ओडिया, बंगाली, पंजाबी इत्यादि सभी भाषाओंमें राज्याभिषेक संबन्धी कविता ली जायँ और इसके लिये हमने कई जगा लिखा भी उनमेंसे कई सभा सोसायटी एक भाषाकि हिमायत वालीथीं, मद्रास प्रान्तमें भी एक दो प्रतिष्ठित सज्जनोको लिखा परन्तु "सुधानिधि" सम्पादक–पं. जगन्नाथप्रसादजी शुक्ल प्रयाग, के अतिरिक्त और किसीने जबाब तक न दिया, आपने यथा साध्य कविता भेजने की अवश्य कृपा की जिस समय पत्रोंमें कविता छपने लगीं, उस समय कार्य वस हमें ग्रामान्तर जानापड़ा इससे संग्रहमें हम पूर्ण कृत कार्य नहोसके तौ भी जो कुछ संग्रह किया है आपके सामने है।

इस महान उत्सवके प्रसंगमें जिसमें जितना बुद्धी बलहोगा अवश्य कविता करनेमे त्रुटी नकी होगी, संग्रह करनेमें भी हमने समयानुसार, कविताके छंदोको कमजास्ती कर लिया है, प्रथम केवल कविता मात्र संग्रह करनेका विचार था, पीछे हमारे एक परिचित महाशय, श्रीयुत गोवर्धनदास मूलजीभाई महताके अनुरोधसे दिल्ली वर्णन, दर्शनीय स्थल, सम्राट्का प्रवास आदि सामिल कर दिया। आपने प्रूफ तपासनेमें भी सहायता की है कविताओंकी शुद्धी तपासना कठिन काम है तौभी जहांतक हमारा बस चला मूलपद्य ज्योंका त्यों रहने दिया है तौभी दृष्टि दोससे.

पुस्तकमेअशुद्धया

अवश्य हैं उनमें प्रधान अशुद्धियां जैसे पृष्ट १५ के फुटनोटमें १८०५ की जगह १७०५ इसीतरे ३१ पृष्ट की १४ पंक्तीमे भक्ति, पृष्ट ४३ में १७ पक्तीमे श्रीमन्भारताधीश और पृष्ट १४२ की १८ पंक्तिमें प्रशस्ति पढ़े तथा पृष्ट ९४ पंक्ति ९ मे चहुं के आगे ओर शब्द जोड़ें। असावधानीसे गुजराती विभागमें एक मराठी कविता भी आगई है। और भी इसमें सैकड़ो भूल हैं कागज, स्याही, छपाई कुछ भी उत्तम नहीं हैं मात्र इसमें श्रीमान् सम्राट् और श्रीमती सामराज्ञीका यशोगान है वही उत्तम हैं। इनमें कुछ कविता ऐसी भी हैं कि जो दूसरे की बनाई दूसरे कवियों-द्धारा पढ़ी गई हैं। अतःकई जगे पढ़नेवालेका नाम छपा है। जिन पत्रोसे कविता ली गई, उनका नाम ऊपर और कवि, व पढ़ने वालोंका नाम नीचे छाप दिया है, वेद मंत्रोका अनुवाद हिन्दी, अंग्रेजी में, और पारसी धर्म पुस्तक "जिन्दवस्ता" का अनुवाद गुजरातीमे प्राप्त भया वही रख दिया है उस भाषा मे फेर फार करना हमने योग्य न समझा। पत्रके नाम और कविता तथा

लिखनेमें किसी प्रकारका अनुक्रम नही है जो जैसे प्राप्त हुये उसी तरे ले लिया है । प्रेसके कर्मचारियोंने भी जहांतक बना सावधानी से कार्य किया है । यदि भूलसे प्रमाद वस अशुद्धी या नाम आगे पीछे या कोई नाम रह गया होय या जो कुछ कसर रही होय उसे हम

क्षमाकरैं

इन चारऽक्षरोमें समाधान करते हैं
यस्य प्रभावाद्भुवनं शास्वते पथितिष्ठति ।
देवाःस जयति श्रीमान दंड धारो महीपतिः

उन वर्तमान पत्रोंके नाम जिनकी कवितासे यह पुस्तक सुशोभित है ।

पत्रो.

मंजुभाषिणी(संस्कृत),भारत मित्र (हिन्दी) हितवार्त्ता, शुभ चिन्तक,अभ्युदय, मिथिला मिहिर, शिक्षा, वैदिक सर्वस्व,सुधानिधि, साधु, सनातन धर्म पताका, श्री वेंकटेश्वर समाचार, लक्ष्मी, गृह लक्ष्मी, सरस्वती, भूमिहार ब्राह्मण पत्रिका, बुद्धिप्रकाश (गुजराती) महीकाठा रेवाकाठा गजट, धन्वतरि,कड़वा विजय,मुंबई समाचार, सत्य विजय, गुजराती, एक पुस्तक (मराठी), मासिक मनोरंजन, चित्रमय जगत,लोक मित्र,

संस्कृत कवितामे नीचे लिखे महाशयोके नाम हैं

श्रीमान् अनन्ताचार्य्य स्वामीजो, प्रतिबादि । भयंकर. कांची, श्रीमान् राजगोपालाचार्य. चन्नपुरी, नां. रामनाथ शास्त्री.· मन्ना-गुडि वि. उमामहेश्वर शास्त्री. हरिराम शास्त्री. औरंगाबाद, ति. च.

श. ना. श्रीताताचार्य, कुंभकोणम्, नरहरी शर्म्मा, देवप्रयाग, देवरकोण्डऽ बाल सुब्रह्मण्य, ए.डी. हरिशर्मा,यस. राधाकृष्णाय्यर, सम्पादक, बागीश्वरीटोळ. रामचंद्र योतिषो मंत्री. मा. ब्रा. स. कलकत्ता. खापे. नागराज शर्मा, नृसिंहाचार्या कोची, अनन्त शास्त्री. बदनावर, वाद्य सिद्धान्त रक्षिणी सभा सभ्य. रघुवरदयाल शास्त्री, नौधरा, नारायण पाठशालाके अध्यापक गण, रामचंद्र शर्मा आगरा. कुशेश्वर कुमार बाजितपुर, श्री सुरेश सर्मा, सीतलप्रसाद शर्मा छपरा, बुलाकीराम विद्यासागर अजमेर, शास्त्री श्रीनिवासा, चार्य बड़ोदा, हिंमतलाल मूलजीभाई महता भादरवा. पं. धर्म्म नारायण द्विवेदी, चन्द्र शेखर ओझा शास्त्री. गोस्वामी लक्ष्मणाचार्यजी मथुरा. पं. मिहिर चंद्र शास्त्री, बन्नू

महाराष्ट्र

द. वि. तिनैकर, ए. पा. कुलकर्णी रेदालकर,ना. वा. तिलक श्रीयुत राधारमण दापोली, श्रीमती. सौ. लक्ष्मीबाई तिलक, अहमदनगर, श्रीयुत, दत्तात्रय भिमाजी रणदिव–मिरजंगाम, श्रीयुत सदाशिव नारायण, ढोसर B. A. L. L. B. मुंबई,गोविन्द पांडुरंग देवधर B. A, रावसाहेब पुरुषोत्तम बालकृष्ण जोषी B. A.

हिन्दी कवितामें नीचे लिखे महाशयोंके नाम हैं

पं. बालाप्रसाद, पं. सीताराम, खुशालीराम, बड़बानी, वैद्य रामप्रसाद शुक्ल, परमानन्द जैन हीरापुर, राजा साहब फतहसिंह जूसाहब पुवाया, पं. राजधरलाल, मुरलीधर युगेंद्र शर्मा, शंकरराव शर्मा, २ सीतारामं, प्राणशुख अध्यापक अलीगढ़,बसंतराम, नम्र. महंत लक्ष्मणदासजी, राजभट्ट, शिवाधीन ब्रह्मभट्ट, राय देवी प्रसाद,

(पूर्ण) कानपुर, मदनराज श्रीमाली रतलाम मंगलदीन उपाध्याय, राजापुर, रामनाथ, लश्कर (ग्वालियर) शिवदास पांडे मस्तूरी श्री सुजान कवि, हल्दी. पन्नालाल, हरि गुलाम ठाकुर गोरखपुर, मुरलीधर शर्मा बदायु, शेठ जानकी प्रसादजी, सोहनलालजी.

गुजराती कवितामें नीचे लिखे महाशयोंके नाम है

H. D. K, बारोट केशवलाल श्यामजी, महा शुखभाई चुन्नीलाल वीसनगर, दुर्गाशंकर हरी शंकर व्यास महुआ, कंचनलाल छगललाल बक्षी, नादौद , अंबालाल आचार्य पाटन, जटाशंकर अलवेश्वर त्रिवेदी, लालजी केशवजी कराची. मड गामकर भावनगर,

उर्दु

नाझीम, मुन्सी गुलाम अलीगुलाम नवी, हाजी सय्यद तजम्मुल हुसैन

अंग्रेजी

पं. रघुवीर नारायण शरन,केशवलाल V. भट्ट B. A. रघुवीर नारायण–छपरा

भवति किल नृपालः शक्रवाय्वर्कपुत्ररविशुचिवरुणानां चन्द्रवित्तेशयोश्च ॥वपुरिति मनुमुख्यैर्धर्मशास्त्रे यदुक्तं तदनुसरति वर्षे भारते सज्जनौघः ॥ १ ॥ स्वामिन्पञ्चमजार्ज एहि महिषीमेरीयुतो भारते श्रद्धान्तः करणाः प्रजाः सुरधिया ते स्वागतं कुर्महे ॥ विद्याभिः सुकलादिभिर्विरहिता यद्यप्यहो दीनकाः स्वामिन् दीनदयापरोऽस्यमलया भक्त्या प्रसीद प्रभो ॥ २ ॥ राजेन्द्रनाथ पंडित

PREFACE.

India is well known for its loyalty from times immemorial. Thousands of kings had its possession, and its people have ever since rem ined loyal to them Among them Ramchandra, Krishnachandra and Yudhishthira were and are worshiped by the people for their excellant systems of government. We have a feeling of reverence for them still continued also by the world-praised poems of Râmäyan, Bhâgavat and Mahâ Bharuta.

If we look carefully, the coronation of George V is of more importance than that of Shri Krishnachandra. (श्री कृष्ण) When He was crowned, He had only some portion of Dwarka in which the stayed with His family. As regards Yudhishthira also we find that his coronation took place after a blood shed slaughter of his relations in the war of eighteen days. And when we look to the Chakravartee Emperor Dasharath we come to learn that he had the possession of fifty crores of miles of land which according to our ancient books is the area of the whole earth. He has once told to his Queen Kakayee (यावदा वर्तते चक्रं तावती मे वसुन्धरा) that the Sun never set on his empire, but when he mentions his protected states such as Dravid (a part of Madras), Sindhu, (a part of Karanchi), Behar, Sauvir, Sourashtra, (a part of Katiawar.) (द्राविड़ाः सिन्धुसौवीरा सौराष्ट्रा दाक्षिणापथा अगांग मगधा मत्स्या समृद्धा काशि कोशला) we can clearlyy say that he did not possess the whole of Hindustan. That is to say, we do not find countries mentiond those of the outside of India. Therefore I think he might have attempted to be considered a Chakravatin in the eyes of his Queen. The King Dasharath did not possess Madras (मदरास)

because Ravan had a military station at Nassik in Dandk rnya (दण्डकारण्य). Trishira, Khara and Dushan stayed there. And for the military expences Trishira was given Trichinapoli त्रिशिरापल्ली) district. There are still found the images of Shiva and his son Ganesha placed byTrishira.

Now wnen we look to Râma Raja we find that He (राम) could not get the crown inspite of so many preparations, therefore I cannot but say that coronation Darbar (of Dehli) is superior to the former.

In this Sumrat Shubhagamana " सम्राट् शुभागमन " I have collected poems (Sanskrit, English,Urdoo, Gujarati, Bengali, Marathi etc.) published in several Newspapers of India. I have introduced Vadic Mantras and verses from Zindavasta in addition to the the history of Delhi kings commencing from Yudhisthir to this day. I have also made a short description of the buildings of the ancient city.

It would become a big volume like Ramayan or such other book if all the poems and songs from so many newspapers be collected and published. I had a wish. But I am helpless on account of pecuniary supply. If this book be introduced into schools for examination purposes, I am sure it will benifit them much and promote more of loyalty into the young minds. I earnistly wish that students would make a a repid use of these songs and poems full of 'Loyalty.'

It is not suffieient how Greater we write in praise of their Imperial Majesties George V and Mary, who are more gracious than other kings and queens ever existed on the surface of the earth.

Dated 27th March, 1912. } Rajendranath Pandit. Sadhu Office—Baroda

राजेन्द्रनाथ पंडित उर्फे रामप्रपन्नाचार्य्य

सहायकारी मंत्री, श्री वैष्णवसाधुमहामंडल-बडोदा.



अहह ? हृदय, क्यों तू दीर्घ निश्वास लेता ?
दृढ बन अपने को क्यों नहीं धैर्य देता ।
जब सब सुख भोगे एकहीं साथ तूने, .
तब अब जगके ये दुःख भी भोग दूने ॥ [गु. स. प्रे. ब.]



सम्राट् शुभागमन।

इंद्रप्रस्थका इतिहास।

महा भारत आदि पर्व २०८ वां अध्याय:-

जब युधिष्ठिर प्रभृति पाण्डव गण द्रौपदीको लेकर द्रुपद पुरीसे हस्तिनापुर आये तब उनके पितृव्य (काका) महाराज धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिरजी से कहा कि—तुम राज्यका अर्ध भाग लेकर अपने भ्राताओं समेत खाण्डव प्रस्थमें जा बसो। जिस से तुम लोगोंसे हमारा फिर बिगाड़ न हो। युधिष्ठिरादि पाण्डवोंने हस्तिनापुर के राज्यका अर्ध भाग प्राप्त कर खाण्डव प्रस्थके पुण्य स्थानमें शान्ति कार्य करा कर एक नगर बसाया, जो कि भांति २ के मन्दिरों तथा अनेक सरोवर वापी आदि अनेक प्रकार से इन्द्रपुरीकी भांति शोभायमान हो गया। और इसका नाम इन्द्रप्रस्थ पड़ा। क्योंकि यह इन्द्रपुरीकी भांति ही सुशोभित था।

२२२ वां अध्याय:-

श्री कृष्ण और अर्जुन इन्द्रप्रस्थमें यमुना नदीके तटपर आखेट (शिकार) का आनन्द लेने लगे। (सभा पर्व) महाराजा युधिष्ठिरने चारों दिशाओंके राजाओंको पराजित कर इन्द्र प्रस्थमें राज

सूय यज्ञ किया । (शान्ति पर्व) ४० वां अध्याय) उसके पश्चात् कुरु क्षेत्रीय संग्राममें राजा दुर्योधन के पुत्रादिके विनाश होनेपर राजा युधिष्ठिर कौरवोंकी राजधानी हस्तिनापुरमें राज सिंहासन पर बैठे । और राज शासन करने लगे । (मौशल पर्व प्रथमाध्याय) राजा युधिष्ठिर का हस्तिनापुरमें राज तिलक होने के ३६ वें वर्ष प्रभास क्षेत्रमें यदुवंशियोंका नाश भया । (७ वां अध्याय) तब अर्जुन बचे हुए बालक, वृद्ध और स्त्रियोंको द्वारका और प्रभास से ले आये । उन्होंने उनमेंसे बहुतेरों को कुरु क्षेत्रमें, बहुतेरों को मार्त्तिकावत नगरमें और बहुतेरों को सरस्वती के तटपर बसा कर अनिरुद्धके पुत्र तथा कृष्णके प्रपौत्र वज्रको इन्द्रप्रस्थ का राज्य प्रदान किया । और विभाग क्रमसे बहुतेरे द्वारका वासियोंको वज्रके समीप इन्द्र प्रस्थमें स्थापित किया ।

(आदि ब्रह्मपुराण के ९९ वें अध्यायमें देवी भागवतके द्वितीयस्कन्धके ८ वें अध्यायमें और श्रीमद् भागवतके ११ वें स्कन्धके २१ वे अध्यायमें भी लिखा है कि अर्जुनने वज्रको इन्द्र प्रस्थका राज्य दिया ।)

(महा प्रस्थानिक पर्व प्रथमाध्याय) राजा युधिष्ठिरने धृत राष्ट्र के पुत्र (वैश्या स्त्री से उत्पन्न) युयुत्सुको राज्य भार देकर अर्जुन के पौत्र परीक्षितको हस्तिनापुरके राजसिंहासनपर बैठाया और भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव और द्रौपदीके साथ महा प्रस्थानको चल दिये ।

मत्स्य पुराण ५० वां अध्याय—राजा परीक्षित के पश्चात् इस क्रमसे पाण्डु वंशीय राजा होंगे:—

१—जनमेजय, २ शतानीक, ३ अधि सोम कृष्ण, ४ विवक्षु, ५ भूरि, ६ चित्र रथ, ७ सुचिद्रव, ८ वृष्णिवान, ९ सुषेण, १० सुनीथ ११ नृ चक्षु, १२ सुखीवल, १३ परिष्णव, १४ सुतपा, १५ मेधावी, १६ पुरंजय, १७ ऊर्व १८ तिग्मात्मा, १९ बृहद्रथ, २० वसुदामा, २१ शतानिक, २२ दयन, २३ वही नर, २४ दण्ड-पाणि, २५ निमित्र, और २६ क्षेमक ।

राजा क्षेमक के पश्चात् यह वंश नष्ट हो जायगा ।

श्रीमद् भागवत, ९ वां स्कन्ध २२ वां अध्याय—राजा परी क्षित के पश्चात् इस प्रकार पाण्डु वंशीय राजा होंगे

१ जनमेजय, २ शतानीक, ३ सहस्रानीक, ४ अश्वध्वज, ५ असीम कृष्ण, ६ नेमि चक्र, ७ उप्त, ८ चित्र रथ, ९ कवि रथ, १० वृष्णिमान् ११ सुषेण, १२ सुनीथ, १३ नृचक्षु, १४ सुखीनल, १५ परिप्लव, १६ सुनय, १७ मेधावी, १८ नृपंजय, १९ ऊर्व, २० तिमि, २१ बृहद्रथ, २२ सुदास, २३ शातानिक, २४ दुर्मन २५ वहीनर २६ दण्ड पाणि, २७ दुर्नेमि और २८ क्षेमक ।

छठे राजा नेमि चक्रके राज्यके समय जब हस्तिनापुर गंगामें डूब जायगा । तब वह राजा कौशाम्बी नगरीमें निवास करेगा । राजा क्षेमक के पश्चात् यह वंश समाप्त हो जायगा ।

पाण्डुबंशी राजाओंके पश्चात् तक्षक वंशी १४ राजाओंने इन्द्रप्रस्थमें ५०० वर्ष राज्य किया । १ विसर्व, २ सुषेण, ३ शीर्ष, ४ अहंशाल, ५ वर्जित, ६ दुर्वीर, ७ सदापाल, ८ शूरसेन, ९ सिंहराज, १० अमरवाद, ११ अमरपाल, १२ सर्वाह, १३ पद्राद् और १४ मदपाल ।

राजा मदपाल अपने मंत्रीके हाथसे मारागया। उसके पश्चात् गौतमवंशीय १५ राजाओंने इन्द्रप्रस्थका शासन किया-महाराजि, २ श्री सेन ३ महीपाल, ४ महावली, ५ श्रुतवर्त्ती, ६ नेत्रसेन, ७ सुमुख, ८ जितपाल, ९ कलंक, १० कुलमान, ११ श्रीमर्दन, १२ जयवङ्ग १३ हरगुज, १४ हर्षसेन, और १५ अस्तिन।

गौतमवंशका अन्तिम राजा अस्तिन अपने मंत्रीको राज्यकाज सौंपकर आप विरक्त होगया। उसके पश्चात् इन्द्र प्रस्थमें मौर्यवंशी ९ राजा हुए। १ दुधसेन, २ सिद्धराज, ३ महागंग, ४ नन्द, ५ जीवन ६ उदय ७ जिहवूल ८ आनन्द और ९ राजपाल।

राजपालने, "जिसका दूसरा नाम दिल्लूथा" सन् ई० से लगभग ५० वर्ष पूर्व इन्द्रप्रस्थके पड़ोसमें कई मील दूर एक नगर वसाकर अपने नामके अनुसार उसका नाम दिल्ली रक्खा। तभीसे दिल्ली नाम प्रसिद्ध हुआ।

राजा राजपालने कमाऊंके राजा सुखवंतके राज्यपर, जिसका नाम शकादित्य भी था आक्रमण किया। राजपाल युद्धमें मारागया। सुखवंत इन्द्र प्रस्थका राजा हुआ। उसके पश्चात् उज्जैनके राजा विक्रमदित्यने सुखवंतको मार कर उसका राज्य लेलिया। विक्रमादित्यके समयसे भारतवर्ष की राजधानी उज्जैन होगई। और दिल्ली की अवनति होनेलगी। कुतुबमीनार के निकट सन्. ईस्वीके तीसरी या चौथी सदीका लोहस्तम्भ है। जिसपर उस समयके प्रतापी राजा धवका यश खोदकर लिखा हुआ है। सन् ७३५ में तोमर वंशीय राजा अनङ्ग पालने,

जिसका दूसरा नाम बलत्रानदेव था दिल्लीको, जो बहुत कालसे उजाड हो गईथी फिरसे बसाया। और उसने अपनी राजधानी बनाया।

तोमर वंशका १४ वां राजा कुमारपाल और १५ वां राजा द्वितीय–अनङ्गपाल हुआ। कन्नौजके राठोर राजपूतोंके प्रतापसे दूसरे अनङ्ग पालसे पहिले दिल्ली की दशाहीन हो गईथी। किन्तु उसके राज्यके समयसे दिल्ली की उन्नति होनेलगी। उसने शहरको सुधारा और चारों ओर किलाबंदीकी जो अबतक देखनेमें आती हैं।

कुतुब मीनारके निकट राजा धावके स्तम्भके दूसरे लेखसे जानपड़ता है कि सन् १०५२ में दूसरे अनङ्ग पालने दिल्लीको बसाया।

सन् ईस्वीकी १२ वींसदीमें दिल्लीके तोमरवंशीय १९ वां राजा तृतीय– अनङ्गपाल हुआ। अजमेर के चौहानराजा सोमेश्वरने, जिसे विशल देव भी कहते हैं अनङ्गपालको परास्त करके अपने आधीनका राजा बनालिया। विशल देवके बनाये हुए "हरकेलि" नामक नाटकका कुछ भाग सिलेके तखतोंपर खुदा हुआ अजमेरके ढाई दिनके झोंपड़ेमें अबतक रक्षित है। लेख वर्तमान नागरीसे मिलता है। उनमे विक्रमीय सम्बत १२१० लिखा है। राजा अनङ्ग पालके कोई पुत्र न था।

केवल दो पुत्रीथीं। जिसमें एक कन्नौजके राठोर राजासे और दूसरी अजमेर के राजा सोमेश्वर से बिवाही गई। अनङ्ग पालकी बड़ी पुत्री से कन्नौजके राजा जयचन्द्रका और छोटी से

सन् ११४९ में अजमेरके पृथ्वीराजका जन्म हुआ। पृथ्वीराज सन् ११५५ में अपने नाना अनङ्ग पालके पास चला गया। और उनकी मृत्यु होनेपर ११६२ में उनका उत्तराधिकारी बना। इस भांति पृथ्वीराज अजमेर और दिल्लीको अधिक दृढ किया। सन् ११८५ में कन्नौजके राजा जय चन्द्रने राजसूय यज्ञका अनुष्ठान और अपनी कन्याका[१] स्वयंवर किया। उसने पृथ्वी राजको छोड़ कर अन्य सब राजाओंको निमंत्रण किया था। और पृथ्वीराजकी स्वर्ण मूर्ति बनवाकर द्वार पालके स्थानपर रख दिया। राज कुमारी ने स्वयंवरमें स्वर्ण मूर्ति के गलेमें जय माला डालदी। उसी समय पृथ्वी राजने सभामें अकस्मात् आकर राजकुमारीको घोड़ेपर बैठा कर अपनी राजधानीको चल दिया। इस से राजा जयचंद्र काबड़ा अपमान हुआ।

सन् ११९१ में अफगाणिस्तानके गोर शहरके रहनेवाले सहाबुद्दीनने, जो महम्मद गोरीके नामसे प्रसिद्ध है। भारत वर्षपर आक्रमण किया। पृथ्वी राजने उसको थानेश्वरमें परास्त करके ४० मील तक उसकी सेनाका पीछा किया। सन् ११९३ में सहाबुद्दी-नने भारी सेना लेकर फिर आक्रमण किया। लोग कहते हैं कि कन्नौजका राजा जय चन्द्र उसको चढालाया था। शहाबुद्दीन और पृथ्वी राजमें दृषद्वती (घाघरा) के किनारे बड़ा संग्राम हुआ। अन्य राजाओंसे वैमनस्य होनेके कारण सहायता प्राप्त न होनेपर पृथ्वी राज परास्त होकर मारा[२] गया। दिल्ली मुसलमानोंके आधी

१ इसका नाम " संयुक्ता " कई पुस्तकोमे है।

२ रासामे कैद कर नेत्र हीन करना लिखा है और शब्द भेदी बाण से बादशाह पृथ्वी राज चंद भाटके आपुसमे मरनेकी बात है।

न हुई, हिन्दुओंकी स्वाधीनता गई, और भारत वर्ष मुसलमानोंके हस्त गत हुआ।

शहाबुद्दीनने एक वर्षके भीतरही जयचन्द्रको संग्राममें मारकर कन्नोजका राजभी ले लिया। उसने हिंदुस्तानमें रह कर कभी राज्य नही किया। वह कभी हिन्दुस्तानमें और कभी अपने देशमें लड़ताथा।

गुलाम खान दानके १० बादशाह,-१ कुतुबुद्दीन—यह शहाबुद्दीन गोरीका सुवेदार था,जो उसके मरनेपर सन् १२०६ में स्वतंत्र दिल्लीका बादशाह बनगया। इसीने दिल्लीके पास कुतुब इसलाम मसजिद बनवाई। कहते हैं कि कुतुब मीनारका काम इसीने आरम्भ किया।

२ आरामशाह—कुतुबुद्दीनके मरनेपरे उसका पुत्र आरामशाह सन् १२१० में बादशाह हुआ।

३ अलतमस-यह कुतुबुद्दीनका जामाताथा। सैन् १२११ में आरामशाहको तख्तसे उतारकर बादशाह बनगया। यह गुलाम खानदानके बादशाहोंमें सबसे अधिक प्रतापी हुआ। और सबसे अधिक राज्य किया।

४ रुकनुद्दीन—फिरोजशाह—अलतमस की मृत्यु होनेपर उसका पुत्र रुकनुद्दीन फीरोजशाह सन् १२३६ में तख्तपर बैठा।

५ रजिया बेगम—रुकनुद्दीन फिरोजशाहके केवल ७ महीने राज्य करनेके पश्चात् सन् १२३६ में सर्दारोंने उसको तख्तसे उतारकर अलतमस की बेटी रजिया बेगमको बैठाया। यह बड़ी होशियारीसे राज्य करतीथी। परन्तु लगभग ४ वर्ष राज्य करनेके

पश्चात् एक हबशी गुलामसे प्रेम होनेके कारण सर्दारोंने उसे मारडाला[१]।

६ वहरामशाह-रजिया बेगमके मारेजानेपर अलतमसका पुत्र वहरामशाह सन् १२४० में बादशाह हुआ।

७ मसाउदशाह-यह रुकनुद्दीन फिरोजशाहका बेटा और वहरामशाहका भतीजा था। राज्यके सर्दारोंने सन् १२४२ में वहरामशाहको कैदकर मशाउदशाहको तखतपर बैठाया।

८ नासिरुद्दीन महमूद-सन् १२४६ में लोगोंने मशाऊदशाहको मारकर उसके काका नासिरुद्दीन महमूदको तखतपर बैठाया ।

९-गयासुद्दीन बलबन-नासिरुद्दीन महमूदके पश्चात् सन् १२६६ में उसका वहनोई गयासुद्दीन बलवन बादशाह बना।

इसने मेवातके एकलाख रजपूतोंके शिर काटडाले।

१० कैकुवाद-गयासुदीनके मरनेपर १२८७ में कुराखोका पुत्र कैकुवाद तखतपर बैठा। जिसको सन् १२९० में दुशमनोंने जहर देकर मारडाला।

खिलजी खानदानके ४ बादशाह।

१ जलालुद्दीन फिरोजशहा-गुलाम खानदानके अन्त होनेपर सन् १२९० में जलालुद्दीन दिल्लीके तखतपर बैठा। इसका स्वभाव सीधाथा।

२ अलाउद्दीन-सन् १२९६ में जलालुद्दीनका भतीजा अलाउद्दीन अपने काकाको दगासे मारकर बादशाह बनगया।

१ कई इतिहासोंमें हबसीको लेकर भगजानेकी, और कोईने ... शानके घर उसके गहनेंकी लालचसे मारेजानेकी बात है

इसने गुजरात देश और देवगढको लूटा। बड़ी सखतीसे अपना राज्य बढ़ाया।

३ मुबारकशाह—सन् १३१६ में अलाउद्दीनके मरनेपर उसका पुत्र बादशाह बना।

४ खुसरो खां—यह नीचजातीके हिन्दुसे मुसलमान होगयाथा। सन् १३२१ में अपने मालिक मुबारक शाहको मारकर तखतपर बैठगया।

तुगलक खानदानके ११ बादशाह—१ गयासुद्दीन तुगलक—खिलजी खानदानके अन्त होनेपर सन् १३२१ में गयासुद्दीन तुगलक दिल्लीका बादशाह हुआ। जीसने तुगलकाबादका किला बनवाया। वह अन्तमें मकानके नीचे दबकर मरगया।

महम्मद आदिल तुगलक—गयासुद्दीन की मृत्युके पश्चात् उसका पुत्र महम्मद आदिल सन् १३२५ में गद्दीपर बैठा। इसने आदिलाबाद बसाकर उसमें एक किला बनवाया। और दिल्लीके निवासियोंको दक्षिणके दौलताबादमें बसानेका और रुपये के दाममें ताम्बेके सिक्के चलानेमें बड़ा उद्योग कियाथा। परन्तु आन्तमें उसका मनोरथ सफल नहीं हुआ।

३ फिरोज शाह तुगलक—महम्मद आदिलके मरनेपर सन् १३५१ में उसका पुत्र फिरोज शाह बादशाह हुआ। इसने फीरोजाबाद शहर बसाया। और अनेक परमार्थिक काम किये। जिनमें प्रधान यमुना नहर है।

४ गया सुद्दीन—दूसरे फिरोज शाहकी मृत्यु होनेपर उसका

पुत्र गयासुद्दीन सन् १३८८ में तखतपर बैठा। यह ५ महीने राज्य करनेके पश्चात् मारा गया ।

५ अबूवकरशाह—गयासुद्दीन के पीछे उसका भतीजा अबूवकर शाह सन् १३८९ में बादशाह बना, जो कैदखानेमें मरा।

६ नासिरुद्दीन महम्मद–सन् १३९० ई. गयासुद्दीनका दूसरा भतीजा नासिरुद्दीन गद्दीपर बैठा ।

७ हुमायुसिकन्दर—सन् १३९३ में नासिरुद्दीनका पुत्र हुमायु सिकन्दर बादशाह बना । जिसने केवल ४५ दिन राज किया ।

८ महमूद शाह—सन् १३९३ में हुमायु सिकन्दरके पुत्र महमूद शाहको गद्दी मिली ।

९ नसरत शाह—सन् १३९५ में बरामदखांका पुत्र नसरत खां दिल्लीका बादशाह हुआ । सन् १३९८ में तैमूर तातारीने जिसको तिमिर लिंग भी कहते हैं बडी सेना लेकर दिल्लीपर आक्रमण किया । और, बाद शाहको परास्त करके ५ दिनोतक दिल्ली में आमकतल करवाया । लाशोंके ढेरेसे सड़कें बन्द होगई । उसकी फौज, दास बनानेके लिये बहुतेरी स्त्रियां और पुरुषोंको ले गई दिल्लीमें दो महीनेतक अराजकता रही ।

१० महमूदशाह–दूसरी बार सन् १४०० में हुमायू सिकन्दरका बेटा महमूदशाह फिर तखतपर बैठा।

११ दौलतखां–महमूदशाह के मरनेपर उसका पुत्र 'दौलतखां सन् १४१३ में बादशाह हुआ ।

सैयद खानदानके ४ बादशाह—तुगलक खांनदानके पीछे सैयद मलिक सुभानका पुत्र खिज्रखां सन् १४१४ में बादशाह हुआ।

(२) दूसरा मुबारकशाह—खिज्रशाहके मरनेपर उसका पुत्र मुबारकशाह सन् १४२१ में तख्तपर बैठा।

(३) मुबारकके मारे जानेपर उसका भतीजा महम्मदशाह सन् १४३४ मे तख्तपर बैठा।

(४) आलमशाह—महंमदके मरनेपर उसका पुत्र आलमशाह १४४५ ई. मे तख्तपर बैठा, सैयदोंके राज्य समय दिल्ली निर्बल रही। आलमशाह अपना राज्य बहलोलखां लोदीको देकर आप कुमायु चलागया और वही मरा।

लोदी खानदानके ३ बादशाह—ये सब अफगान थे,

(१) बहलोल लोदी—सन् १४५१ मे कला बहादुरका पुत्र बहलोलखां गद्दीपर बैठा। इसने दिल्लीके राज्यको बढ़ाया।

(२) सिकन्दर लोदीके मरनेपर उसका पुत्र इब्राहिमलोदी १५१७ ई. मे बादशाह बना यह आगरेमें रहताथा। सन् १५२६ में मुगलखांनदानके बाबरने इसे पानीपतके लड़ाईमें परास्त किया और मारडाला गया और वहीं दफन किया गया।

मुगल खांनदानके १६ बादशाह—१ बाबर, यह तैमूर तातारीके छठे पुस्तमें उमरशेख मिर्जाका पुत्र था, सन् १५२६ मे इब्राहिम लोदीको परास्तकर दिल्लीमें बादशाह बना परन्तु आगरेमें रहताथा सन् १५३० में ४५ वर्षके उमरमें वहीं मरा और वहीं दफन किया गया। उसकेबाद उसका बेटा हुमायु गद्दीपर बैठा, इसने इन्द्रप्रस्थके पुराने किलेको १५३३ ई. में सुधारकर उसका नाम "दीनपन्नाह" रक्खा।

बंगालका हाकिम शेरशाह अफगान सन् १५४० में हुमायुको निकालकर आप दिल्लीका बादशाह बना, और किलेकानाम "सेरगढ़" रक्खा, सेरशाहका लिंजरक किलेमें आक्रमण करते समय ७२ वर्षके वयमें मारागया, इसकेबाद उसका पुत्र शलीमशाह तख्तपर बैठा इसने १५४६ ई. में "सलीमगढ" बनवाया यह सन् १५५३ मे मरा, इसके बाद फिरोजशाह बादशाह बना जो कई महीने बाद अपने मामाके हाथसे मारागया। इसके बाद निजामखांका पुत्र आदिलशाह तख्तपर बैठा, इसके बाद सेरशाहका चचेराभाई सुलतान इब्राहिम सन् १५५४ में और दूसरा चचेराभाई सिकन्दरशाह सन् १५५५ में तखतपर बैठा।

हुमायु सन् १५५५में फिर हिन्दको लौटा और भारी लड़ाई कर फिर दिल्ली लेलिया, हुमायु आगरेमें तख्तपर बैठा और ६ महिने राज्य करनेबाद सन १५५६ को जानवरीमें सीढोसे गीरकर मर गया।

अकबर–जब हुमायु हिन्दसे फारसको भागाजा रहाथा तब अमरकोटके एक छोटे किलेमें सन १५४२ में उसके पुत्र अकबरका जन्म हुआ सन १५५६ मे हुमायुके मरनेपर अकबर दिल्लीका बादशाह बना।

अकबरने राज्यको बहुत बढ़ाया, उसने सन् १५६० से बहरामखां सेनापतिसे राज्यभार आप लिया, सन् १५६१ से ६८ ई. तक राजपूतराज्योंको अपने स्वाधीन करनेमें लगा रहा. सन्. १५७२ में गुजरातको अपने राजमें मिला लिया। सन् १५७६ में दूसरी बार बंगालको जीतकर अपने राज्यमें मिला लिया सन् १५८६ मे कश्मीरको अपने राजमें मिलालिया। सन १५९२

में सिन्धको जीता सन १५९४ में कन्धारको जीता, सन १५९४ में स्वयं अहमदनगरमें चढाई की सन १६०१ में खांनदेशको अपने राज्यमें मिलालिया, सन १६०५ मे ६३ वर्षकी उमरमें आगरेमें मरा, उसका मकबरा आगरेके सिकन्दरामें है, अकबर बहुतरे संस्कृत ग्रन्थोको फारसीमें कराया। न्याय द्रष्टीमें हिन्दु मुसलमान समान थे, महाराज मानसिंह और कई राजोंको उच्चपद दिया। राजा तोदड़ मलको अपना प्रधान बनाकर मालका बंदोवस्त और जमीन की सर्वेका कामभी दिया। अकबरके ४१५ उच्च पदाधिकारियोंमेसे ५१ हिन्दुथे, यह विशेष आगरेमें रहताथा और वही मरा सन् १५६६ में आगरेमें और १५७५ में प्रयागमें किला बनवाया,

जहांगीर—अकबर की मृत्युके पश्चात् १६०५ में उसका पुत्र सलीम जहांगीरके नामसे गद्दीपर बैठा। इसने अपने राज्यके बाईस वर्षका समय अपने पुत्रोंके बगावतोंको दबाने, अपनी स्त्रीके अखतियारात बढाने और ऐश करनेमें बिताया।

सन् १६२७ में जब शाहजहां और बड़ा सर्दार महावतखां बिगड़ रहेथे, सत्तावन वर्षकी उम्रमें जहांगीर मर गया। और लाहोर के समीप शाह दरेमें दफन किया गया।

शाहजहां—अपने बापके मरने पर १६२८ की जनवरीमें आगरेमें राजगद्दीपर बैठा, इसने बागियोंको मरवा डाला और नूरजहांकी पेंशिन मुकरिर करदी। इसने लाल किला, दिवाने आम, दिवाने खास, इत्यादिक इमारतें बनवाई। सन् १६५७ में जब बादशाह शाहजहां बीमार पड़ा तब इसके पुत्रोंने तख्तके लिये झगड़ा किया और अन्तमें औरंगजेब जीतगया। १६५७ में शाहजहांको कैद करके औरंगजेब तख्तपर बैठा। शाहजहां ७ वर्ष

आगरेके किलेमें कैद रहकर १६६६ में ७४ वर्षकी उम्रमें मरा और ताजमहलमें अपने स्त्री मुमताज महलके समीप दफन कियागया ।

औरंगजेब–सन् १६५८ में आलमगीर की पदवीसे बादशाह हुआ। सन् १३५९ में इसने अपने बड़ेभाई दाराको मरवाडाला और सन् १६६० में दूसरे भाई सुजाको हिन्दुस्तानके बाहर निकाल दिया। और सबसे छोटेभाई मुरादको कैदखानेमें कत्ल करवाया। इसने हिन्दुओंपर १६७७ में जिजिया नामक कर जारी किया। अर्थात् जो मुसलमान नहीं है, उसे करदेना पड़ताथा । औरंगजेब १७०७ की फरवरीमें ८६ वर्षकी उम्रमें मरा। और औरंगाबादमें दफन किया गया ।

आजम शाह–औरंगजेबके बाद १७०७ में आजम शाह गद्दी पर बैठा। औरंगजेब के पुत्र से लड़ाईके समय यह धौलपुर के समीप मारा गया।

बहादुर शाह—औरंगजेबका पुत्र मुअजिम रणभूमीमें अपने भाई आजमको मार कर १७०७ में बहादुरशाहके नाम से गद्दीपर बैठा जो शाह अलम भी कहलाता था। यह ६९ वर्षकी उम्रमें मरा।

जहांदार शाह--बहादुर शाहकी मृत्यु होनेपर उसका पुत्र जहांदार शाह सन १७१२ में दिल्लीका बादशाह हुआ। ५२ वर्षकी अवस्थानमें जहांदार शाह मारा गया ।

फरुक सियर–यह सन् १७१३ में अपने काका जहांदार शाहको मार कर तख्तपर बैठा। सन् १७१९ में २ सय्यदोंने फरुक सियरको जो ३४ वर्षका था मरवा; डाला ।

महम्मद शाह—फरुक सियरके मारे जानेपर एक वर्ष में ४ बादशाह हो चुके थे। उसके बाद सन् १७२० में जहांदार शाहके पुत्र महम्मदशाहको गद्दी मिली सन १७३९ में पारसके नादिरशाहने कर्नालके पास महम्मदशाहको परास्त किया। और ११ मार्चको दिल्लीमें आम कतलका हुकुम दिया। सुर्योदयसे दोपहरतक सम्पूर्ण शहरमें कतल जारीरहा। ५८ दिनोंतक दिल्लीको लूटा। उसके पश्चात् ३२ करोड़ की लूटकी सम्पत्ति, प्रसिद्ध कोहनूर हीरा और ताऊस तख्त लेकर अपने देशको लौटगया। १७४७ में अहमशाह दुर्रानीने हिन्दपर आक्रमण किया। महम्मदशाह ४६ वर्षकी अवस्थामें मरगया।

अहमदशाह—महम्मद शाहके मरनेपर १७४८ में उसका पुत्र अहमदशाह दिल्लीका बादशाह हुआ। सन् १७५४ में अहमदशाह गद्दीसे उतार दियागया।

आलमगीर—अहमदशाहको तख्तसे उतार दिये जानेपर मग़रुदीन जहांदारशाहका पुत्र दूसरा आलमगीर सन् १७५४ में दिल्लीके तख्तपर बैठा। आलमगीरको उसके वजीर ग़यासुद्दीनने मरवा डाला। महाराष्ट्रोंका उत्तरीय भारतमें विजय और दिल्लीमें अधिकार हुआ।

[१]शाहआलम, दूसरा—आलमगीरके मारे जानेपर १७५९ में उसका पुत्र जलालुद्दीन शाह आलमके नामसे दिल्लीका बादशाह

१ शाहआलम १७०५ मे दरबार कर लार्डलेक साहबको प्रत्युपकारमें उपाधि प्रदानकी, समसम—ई—दौलाह (राज्यकी तलवार) अश्जाह—उल—मुल्क (राज्यका योधा) और खान दौराह (समयका प्रधान पुरुष) इत्यादि

हुआ। जो सन् १७७१ ई. तक इलाहाबादमें अंग्रेज महाराजका पेंशन भोक्ताथा। सन् १७७१ में शाह आलमके बाप दादाओंके राज्यका थोड़ा भाग उसको लौटा दिया। परन्तु बागियोंने बादशाहकी आंख फोडकर कैदकर लिया। महाराष्ट्रोंने उसको कैदसे छुड़ाया। सन् १७८९ में महदाजी सिन्धियाने दिल्लीको अपने काबू कर लिया। सन् १८०३ के सितम्बरमें दिल्ली और शाह आलम अंगरेज महाराजके हाथमें आये। सन् १८०४ के अक्टूबरमें हुल करने दिल्लीपर घेरा डाला था। परन्तु अंग्रेजी गवर्न मेंटने उसे बचाया। उस समय से दिल्ली अंग्रेज सरकारके आधीन हुई। किन्तु मुगल बादशाह नाम के लिये १८५७ तक बादशाह बने रहे। शाह आलम ७८ वर्षकी अवस्थामें मर गया।

अकबर, दूसरा–शाह आलम के मरनेपर उसका पुत्र अकबर सन् १८०६ में अंग्रेज महाराज के आधीन दिल्लीकी गद्दीपर बैठा, और ७७ वर्षकी उम्रमें मर गया।

महम्मद बहादुर शाह–अकबरकी मृत्यु होनेपर उसका बेटा महम्मद बहादुर शाह सन् १८३७ में अंग्रेज महाराज के आधीन दिल्लीके तख्तपर बैठा। जो अंगरेजी गवर्नमेंटसे अस्सी हजार रुपये मासिक पेंशिन पाताथा।

दिल्लीके दर्शनीयस्थल–

वर्तमान दिल्लीके आसपास दूरतक बहुतेरी राजधानी हो चुकी हैं। वर्तमान शहरके चारों ओर खासकर दक्षिणसे राय पिथोरा और तुगलका बादके छोड़दिये हुए किलों तक १० मीलके

अन्तरमें बरबादियां फैली हैं । ४५ वर्ग मीलके क्षेत्र फलमें पुराने शहरसें तथा राजा और बादशाहों की इमारत आदि वस्तुओंके चिन्ह फैले हुए देख पड़ते हैं । वर्तमान दिल्लीसे दो मील दक्षिण पाण्डवोंका बसाया हुआ इन्द्र प्रस्थके स्थानपर इन्द्रपाथका पुराना किला जर्जर होरहा है ।

दिल्लीसे १४३ मील आगरा ३४९ मील रेवारी, ३५२ मील लाहौर ३९० मील प्रयाग अहमदाबाद होकर ८८८ मील बंबई और पटना होकर ९५४ मील कलकत्ता है । अब दिल्ली भारतकी राजधानी हो गई है ।

कंपनीबाग—इसे सर्व साधारण विक्टोरिया बाग कहते हैं । विविध प्रकारके वृक्षलगे हैं, बागके पास एक पत्थरका हाथी खड़ा है, जिसके नीचे लिखा है कि " बादशाह शाहजहानने इस हाथीको सन् १६४५ ई० में ग्वालियरसे लाया और नये महलके दक्षिण दरवाजेपर रक्खा ।

वस्तुसंग्रहालय—बागके पासहीं जादूघर है, जहां अनेक अभ्दुत चीजें दरबार गृह और पुस्तकालय है, पासही घड़ीकाबुर्ज (टावर) है जो १२५ फिट ऊंचा है लालपत्थरका बना है ।

फतहपुरी मसजिद—इसे शाहजहान की स्त्री फतहपुरी बेगमने सन् १६५० मे बनवाया, इसके लालपत्थरके दो बुर्ज १०५ फिट ऊंचे हैं ।

जामा मसजिद[१]—यह दिल्लीमें सबसे दर्शनीय इमारत हैं । बाद-

१ इसका पूर्व फाटक केवल बादशाहोंके प्रवेशके लियेथा, अब भी राजकीय प्रधान पुरुषोंके अतिरिक्त उसदरवाजेसे कोई प्रवेश नहीं करसक्ता सन् १८५७ के बलवेमें इसी मसजिदमें खुतवा पढ़ागयाथ।

शाह शाहजहानने सन् १६३२ से १६३८ तक इसको बनवाया था, ५ हजार कारीगरोंने ६ वर्षमें इसे तयार किया। इस मसजिदमें कुफित और इमाम हुसेनका लिखा हुआ कुरान रक्खा है। इस मसजिदमे ९१३ जा निमाज अर्थात् निमाज पढने की क्यारियां हैं। इसके बुर्जपर चढनेसे सारा शहर देख पड़ता है, मसजिद देखनेवालोंको मुसलमान् कमेटीके सेक्रेटरीसे पास लेना चाहिये जो विना पैसे सहजमें मिलजाता है।

जैनमंदिर–जमामसजिदके आगे अनारकी गलीके पास हरसुखराय कागजीका बनवाया हुआ दर्शनीय मंदिर है, हाथीदांतके चांदनीके नीचे प्रतिमा प्रतिष्ठित है।

काली मसजिद–तुर्कमान दरवाजेके पास फिरोजशाह तुगलक के समयकी सन् १३८६ की बनी मसजिद है। मसजिद ६९ फिट ऊंची है, कालेरंगसे रंगनेके लिये यह नाम पड़ा।

किला–इसे देखनेके लिये ब्रिगेडियर साहेबसे पास लेना चाहिये जो सहजमें मिलजाता है ३२०० सौ फिट लम्बा और १६०० सौ फिट चौड़ा यह किला जो मुगलबादशाहोंका शाही महलथा स्थित है।

शाहजहानने किले और इसके भीतरी इमारतोंको सन् १६३८ सें ४८ ई. तक बनवाया उसके समयसे महम्मद बहादुरशाहके

कि "खल्क खुदाका मुल्क बादशाहका हुकम बहादुर शाहका–बलवाई इसी मसजिदमें इकट्ठेथे, विजयी सैन्यने इसके चारो तरफ उड़ादेने के लिये तोप लगाया परन्तु अंगरेज आफिसरने मुसलमानी धर्मस्थानको नुकसान पहुंचाना योग्य न समझा; इसका नाम है धर्मनीति मसजिद बननेके समय बंगालीमन २ रु. खांड और ५ रु. मन घी था।

समय अर्थात् १८५७ ई. तक यह शाही महल था। भीतर तीन बाग और १३ कचहरींथीं, अब केवल नौबतखाना, दिवानआम, दिवानेखास, मोतीमसजिद, औरभी दोचार छोटी छोटी इमारतें हैं।

× दिवानआम—यह १८० फिट लम्बा और १५० फिट चौड़ा है, तीन तरफसे खुला हुआ ४६ खंभोंपर स्थित है। मध्यमें १० फिट ऊंचा पत्थरका एक तख्त है। जिसके चार खंभे और चांदनी सफेद चमकीले पत्थरकी बनी है। और उसके ऊपर विविध रंगके फूल फल बने हैं। पीछे एक दरवाजा है जिसमें होकर बादशाह पीछेके कमरोंमें जाते थे।

* दिवाने खास—इसकी लंबाई १५० फिट और चौड़ाई १०० फिट है। यह सफेद पत्थरकी सुन्दर इमारत है। यमुनाकी ओर सफेद पत्थरकी सुन्दर टट्टियां लगी हुई हैं। स्तम्भोंमें सुन्दर वेलबूंटे और पच्चीकारीका काम है, और इसके बेलबूंटे सोनेकेवर्कों से बनाये गये हैं। इसकी कारीगरीको देखकर बड़े २ कलावेत्ताभी विस्मित होते हैं। इसकी छतमें चांदी जड़ीथी। जिसको सन् १७६० में महाराष्ट्र लोग उखाड़ ले गये। इसके बीचमें श्वेत प्रस्तरकी एक बड़ी चौकी रक्खी है। इसीपर बादशाह शाहजहान का तख्ते ताऊस अर्थात् मयूरासन रहताथा।

सम्मन बुर्ज—यह एक सुन्दर इमारत है। भीतर सुनहरा काम और बेलबूंटे देखने लायक हैं। इसीसे लगा हुआ रंगमहल है

× यदि भूमिपर स्वर्ग है—तो यही है - अगर फिरदोवर रुये जमींनस्त
हमींनस्तवा हमींनस्तवा हमींनस्त

* छतपर जो चांदी जडीथी वह मराठे लोग १७६० ई. में उखाड ले गये, वह १७ लाखकी थी हालके मूल्यमें ४० लाखकी होती हैं

जिसमें स्त्रियोंके रहनेकी कोठरियां सुनहरी वर्कोंसे मढ़ी हुई हैं। इसके चारों ओर पहिले बगीचा और फव्वारे थे। यह सामान यहांसे अब उठा दिया गया, और अंग्रेजी सिपाही रहते हैं।

स्नान गृह—यह १३५ फिट लम्बा और ६० फिट चैाड़ा स्नान घरहै। इसमें तीन कमरे बने हैं। प्रत्येक कमरेमें एक २ पानीका हौज़ है।

मोती[४] मसजिद—यह ७५ फिट लम्बी और उतनीही चैाड़ी है इसे औरंगजेबने १६३५ में बनवाया था।

सुनहरी मसजिद—यह रोशन-उद्-दैालाकी बनाई हुई छोटी मस्जिद है। इसके तीन गुम्मजों पर सोनेका मुलम्मा किया हुआ है। बादशाह मुहम्मदशाहके समय १७२१ ई. में यह बनी है।

लोह[१] स्तम्भ—इसी मसजिदके मध्यमें लोहेका एक स्तम्भ

४ आम कतलके दिन नादिरशाह इसी मसजिदमे बैठा था, डरसे मुख्य कर्म चारियोके अतिरिक्त कोई पास न आताथा जब, बहादुरशाह सरदारोंको लेकर गया और सब जमीनतक झुक सलाम किये तब नादिरशाह आनेका कारन पूछा, सरदारोंने कहा आप अब क्षमा करैं, नादिरशाहने कहाकि मैं " बादशाहके लिये क्षमा करता हूं" बहादुरशाह रोने लगा, उसी समय कतल बन्द की गई। इस मसजिदके दरवाजेको खूनी दरवाजा कहते हैं।

१ किम्बदन्ती है कि एक ब्राह्मण अनंग पालसे कहा कि यह लोहाकी खीली आपने इतनी गाडी है कि शेषनागके सिरमें गड़ी है। राजा आश्चर्य होकर उखड़वाकर देखा तो उसमें लोहू लगाथा। पीछे फिर गड़ाया परन्तु ढीली रहनेसे नाम " दिल्ली " पड़ा खीली तो ढीली भई, तोमर भयामति हीन "

खड़ा है। जिसको तीसरी, चोथी सदीमें राजा धवने स्थापित किया था। यह २८ फीट पृथ्वीमें गढ़ा है और २२ फीट भूमिके ऊपर खड़ा है। इसका व्यास १६ इंच है। स्तम्भ में कई स्थलोंपर संस्कृत लेख हैं जिनमें राजा धव के प्रतापका वर्णन है। एक दूसरे लेखमें सन् १०५२ ई. के साथ दूसरे अनङ्गपाल का और आठवी सदीके पहिले अनङ्ग पालका नाम लिखा है।

अलतमसका मकबरह—यह वर्तमान समयमें जर्जर अवस्थामें है। भीतर कुराने शरीफ के कलमें लिखे हुए हैं। अलतमस १२३६ में मरा और यहांही दफन किया गया।

अलाई-मीनार—यह ८३ फीट ऊंचा गोलाकार मीनार है। यदि यह तयार होता तो ५०० फीट ऊंचा होता। किन्तु कामके आरम्भ होने के चार वर्ष पश्चात् सन् १३१५ ई. में अलाउद्दीन के मरनेपर इसका काम बन्द हो गया।

लालकोट किला—यह किला उजाड़ पड़ा है। २॥ मीलके घेरेमें मिट्टीकी दीवार है। दिल्लीके राजा द्वितीय अनङ्गपालने सन् १०५२ में पुरानी दिल्लीको यमुनाके किनारे से हटाकर इस स्थानपर बसाया १०६० में किला बनवाया महाराज पृथ्वी राजने किले के चारों ओर पांच मील लम्बी दीवार बनवा कर किलेका नाम "रायपिथोरा" रक्खा। इसे लोग पुरानी दिल्ली कहते हैं। इसके दक्षिण महरबली गामके समीप कुतुबुद्दीन की दर गाह है। और एक बड़ी झील है।

योग मायाका मन्दिर—प्रत्येक सप्ताहमें यहां देवीके दर्शनका मेला होता है। मन्दिर के एक ओर अलतमसका उजड़ा हुआ

महल दीख पड़ता है। मन्दिर दिल्लीके अजमेरी दरवाजेसे ८ कोस दूर है।

ग्रह दर्शक गृह; (अबज़र वेटरी)–दिल्लीके बादशाह महम्मदशाहके राज्यके समय आँबेरके राजा सवाई जयसिंहने[२] जिन्होंने सन् १७२८ में जयपुरको बसायाथा सन् १७२४ ई. में इसको बनवाया। इसमें ग्रहादिक देखनेके लिये अनेक यन्त्र रक्खे हैं।

शफदरजंगका मकबरह–अहमदशाहके वजीर शफदरजंग १७५३ में मरे, उनके पुत्र लखनऊके प्रसिद्ध नवाब सुजाउद्दौलाने तीस लाख रुपयेके खर्चसे इसको बनवाया। इसीके भीतर वजीरकी बीबी खुजिस्ता बेगमकीभी कबर है।

कुतुब[३]मिनार–दिल्लीके अजमेरी फाटकसे लगभग १० मील कुतुब इस्लाम मसजिदके पास कुतुब मिनार खड़ा है। जिसको कुतुब लाटभी कहते हैं भारतवर्षमें इतनी ऊंची इमारत कहींभी नहीं है। मीनारकी नींव किसने दी यह विषय सन्देहास्पद है। अधिकांश मनुष्योंका विश्वास हैकि दिल्लीका राजा पृथ्वीराजने इसको बनवाया था। किन्तु शिला लेखोंसे जान पड़ता है कि कुतुबउद्दीन हबकने सन् १२०६ ई. में. इसके बनानेका कार्यारम्भ किया। फीरोजशाह तुगलकने सन् १३६८ में मीनारको भली भांति बन-

२ इसी राजाने काशी, उज्जेन, जयपुर आदिमेंभी बंधाया।

३ "मध्य भागमें लिखा है कि–हे द्रढ़ इसलामियो जुमा के दिन जब निमाज पढ़नेके लिये तुम बुलाये जाव तब खुदाको याद करो और व्यापार बन्द करना, खेल कूदसे खुदाका नाम श्रेष्ठ है वही दुनियाको पूरा करता है।

वाया । सन् १८०३ की पहिली अगष्टके भूकम्प से इसका शिराभाग गिर गया । सन १८२९ में फिरसे बनाया गया । पहिले २५० फिट ऊंचा था । अब २३८ फिट है । ऊपर चढ़नेके लिये ३७६ सीढ़ियां बनी हैं । चारोंओर बादशाहोंके कीर्तिलेख हैं । समीपही अलाउद्दीन का, मीनार अपूर्ण खड़ा है ।

कुतुब इसलाम मसजिद–इसमें एक शिलालेख है जिससे मालुम पड़ता है कि शहाबुद्दीनके कर्मचारी कुतुबुद्दीन एवकने जो १२०६ से १२१० तक राज्यभोक्ता रहा सन् ११९३ में इसका कार्यारम्भ किया । कहते हैंकि जिस चबूतरेपर पृथ्वीराजका देव मन्दिर था उसी चबूतरेपर यह मसजिद खड़ी है। इसमें १००० स्तम्भ लगे हैं । अलाउद्दीनने इसको सुधरवाया ।

किला कोना मसजिद–इसे शेर शाहने १५४१ ई. में बनवाया । मसजिदमें " कुराने शरीफ " के बहुत शिला लेख विद्यमान हैं । समीप ही में ७० फिट ऊंची " शेरशाह मण्डल " नामक अठ पहली इमारत है । सन् १५५५ में हुमायूने इसको अपनी लायब्रेरी बनाया । और उसी रात्रिको सीढीसे गिर गया । और बहुत दिनोंमें अच्छा हुआ ।

निजा मुद्दीन औलियाका मकबरह–इसके चारों ओर अनेक कबरें और पवित्र इमारतें हैं । भीतर १८ फिट लम्बा और इतना ही चौड़ा निजामुद्दीन चिश्ती[1]का मकबरह है । मकबरेको मीर मीरन

---

१ चिस्तीके क़बरके पास समय२ पर बहुत नाचने गाने वालीदासी इकट्ठी होती हैं और गाती हैं कि " ख्वाजा लैलो खबरिया हमारी रे "

के पुत्रने बनवाया था। एक लेखमें सन् १६५२ लिखा है। घेरे के भीतरअमीर खुशरूकवि, का मकबरह है। यह कवि इतना प्रसिद्ध था कि पारसका कवि सादी इसको देखने के लिये हिन्दुस्तानमें आया। खुशरूका दादा तुर्की था। सन् १३१५ में खुशरूकवि दिल्लीमें दफन किया गया। खुशरूके मकबरे के उत्तर दूसरे अकबरके पुत्र मिर्जा जहांगीरकी और दरवाजे के बायें मुहम्मद शाहकी जो सन् १७२० से १७४८ तक दिल्लीका बादशाह था, और उनके दक्षिण शाहजहांकी पुत्री जहान-आराकी कबर है। और उसके बांये तरफ शाह आलमके पुत्र अली गौहर मिर्जाकी और दहिने जमीलुन्नीसाकी कबर है।

हुमायूका मकबरह—यह शहर सेतीन मील दक्षिण एक सुन्दर वाटिका के भीतर दिल्ली के बादशाह हुमायुका मकबरह खड़ा है। दरवाजाकी एक ओर लिखा है कि—"बादशाह हुमायूकी विधवा नवाब हमीदा बानू बेगमने जिसका द्वितीय नाम हाजी बेगम है। अपने पतिकी मृत्युके पश्चात् मकबरहको बनवाया"। सन् १५५५ में हुमायू मरा। मकबरह १५००००० रुपये के खर्च से १६ वर्षमें तैयार हुआ। हमीदा बानू और बादशाह कुटुम्बके दूसरे लोग भी यहां दफन किये गये।

अशोक स्तम्भ- यह स्तम्भ बौद्धराजा अशोकने प्रथम मेरठके समीप खड़ा कियाथा। बादशाह फिरोजशाहने सन् १३५६ ई. में लाकर कुस्क शिकार महलमें खड़ा करवाया। सन् १७१३ ई. में बारूदकी मेघज़ीन उड़नेसे स्तम्भके पांच टुकड़े हो गये। सन् १८६७ में अंगरेजी सरकारने स्तम्भको फिरसे खड़ा किया।

फतहगढ–सन् १८५७ के बलवेके विजयकी यादगारके लिये अंगरेज महाराजका बनवाया हुआ अठ पहला ऊंचा बुर्ज है। जो अफसर यहां लडे और मारेगये उनके स्मरणार्थ यह बना। इसके ऊपर चढनेसे चारों तरफका उत्तम दृश्य दिखा पड़ते हैं। इसी जगह सन् १८७७ का दरबार हुआथा।

फीरोजां बादका किला और अशोक स्तम्भ–दिल्ली दरवाजेसे ½ मील दक्षिण जेल है। वहांसे २५० गजपूर्व उजड़ा हुआ किला है। जिसको सन् १३५४ में बादशाह फिरोज तुगलगने बनवायाथा। इसके भीतर फीरोजशाहके उजडे पुजडे महल हैं। यहींपर पत्थरका बहुत प्राचीन अशोक स्तम्भ खड़ा है। सन् १३५६ में फीरोज तुगलकने सिवालिक पहाडीके पाद मूलके निकट टोफरसे मंगवाकर अपने मकानके सिरपर खड़ा करवायाथा। तभीसे यह फिरोजशाहका स्तम्भ प्रसिद्ध है। स्तम्भ ३८ फिट ऊंचा और १० फिटका घेरा है। ऊपर कई नागरी लेख हैं। एक लेख सन् १५२४ का है जो दिल्लीमें ले आनेके पश्चात् लिखागया है। एक लेख सन् ईस्वीके ३०० वर्ष पूर्वका पाली अक्षरोंमें है, जिसमें राजा अशोक की धर्माज्ञा है। एक लेखमें अजमेरके विशालदेवके प्रतापका वर्णन है। जिसमें सन् ११६२ लिखा है।

इन्द्रपात–यह इन्द्र प्रस्थका अपभ्रंश है। इसको पुराना किला कहते हैं। यह राजा युधिष्ठिर के पुराने स्थानपर है। सोरहवीं सदीमें बादशाह हुमायूने इसकी मरम्मत कराकर इसका नाम "दीन पनाह" रक्खा।

तुगलकाबादकां किला–दिल्लीके बादशाह गयासुद्दीन तुगलकने सन् १३२१ ई. से १३३२ तक इसे बनवाया, यह चार

मीलके घेरेमे है। किलेके भीतर अब टूटे फूटे खण्डहर हैं। किलेमें ७ तालाब टूटी हालतमें हैं।

गयासुद्दीनका मकबरह–किले और मक़बरहके बीच २७ महराबियोंका ६०० फीट लम्बा पुल बना है। मक़बरहके भीतर गयासुद्दीन तुगलक गयासुद्दीनकी स्त्री और उसके पुत्र जूनाखां जो पीछे महम्मदशाहके नामसे बादशाह हुआ, कबरें हैं। महम्मदशाह १३२५ से १३५१ तक दिल्लीका बादशाह रहा।

सन् १८५७ का देशविप्लु– के मई मासमे मेरठकी फौज बागी होकर दिल्ली आई और दिल्लीकी देशी सैन्यभी उनमें मिलगई, और महम्मद बहादुर शाहको अपना नायक बनाया, अगरेज अफसर उस समय इतनाहीं किया कि मेघजीन उड़ादिया. दिल्ली प्रसिद्ध और बादशाही तख्त होनेके कारन चारो तरफसे विद्रोहियोंका दलजमा होनेलगा। अगरेजी सरकारने तारीख ६ जूनको दिल्लीका घेराघाला, अगस्तमे जनरल निकल सन साहब पंजाबसे मददलेकर आये, ता. १४ सितम्बरको अगरेजी सेना शहरपर आक्रमण किया, छदिनतक लड़ाई होती रही, अगरेजी सेना आठहजारसे जास्ती नथी, और शहर पनाहके भीतर १४४ बड़ीतोपोंके साथ ३० हजारसे अधिक हाथियारबन्द बागीथे, परन्तु बागी परास्त हुए और अगरेज महाराज की विजयहुई।

बे कांयदे रिशालेके अध्यक्ष मेजर हाउस साहबने बूढ़े बादशाह महंमद बहादुर शाहको, दोशाहजादों सहित पकड़ लिया जो हुमायुके मक़बरेमे छिपेथे. दोनो शाहजादोको योग्य दंडकर बूढे बादशाहको कैदकर रंगून भेजदिया और अच्छी पेन्सन मुकर्रर करदिया बाद-

शाह ८७ वर्षकी अवस्थामें १८६२ मे वहीं मरगये, पहिले दिल्ली पश्चिमोत्तर सरकारके स्वाधीन थी, बलवेकेबाद पंजाब गौरमेन्टके स्वाधीन हुई, अब मुख्य राजधानी है।

सन् १८७७ की पहिली जनवरीको सर्वोच्च शक्तिमई महारानी विक्टोरिया एम्प्रेस अर्थात् राजराजेश्वरीके पद धारनका महान दर्बार बड़ेसमारोहके साथ दिल्लीमें हुआ।

१८७७

मे पहिला शाहंशाही दरबार श्रीमान् लार्ड लिटनके समय श्रीमती महारानीको " केशर हिन्द " का पद धारनके निमित्त हुआ। इस दर्बारमें ६५ हजार जनसमुदाय एकत्रितथे, जिनमे ७७ राजा महाराजा और ठाकुरां ३०० हिन्दके प्रतिष्ठित जन १५ हजार सैन्य, दर्बार १४ दिनतक चलाथा १६ हजार कैदी छोड़ेगये, अनेक खेलतमासे और अधिकांश राजे महाराजे नव्वाबोको झंडे दियेगये और श्रीमती महारानीश्रीका आज्ञा पत्र वांचागया।

१८०३

यह दूसरा दरबार स्वर्गीय सम्राट श्रीमान् सप्तम एडवर्डके राज्यपद धारणका आज्ञापत्र पढनेके लिये हुआ इस पहिली जनवरीके दिन यह दरबार अद्वितीय हुआ इसके साथ एक महान प्रदर्शनभी भरागयाथा, कवायतमे ४० हजार सिपाही हाजिरथे, हाथियोंका असाधारन ठाट देखने योग्य था; उससमयके श्रीमान् व्रायसराय गवरनर जनरल लार्ड करजन साहिबबहादुर दिसम्बरकी २ तारीखको संपूर्ण सुसा- ज्जित हाथीमे विराजकर और संपूर्ण राजे महाराजे नव्वाव सुसा-

ज्जित हाथी घोडे गाड़ियोंमे बैठ जलूसमे निकले, इस दर्बारके संबन्धमें एक विद्वान लिखा हैकि,

हमारी आंखैचकरखांय इसतरेके चलकती अनेक धातुओके सिरपेच, माला,मोती, रंगबेरंगी, पगड़ी जरीके उत्तम पोशाक, हाथियोंकी झूल और उत्तम भालेवालोंसे रक्षित हाथियों घोडोका ठाट दर्शनीय था मततवकी पुरातन समृद्धी एकट्ठी भई दीखतीथी, यह दर्बार बहुतही अपूर्वथा ।

व्हनोवरवंश

श्रीमान् भारत सम्राट् पञ्चमजॉर्ज महोदय ।

ईसवी सन १७१४ में तारीख १ आगष्टके दिन श्रीमती ॲनराणी की मृत्यु होनेपर हनोव्हर घरानेक जार्ज लुईस महोदयको राजा किया । इसी बरससे इगलांडमें इस घरानेके राजालोग राज्य करनेलगे । इन प्रथम ज्यार्जने १७२७ पर्यन्त राज्य किया । दूसरेने १७२७ से १७६० पर्यन्त । तीसरेने १७६० से १८२० और चोथेने १८२० से १८३० पर्यन्त । पश्चात् चौथेजार्जके बन्धु श्रीमान् चतुर्थ विलियम् सिंहासनारूढ़ हुए । उनके पुत्र नहोनेसे भतीजी श्रीमती विक्टोरिया महारानी राज्य शासक हुई । पीछे आपके ज्येष्ट पुत्र श्रीमान् सप्तम एडवर्ड महोदय बादशाह हुए । पश्चात् वर्तमान् सम्राट् श्रीमान् पञ्चमजार्ज महोद्रय राज्या रूढ़ हुए ।

तारीख ३ जून सन् १८६५ ई. शनिवार रातके १ बजकर १८ मिनट जानेपर वर्तमान सम्राटका जन्म हुआ । आपकी नाम करण

विधि ' वुइन्डेसर कॅसल नामक राज प्रासाद में हुई, आपका नाम " जॅार्ज फ्रेडरिक अर्नेस्ट आलबर्ट " रक्खा गयाथा। आप १ मासहीके थे कि एक दिन अकस्मात् आगल गजानेसे भयङ्कर प्रसङ्ग गुजराथा । उस समय आपके पिताने अत्यन्त पुरुषार्थ कर रक्षण किया था ।

सन् १८७७ के जून महिनेसे आपका शिक्षण ' ब्रिटानिया ' जहाजपर आरम्भ हुआ । शिक्षक श्रीमान् ' रेव्हरन्ड जॅानपील डॅाल्टन ' आपके साथथे ।

पश्चात् ई. सन् १८७९ से १८८१ पर्यन्त तीन वर्ष श्रीमानूने 'बाकान्ट' सरकारी जहाज से जहाजी वैज्ञान प्राप्त करने के उद्देश से पर्य्यटन किया ।

ईसवी सन १८८५ में आपको ' लेफ्टनेन्ट ' की पदवी दी गई। और कई जहाजों में अधिकार दे देकर आप भेजे गये ।

ई. सन १८८९ में एक स्वतन्त्र नम्बर ८९ के टार्पेडोका अधिकार आपको था । तब आपको पिता माताका बुलैा आ गया था । तथाऽपि आपने जहाजकी स्वतन्त्र व्यवस्था दक्षतासेकी और धन्यवाद पाया ।

ई. सनं १८९० में आपके अधिकारमें " थ्रस " नामका आगबोट मिला । उसी समयमें जमेका बेटमें रानी सरकारके नामसे एक औद्योगिक प्रदर्शन आपने खोला ।

ई. सन १८९१ के दिसम्बरमें आप विषम ज्वर से व्यथित हो गये थे । उस समय आप '.संड्रिग हाम हाउस ' में थे ।

तारीखं ६ जुलाई सन १८९३ के दिन श्रीमानका विवाह टेकके डयुककी कन्यां श्रीमती मेरीके साथ हुआं ।

ई० सन १८९१–१८९४ इन वर्षों में आपने इंग्लंड, स्काटलंड, वेल्स, और आयर्लंड इन संयुक्त राज्योंके मुख्य २ स्थान और शहर देखे।

ई. सन् १८९४ के जून महिनेमें आपके प्रथम पुत्र हुआ। जो वर्तमान युवराज हैं।

ई. सन् १९०१ में आपको ' रियर आडमिरल ' नामक बड़ी पदवी मिली

ई. सन् १९०२ में युवराज होनेके कारणसे आप ' बर्लिन ' में गयेथे। परन्तु सम्राट् एडवर्ड महोदय रुग्ण होजानेसे आप लौट आये। और पिताके जगह रहकर कवायत देखी।

तारीख २६ जून सन् १९०२ के रोज श्रीमान् सप्तम एडवर्ड के राज्यभिषेक नैमित्तिक ' मार्लबरो हॉऊस " प्रसादमें १३००० लड़कोंको भोजन कराया। ये लड़के लन्डन् शहरकी भिन्न २ शिक्षण संस्थाओंके थे।

तारीख २४ फरवरी सन् १९०३ ईसवीको एडवर्ड बादशाह के राज्यभिषेकके स्मारक (अस्पताल) औषधालय स्थापित करनेकी वार्षिक सभा हुई उसमें ६००००० पौंडसे अधिक द्रव्य आपने संगृहित प्रसिद्ध किया।

ई. सन् १९०५ के नवम्बरमें आप हिन्दुस्थानमें श्रीमती मेरी महोदया सहित युवराजत्वहीके सम्बन्धसे आयेथे, और ६ महीने आपको सुखप्रद पर्यंट न हुआथा।

तारीख ६ मई सन १९१०. ईसवीको परमपूज्य पिताके एकाएक परलोक यात्रा होजानेपर आप युवराज पदसे पञ्चमजार्ज नाम धारणकर राज्याभिषिक्त हुए।

तारीख २४ मई सन १९१० को पितृजन्य वियोग दुःख कर्तव्यसे पीछे हटकर प्रजाको अपना एक सन्देसा भेजा । और सन् १८५८ ई० और १९०८ में श्रीमती महारानी और श्रीमान् पिताजीके भेजे हुए प्रसिद्धि पत्र—नहीं २—बादशाही सनदें—इसी पद्धतिसे स्वयं वर्त्तनेका वचन दिया ।

तारीख २३ जून सन १८९४ ई. को युवराज श्रीमान् एडवर्ड आल्बर्टका जन्म हुआ। और १४ दिसम्बर १९९५ को श्रीमान् आल्बर्ट फ्रेडरिकका जन्म हुआ। और ता. २५ अप्रेल सन १८९७ को श्रीमती विक्टोरिया अलेकझंड्राका और ता. ३१ मार्च सन् १९०० को श्रीमान् हेनरी बुलियम् और ता. २० दिसम्बर सन् १९०२ को श्रीमान् जार्ज एडवर्डका और ता. १२ जुलाई सन् १९०५ ई. को श्रीमान् जॉनचार्लसका जन्म हुआ । इस प्रकार ५ पुत्र और १ कन्या ऐसे ६ सन्तान श्रीमान् के हैं ।

भारतकी भक्ति

जबसे श्रीमान् सम्राट् पंचम जार्ज और श्रीमती महाराज्ञि मेरी महोदया इग्लैंडके सिंहासना रूढ़ हुये तभीसे भारतीय प्रजा प्रबल इच्छा कररहीथीकि श्रीमान्का मुकुट धारण महोत्सव भारत मेभी हो, और हमसब प्रजा दर्शन करक कृतार्थ हों । यद्यपि आजके पांच वर्ष पूर्व आप भारतमें पधारेथे, परन्तु उस समय और इस समयमें बहुत कुछ अन्तरथा । भारतमें श्रीमान् सम्राट महोदयका मुकुट महोत्सव हो यह बात बहुतहीं असंभवथी, क्योंकि नतो स्वर्गीय श्रीमती महाराणी यहां पधारीं और न सम्राट पद प्राप्तकरनेपर स्वर्गीय श्रीमान् एडवर्ड महाराजही पधारे।

परन्तु यहबात असंभव होनेपरभी भारतके सभी वर्तमान् पत्र और जन समुदायके सभी अवस्थाके जन श्रीमान् सम्राट पंचम जार्ज महाराजके दर्शनकी अभिलाषा करनेलगे। भारतवासियोके आवाजकी ध्वनी सात समुद्र और तेरहनदी पारकर श्रीमान् सम्राट् और श्रीमती मेरी महोदयाके कानो तक पहुंची, उसी समय आप श्री, कृपावन्त होकर यह आज्ञादे दीकी हमारा अभिषेक भारतमे चलकर हम स्वयं जाहिर करेंगें, यद्यपि इसबातपर दोचार उच्च कर्म चारियोंनें आना कानीभी की परन्तु श्रीमान् राज राजेश्वरकी आग्या कौन उलंघन करसक्ताथा, बात बातमे यह आग्या बिजलीके माफिक भारत और सबद्विप पुंजोंमेंभी पहुंच गई, बारह महींने तक भारत स्वागतकी और इग्लंड विदायगीरीकी तयारीमें तत्पर होगये, धीरे धीरे समय नगीच आया 'मदोना' नामक धूमपोत राजसी तौरपर सजायागया उसीमें आप श्रीमती महाराज्ञि तथा भारत सचिब श्रीमान् लार्ड क्रू और अनेक माननीय सहचर वर्ग सहित विलायतसे भारतके लिये ११ नवेम्बरको प्रस्थान किया।

मार्गमें अनेक राज्योंसे सलामी और महान सन्मान प्राप्तकरते हुये और अदनमे बहुमान प्राप्तकर आप आगे बढे, उसी दिनसे बंबईमे स्थित धूमपोत " हाई फ्लायर " ने बिनातारके यंत्रद्वारा " मदीना " की कुशल पूछी, जब "मदीना " बंबईसे हजारमीलकी दूरीपर थी, सबसे प्रथम जंगी जहाजी लार्ड श्रीमान् हिज एकसिलेन्सी सर एडमंड स्लेडने मदीनाके अध्यक्षसे कुशल पूछी। ता. २ दिसंबरको " मदीना " चार रक्षक जहाजों सहित बंबई से तीन मीलपर मुकाम किया और तोप दाग कर नगरमें सूचना दी गई।

प्रधान नेता और श्रीमान् वायसराय व श्रीमान् गवरनर साहब इत्यादि वहा जाकर कुशल पूछी और स्वागतके लिये जो मंडप बनाया गयाथा वहा श्रीमान श्रीमती सहित पधारे जिसमें ३००० निमंत्रित माननीय महोदय बैठये वहीपर आपने बंबईके प्रजा प्रतिनिधी श्रीमान् फिरोज शाह महतासे सन्मान पत्र ग्रहण कर योग्य उत्तर दिया, सनमान पत्र रखनेका डब्बा बहुतहीं सुन्दर पचीसहजारके व्यय से तयार हुआथा, स्वागत मंडप राजकीय प्रधान शिल्पी मि. विटेट के अध्यक्षतामें बनाथा। इसके बाद श्रीमान् सम्राट् और श्रीमती सामराज्ञि की सवारी बादशाही ठाट और पूर्ण भव्यतासे निकली बंबई लाखो मनुष्योका के द्रवनोंथी ध्वजा पताका, शुभसूचक लेख और कमानोसे आच्छादित होनेसे सूर्यके दर्शन भी मुशकिलसे होते थे। नगर भ्रमण कर सवरी पीछे बन्दरपर गई और श्रीमान् मंदीतामें वापिस गये।

रात्रिसमय महान रोशनी हुई उससमय बंबई देखकर इन्द्रपुरी भी लज्जित होतीथी आतसबाजीका देखाव तथा पुरानी मुंबई नगरीका प्रदर्शन दर्शनीय था, श्रीमान् कई दिन अपनी प्रजाको दर्शन देकर और विश्राम कर ता. ५ दिसेम्बरको रात्रिमें श्रीमान् की गाड़ी १० बजकर ४५ मिन्टपर बंबईसे दिल्लीको रवाने हुई ६ दिसेम्बर मार्गमे व्यतीत कर ७ को दिनमे दिल्ली पहुंची सलीम गढ़ स्टेशनपर पग रखतेहीं १०१ दनादनदगीं स्वागतका कहना ही क्या है बडे बड़े राजे, महाराजे, नबाब, उच्चपदाधिकारी, सैन्य हाथी घोड़े इत्यादि इत्यादि; सभी तैनातथे, यहापर देशी राजपति और रहीसोका परिचय होजानेपर सवारी शाही सडक होते जामा मसजिद होकर शाही केम्पको गई मार्गमें पाचहजार बालक भी

उपस्थित थे, दिल्लीमें भी आपको कई अभिनन्दन पत्रदिये गये, उन सबको आपने योग्य उत्तर दिया आठमी तारीखको श्रीमान् स्वर्गीय एडवर्ड स्मारक की नेवकी तख्ती रक्खी उसमे खोदाथा कि–

This Table was placed in Position by His Majesty King George V. on the 8th December 1911.

इसके वाद १०१ तो पेंकी सलामी हुई, राजे, महाराजे, नबाब श्रीमान्से मिले और श्रीमती सामराज्ञि देशी स्त्रियोंकी मुलाकात की, देशी स्त्रियोंने श्रीमती मेरी महोदयाको दो उत्तम भूषण समर्पण किये, यह दिनभी आनन्दमें बीता ता. ११ को श्रीमान् ने कई देशी पलटनोंको झंडे अर्पण किये ।

आज ता. १२ है आज ही के लिये १२ महिनासे तयारिया होर हीं है। एक विशाल मंडप है जिस मे ११००० निमंत्रित २०००० सैन्य और ५०००० दर्शकांके बैठनेका स्थान है। सभी समुदाय उपस्थित होनेपर १०१ तोपोंकी सलामी दगी। तब ज्ञात भया कि श्रीमान् सम्राट और श्रीमती समराज्ञि पधारती हैं। बात बातमे बिगुल बजी और ३००० बाजे बालोने साथहीं बाजा बजाया सैन्य गार्ड आफ आनर किया श्रीमान् सिंहासनारूढ हुये और जय जयकार हुआ दिल्ली सनाथ हुई। श्रीमान् ने अपना राजपद सूचित किया और राजे महाराजोंने आधीनता स्वीकार की यह कार्य पूर्ण होनेपर श्रीमान् के तरफसे श्रीमान् वायसराय महोदय भारतको उदारताका परिचय देकर सनमानित किया। सातसै के लगभग उपाधि वितरणकी गई।

दूसरे दिन सैन्य निरीक्षण, और कवायत देखे और आचार्योंका जलूस और भारतके भिन्न भिन्न धर्मानुयायियोंके गुरुओंके आसिरबाद ग्रहण कर आप नैपालको सिकारके लिये प्रस्थान कर गये, वहां पहिले हीं से पंद्रह लक्ष रुपये खर्चकर सिकारका प्रबन्ध किया गया था और ६५० हाथी इस काममें नियुक्तथे वहां कोई १० जंगी बाघ कई गेंडे और भालू आपने मारे।

उसी अवसर पर श्रीमती महारानी मेरी महोदया आगरा, जयपुर, कोटा, बूंदी अजमेर, पुष्कर आदि मे भ्रमण कर अनेक दर्शनीय स्थल देख और अतीव सन्मान प्राप्त कर विहार प्रदेशमे श्रीमान और श्रीमती एकट्ठे होकर कलकत्तेको विदा भये। कलकत्ते के विषयमें कहना हीं क्या वही तो भारतकी राजधानी है, वहां के तैयारीका वर्णन करना सूर्यको दीपक देखाने के बरोबर है। कई दिन रहकर सनमान पत्र प्राप्त कर बंगाल नागपुर रेलसे बंवईके लिये आप विदा भये, मार्गमें तीन घंटे नागपुरमेभी आपने लोगोको दर्शन दिये, वहां से बंवईमे आकर "मदीना" मारफत आप भारतसे विलायतके लिये विदा भये भारतमें आप एक मास और आठ दिन रहे।

दिल्लीमें जहा,दर्बार हुआथा उसीस्थानपर जार्जाबाद बसानेकी नेव भी श्रीमान् रखदी, दिल्लीमें श्रीमानकी प्रतिमा स्थापन निमित्त महाराजा साहब बहादुर ग्वालियर एक लक्ष रुपये और श्रीमतीके प्रतिमा निमित्त महाराजा साहब बहादुर बीकानेरने लक्ष रुपये प्रदान किये।

श्रीमान् के भ्रमण समय रेलगाडीमे जो गलीचे आदि सामान था उसको श्रीमती भूपालकी बेगम साहिबाने खरीद कर लिया है।

बहुत वर्षोंमें दिल्ली सनाथ होनेसे दरबारके उपलक्षमें बड़े नगरसे लेकर छोटे ग्रामतक उत्सवमें आनंदित हुये । अनेक पुस्तकालय, अनेक स्पताल, अनेक स्कूल आदि दर्बारके उपलक्षमें प्रजाभक्ति प्रदर्शित करनेके लिये खोली । हजारो पुस्तकें बनी लाखो कविता पढ़ी गई ।

राज्यारोहण

दिल्लीमें राज्यारोहण समय, अनेक भाषाओंमें कविता बनाकर ग्राम, नगर, पुर सर्वत्र पढ़ी गईथी और वर्तमान पत्रोंमें छपींथीं, उनमेंसे कुछ कविताओंके नमूने देखिये, और वेदमंत्र सार्थ तथा जिन्दवस्तामें राज्यास्तुस्तिभी प्रथम पढिये ।

अभिषिक्त राजाकी स्तुति । *

आ त्वाहार्षमन्तेरधि ध्रुवास्तिष्ठाविचाचलिः ।

विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत् ॥ १ ॥

इहैवैधि माप च्योष्ठाः पर्वत इवाविचाचलिः ।

इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठेह राष्ट्रमु धारय ॥ २ ॥

इममिन्द्रो अदीधरद्ध्रुवं ध्रुवेण हविषा ।

तस्मै सोमो अधिब्रवत्तस्मा उ ब्रह्मणस्पतिः

ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे ।

---

* ऋग्वेदमण्डल १० अध्याय १२ सूक्त १७३

ध्रुवं विश्वमिदं जग ध्द्रुवो राजा विशामयम् ॥ ४ ॥

ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः ।

ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम् ॥ ५ ॥

ध्रुवं ध्रुवेण हविषाभिसोमं मृशामसि ।

अथो त इन्द्रः केवलीर्विशो बलिहृतस्करत् ॥ ६ ॥

(वेदार्थ)

हे राजन्? हम तुमको हमारे राज्यका स्वामित्व सौंपते हैं?तुम हमारे स्वामी हो? द्रढ़ और अतिशय अचल होकर गादीमें स्थिर हो ! यही हमारे राजा होयँ, ऐसी इच्छा तुमारी सर्वे प्रजाकरो ? तुमारे हाथमेसे यह राज्य भ्रष्ट न हो? १

हे राजन्?यह राज्य तुम सदाभोगो? तुमारे हाथसे यह कदापि भ्रंश नहो? तुम पर्वतके माफिक अचल हो? जैसे इन्द्र स्वर्ग लोकमें स्थिर है ऐसे तुम इस लोकमे स्थिर होव? तुम राष्ट्रकी प्रजाको अपने अपने कर्म्मोंमें प्रवर्ताओ! २

निर्मित हविसे तृप्त भया इन्द्र अभिषिक्त राजाको उसके गादीपर स्थिर करो? यह हमारा है ऐसा सोम राजा प्रति उच्चारण करो! ३

आकाश स्थिर है, पृथ्वी स्थिर है, ए पर्वत स्थिर हैं, यह विश्व स्थिर है, यह जगत् स्थिर है, ऐसेहीं प्रजावोंका यह राजा स्थिर हो? ४

हे राजन् ? तुमारे राज्यको तेजस्वी वरुणदेव, स्थिरकरो? परोपकारी देव, बृहस्पति तुमारे राज्यको थिरकरो? इंद्र और अग्नि भी तुमारे राज्यको स्थिर करो ? ५

हम ऋत्विज पुरोडासादिसे युक्त सोम (रस) यज्ञमें देवोंको समर्पते हैं, इन्द्र तुमारी प्रजाको, तुम्हाराही भक्त बनावै? और उसे तुमको कर देनेवाली करै (तुम, का ठीक शब्द " तू " है जो वाय बलमें केवल ईश्वरके लिये और भारतमे प्यारमे प्रयोग किया जाता है ।)

O King ! place upon Thee the kingship of our Country ! Be Thou our Lord ! Mayest Thou occupy the Throne being fixed and exceedingly immoveable ! May all Thy Subjects desire Thee ! May not Thy Kingdom fall from Thy grasp ! 1

O King ! do Thou rule this very Kingdom and may it not slip away from thee ! Be Thou fixed like a Mountain ! Be Thou unchangeable here as Indra is (in Haven) ! Engage Thy people in their rspective duties ! 2

May Indra Pleased with constant oblations fix the Crowned King firmly in his seat. May Soma speak to him as his own and may the Lord of Hymns speak also ! 3

The Sky is fixed, the Earth is fixed, these Mountains are fixed, this Universe is fixed, this World is fixed; even so fixed be this Lord of the people ! 4

O King ! May the resplendent Varuna make Thy Kingdom fixed ! May the beneficient Brahaspati make it fiixed ! May Indra and Agni do the same ! 5

We (the Priests) offer to the Gods the eternal Soma combined with constant oblations. My Indra make Thy people solely devoted to You and make them pay Thee Taxes. 6

(मुंबई समाचार-मुंबई) ता. १-१२-११.

नेमसेते अहुरमजद्—

नेमसेते आथ्रो अहुरहेमजदाओ पुथ्र

अवस्ता-अषाउम अहुरमजद गइन्यु स्पेनिश्त दातरे वीस्पयाओ अषओनो स्तोइश अजेमयो मजदयशनो जरथुश्त्रिश नेमं घहा थ्वाम यिम पिता रेम, यासामि (=जइध्येमि) अषादाओ, मनं घहा वोहु आ मे अवंघंहे जम्याओ, वा दायाओ में बा अशोषेम, मनं घहो तुम अहुरमजद, यतक्षथ्रो तेमेम, पुरुघेम ज्योर जेम वहिश्तमांथ्र बरेजयेनी

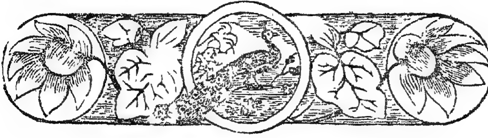
गुजराती अर्थ-अअे अनदीठ घणीज आ बादी करनार अशोनी तमाम खलकतना पेदा करनार अषो अहुरमजद! हुं के जे मजदयश्न जरथोश्ती छु ते तुं पीताने नमनताइथी अर्ज गुजारुं छुं के अअे अषोइना बक्षनार? भलां मननी मारफते, मारी मदद्ने माटे तुं आव; अने तुं अअे अहुरमजद! खच्चित मने मननी मुराद बक्षके जे सौथी मोहोटा पादशाह पांचमां ज्योर्ज उपर श्रेष्ट मांथ्र मार्फते हुं दुआ गुजारुं.

अवस्ता-तुम यो पुरुधो जयोर्जो हिन्दओश-वसो क्षथ्रो वंघवो खरे नहि जातो अहि तुम हुपतो मनाओ, हुख्तो वचाओ,

हवशी तो ष्योथ्नो, रअत्राओ खरेन घउ हवाओ, सुरो बेरेजाओ हुरओधो–पेरेमजास्तेमो, द्रिघओश थातो तेमो, आक्रि वचस्तेमो अहिः पुरुध ज्योर्ज क्षथ मजओष ब्रीतनो अइर्यंयरन्द् अस्य, अजेम यो आथ्रव नवरोश नांम ध्वांम मांथ्र यत जरथुश्त्रहे वचस्तशतिवत, बरेज्येनि, यत वेरेज वतच, वेरेथ्रदनय, त्वओषवतो, त्वषाओ तउर्वयन्तच, स्र हच द्रवन्ते मच, महरखेमच.

गुजराती अर्थ-तुं पांचमो ज्योर्ज, हिंदु स्थाननो स्वतंत्र पादशाह भली कीर्तीमां जन्मेलो छे. तुं सारा विचारायला विचारवाळो, (तुं) सारा बोलायला सखुन वाळो, सारां कीधेलां कामवाळो, प्रकाशीत, खोरेहेमंद, बाहदुर, बुलंद दरज्जानो, खुबसुरत, घणोज फतेहमंद दरवीषोनो पाळणहार, दुआना सखुन बोलनारो छे. ग्रेटब्रिट अने आयरलेंडना पादशाह अअे पांचमां ज्योर्ज ! हुं नवरोझ नामनो अथोरनान जरथोश्तना शब्द रचनावाळा म्रांथ्र के जे एजमती, फतेहमंद, दुख देनारना दुखोने ताळनारा हुमला अने (कवखतना) मोहोतथी दुर (करनार) (अेवा मांथ्र छे तेनी मार्फते) तुंने आशिर्वाद दउं छुं.





(मञ्जुभाषिणी कांचिवरम्)

विजयतां महाराजचक्रवर्ती ।



स जयतु निखिलमहीपतिमकुटमणिद्योतरञ्जितपदाब्जः ।
आस्माकचक्रवर्ती पञ्चमजार्जप्रभुरसपत्नीकः ॥
दिशतु करुणापारावारः करिक्षितिभृत्पतिः
निखिलजगतीरक्षादीक्षो हरिः प्रणतार्तिहा ।
भरतधरणीसम्राऽजेस्मै प्रजाहितकांक्षिणे
शुभमविकलं मेरीनाथाय जार्जमहीभृते ॥
देवी यस्य पितामही गुणनिधिर्विक्टोरिया सत्यवाक्
एड्वर्ड्भूमिपतिश्च यस्य जनकश्शान्तिप्रतिष्ठापकः ।
वात्सल्यस्य निधिः प्रशान्तिनिलयः किं वर्ण्यते मादृशैः
सोयं पञ्चमजार्जभूपतिरहो भूपष्टभागेश्वरः ॥
अनेकशतयोजनेष्वधिवसन् पुरं लण्डनं
शताभ्यधिकमण्डलावनविधौ सदा व्यापृतः ।
अचिन्तितमहाश्रमो मनसि चक्रवर्ती स्वयं
प्रजासु ननु वत्सलो भरतभूमिमद्याञ्चति ॥
चिरात्प्रजानां हृदयाब्जपीठान्यधिष्ठितोप्यद्य पुनश्च बाह्यम् ।
सिंहासनं भारतमेत्य विन्दन् जीयाच्चिरं पञ्चमजार्जसम्राट् ॥

(प्रतिवादिभयङ्कर—अनन्ताचार्यस्य)

॥ श्रीचक्रवर्त्यष्टकम् ॥

१ क्षेमाय सर्वजगतामुदधिं महान्तं
सन्तीर्य भारतमिदं भुवनं प्रविष्टम् ।
जार्ज्मेरिसंज्ञकमपास्तसमस्तखेदं
तच्चक्रवर्तिमिथुनं चिरमत्र जीयात् ॥

२ यस्य प्रजावनविधा इव वीक्षमाणो
नैवास्तमेति सविता निखिलेपि देशे ।
यद्भारतीजनगणेषु दयार्द्रचित्तं
तच्चक्रवर्तिमिथुनं चिरमत्र जीयात् ॥

३ मान्यैर्महीपतिभिरात्तमहाभिषेक–
सम्पत्तिशालिनि पुरे किल हस्तिनाम्नि ।
मूर्धाभिषेकमहमद्य समश्नुते यत्
तच्चक्रवर्तिमिथुनं चिरमत्र जीयात् ॥

४ ऊर्द्ध्वं पदं निजमपास्य गुरोर्नियोगात्
यो भाधिराज्यवहनं परिचिन्त्य नूनम् ।
योग्यामिव क्रमकरं चरितं सिषेवे
तं नाविकं नरपतिं बहु भावयामः ॥

५ तस्यानुरूपगुणशीलवयः प्रभावैः
तुल्यां प्रिया कुमुदिनीमिव शीतभानोः ।
प्रेम्णा प्रजासु करुणामिव मूर्तिजुष्टां
राज्ञीं भजेम सुचिरायच मेरि संज्ञाम् ॥

६ यद्वीक्षणं ह्यमृतवर्षनिभं प्रजानां
यद्वाग्झरी सुरनदीव शमस्य दात्री ।
यत्पादपङ्कजनिपीडितमौलिरत्नाः

भूपा वहन्ति नितरां कृतकृत्यभावम् ।
७ धात्री तथाच भरतान्ववपालितेयं
भूपैः कठोरचरितैः परिखिन्नपूर्वा ।
संप्राप्य यत्पदसरोरुहलांछनानि
पूतां समर्थयति नैजतनुं प्रमोदात् ॥
८ तस्मै प्रचाहितनिविष्टधिये नितान्तं
दीनानुरञ्जनविधासु विचक्षणाय ।
श्रीचक्रवर्तिमिथुनाय सुदीर्घमायुः
आरोग्यमन्यदपि शर्म हरिः स देयात् ॥

(इमानि पद्यानि चेन्नपुर्यां अभिषेकदिवसे श्रीशिष्यसभायां सभाध्यक्षेण श्रीराजगोपाला चार्येण प्रणीय पठितानि)

आशीर्वचनपत्रिका ।

" जेजीयतां भारतसार्वभौमः "

श्रीमद्भारतभागधेय ! महतः स्थानादधः संपतत्संप्राप्यापि तुरुष्कदावदहनं हन्त ! आगतं सार्थके । किंचेतो विक्टोरियाङ्कमथ तत्सूनोरुरस्तत्पुनस्तत्पुत्रांसमुपेत्य संप्रति चिरंजीया महीमण्डले ॥१॥

श्रीमन्भारतीधाश ।

ऋषीणां पूर्वेषामवितथमिदं यत्प्रतिकृति ससमाराद्ध्या साक्षादनुभवितुकामैरिति वचः । न चेदेवं पूर्वं प्रतिकृतिसमाराधनपरा भवन्तं प्रेक्षन्ते सपदि कथमीशं सुकृतिनः ॥ २ ॥

(रथबन्धः)

अनवद्यैः कृतासेवः समिकैर्वीतमत्सरैः ।
सन्तोषेण सहोत्सस्थात्वभिषेकमहोत्सवः ॥ ३ ॥

पारम्पर्यागताय।मिह भरतभुवि भेमलारं वितुण्वन्नागतैवात्र मद्धचे-मजमयमभिषेकोत्सवैः भीणयन्नः। धर्म्ये न्याय्ये च मार्गे सपदि नियम यन्स्वाः प्रजाः प्राज्यकीर्तिः सम्राड् जार्जः सदारो भवतु भगवतो पाङ्गपाताच्चिरायुः ॥ ४ ॥

(ना. रामनाथशास्त्री ।)

मकुटधारणमहोत्सव ।

अस्मै जार्जमहीन्द्राय पारम्परिक मङ्गळम् । ब्रह्माद्याः देवतास्सर्वाः नित्यं कुर्वन्त्वतन्द्रिताः ॥ १ ॥

अमृतकरसमूहैर्नन्दिताशेषलोकैः हरि पदमनुयातः सद्गणान् द्योतयंश्च । इह कुवलयहासं कर्तुमृद्धः कलाभिः परजल निधिमध्याज्जार्जराजा ह्युदेति ॥ २ ॥

गवां बृन्दैरन्धन्तमसमिह भिन्दन्नविरळं रमावासं पद्म भ्रमरहितमाराद्विकचयन् । विशेषं चक्रं स्वं सुखयितुमिनो जार्ज नृपतिः गतच्छायां मेरीं विलसति हि लब्धाम्बरवरः ॥ ३ ॥

अरोगतामाशु विरच्य शक्त्या नृणां प्रकृष्टं सुखमात्तसारः । प्रज्ञाः पुरं जार्जनृपोस्ति भास्वान् युगी सुमेरीमवलम्ब्य..मानः ॥ ४ ॥

असीदेड्वर्डनामा परिकलितगुणः पूर्ण शक्तिः प्रधानो योसौ चक्रे प्रधानं रस मिह सुलभं स्वीयनामानुगुण्यात् । साऽलक्साण्ड्रा

च देवी शिव इव च शिवा सूत वीरं कुमारं जार्जाख्यं सोयमेवा ऽप्रतिहतमहिमा लोकरक्षां बिभर्ति ॥ ५ ॥

यदीयानां रक्षाविधिषु परमाश्चर्य मधुना ट्रेयिन्मोट्टार्मुख्यः बहुजनहिताः पुस्पकनिभाः । तपालतन्त्रयाद्यास्ते सुलभ तरचारत्व-मगमन् परं स्वस्था मार्गास्सुतर बहुसेतुश्च सरित् ॥ ६ ॥

महापुर्यां पुर्यामविचलितदीपाश्चबहुशः निशीथे निर्निद्रं पथि च रक्षार्थं सुभटाः । अहो मार्गे शुद्धिः प्रतिविशिख मम्भःप्रदमभूत महायन्त्रं तन्त्रात्तदिह बहुमानं जनगणे ॥ ७ ॥

यदीया कीर्तिस्सा बहुळदळदौर्भाग्य घटिका प्रतापो वैयर्थ्यं रचयति रवेर्मण्डल मिषात् । जने रागो यस्य ध्वजवरशरीरं वितनुते नतं द्रष्टुं श्रोतुं प्रभवति हि चक्षुःश्रुतिरपि ॥ ८ ॥

दण्डश्च सापराधेषु कृपा च सर्वत्र सद्गुणे मनुजे । वर्णाश्रमा-विरोधं रक्षापि च यस्य मोदमुद्वहति ॥ ९ ॥

मकुटधरणकाले जार्जराजस्य कल्ये सदसि नृपमणीनां जार्ज-रत्ने महार्घे । विलसति चिरगर्भा भूरपीति प्रतीतिं त्व लभत दुरवारं श्लाघ्यरत्नान्यसूत ॥ १० ॥

अस्मिन् राज्ञि नृपासनं गतवति द्यौ र्निर्मला निर्मलाःकाष्ठाः स्वच्छजलाःतटाक निवहाःमन्दानिलोऽभ्रमरः वीणां केचन वादयन्ति कतिचिद्वंशं घटं केचन क्षित्यां पेशगणाश्च केचिदवशाः, नृत्यन्ति गाय- न्ति च ॥ ११ ॥

(मन्नार्गुडि वि, उमामहेश्वरशास्त्रिणः)

श्रीनन्दनन्दनपदाम्बुजसन्नतोऽहम् ।

नात्युष्णो न च शीतलश्च पवनो याम्यः सुरम्यो यथा लोकानन्दकरो मृदु श्च कठिनो भूत्वा स्वयं स्वप्रजाः। सं रक्ष्यखिलभूमिपैः स्तुतपदः सम्राट् स जार्जाभिधो जीयात् पुत्रकलत्रमित्रसहित स्त्वस्तारिवर्गश्चिरम् ॥ १॥

श्रीजार्जो मनुजेन्द्रवन्दितपदो धर्मासने संस्थितो धर्मेणैव करोतु राज्यमखिलं क्षेत्रे शुभे भारते। कृष्णोयं धवळश्च मानव इति त्यक्त्वा च भेदं यथा चन्द्रोयं किरणैः करोति धवळां भूमिं नतां चोन्नताम् ॥ २ ॥

यशो हि जार्जस्य सुधांशुना समं वदन्ति लोका रभसा मतं मम। कलंक युक्तः क्षययुक्सुधाकरो यशस्तु वृद्धं च कलंकितं न हि ॥ ३ ॥

इन्द्राण्या मघवा यथा गिरीजया युक्तो गिरिशो गिरौ चन्द्रश्चन्द्रिकया तथा नृप वरो मेर्या महिष्या युतः। रम्ये विश्रुत हस्तिनाख्यनगरे पट्टाभिषेकासने तिष्ठन् भारतभूपतिर्विजयतामाचन्द्रमातारकम् ॥ ४ ॥

सुत्रामा भूरि वर्षं वितरतु भवतु प्रा-ज्यसस्या धरित्री क्षीरिण्यः सन्तु गावः प्रचुरधनयुताः सप्रजाः सन्तु सर्वे। भूया द्धर्मे जनानामनवरतरतिर्व्याधिनाशः स मूलं भूपैर्युक्तो निझामो भवतु च सुख भाक् जार्जमित्रं च नित्यम् ॥ ५ ॥

(हरिरामशास्त्री)
Sanskrit Pandit
H. H. The Nijam's Go. t.
High School,
Aurangabad.

मङ्गल महोत्सव ।

सर्वोर्वीपतिमौळिरत्नमकुटोदञ्चन्मयूखा वळीसन्नीराजितपादपीठ किरणप्रद्योतिताशामुखः । मेर्या स्वात्मगुणानुरूपगुणया साकं महिष्या स्वया श्रीमान् जार्जभिधान भाग्विजयतामाचन्द्रमातारकम् ॥ १ ॥

विष्णुरिव यश्श्रियाप्ताश्शिव इव यस्सर्वमङ्गळोपेतः । विधिरिव वाणीशो यस्सोऽयं जीयाच्चिरं राजा ॥ २ ॥

श्रीमति हास्तिननगरे नरपतिभवने नवेन्दुबिम्बरुचौ । नवरत्न मण्डपेऽस्मिन् मणिमयमञ्चे विभुर्जीयात् ॥ ३ ॥

माङ्गळिकैकादशयुङ्नवतिशतोत्तरसहस्रतमवर्षे । मासे डिसम्बराख्ये द्वादश दिवसेऽवनीजदिवसयुते ॥ ४ ॥

पट्टाभिषेकाख्यमहे यदीये समस्त वादित्रमहानिनादैः । हेषारवैर्हस्तिसमूह घोषैस्समाकुलाभून्नगरी तदानीम् ॥ ५ ॥

तटिल्लताजित्वरहेमदण्डच्छटाविराज त्करसोविदल्लैः । स्तुतस्ववंश्यावनिपाप दानैर्विकासिनानाविरुदावळीकैः ॥ ६ ॥

अनेकवैताळिकवन्दिवृन्दैस्समाकुलैरुद्ध पुरःप्रदेशः । लसत्किरीटोज्वलमौळि भागो विराजमानाङ्गदबाहुशृङ्गः ॥ ७ ॥

सुचामरालङ्कृतपार्श्वभागस्सितातपत्रो ज्वलवक्त्रचन्द्राः । प्रत्युप्तभास्वन्नवरत्न जालैः प्रतप्तकार्तस्वरलृप्तपार्श्वैः ॥ ८ ॥

स्तम्भैश्चतुर्भिस्समुपास्यमानं मणीमय प्रोज्वलशृङ्गकोटि । मुक्तासराकल्पित जालकाढ्यप्रान्तोल्लसत्क्षौमवितानशोभि ॥ ९ ॥

सिंहाननाञ्चच्चतुरंघ्रिमूलं सिंहासनं सम्य गधिष्ठितोऽसौ । पट्टाभिषेकोत्सवमा ददानस्स भारतं वर्षमलंश्चकार ॥ १० ॥

अनेकदेशागतभूपवर्गैस्सम्पृच्छ्यमानः कुशलं महीपः । मन्दस्मितेनोत्तरमाद देसौ भवेदलब्धावसरो हि सम्राट् ॥ ११ ॥

अगायि हृष्टैरथ गायकौघैस्सन्तुष्टुवे पौरजनैस्समन्तात् । दासी गणैराननृते शतघ्नीश्शब्दापयन्ति स्म शतैकवारम् ॥ १२ ॥

केचित्समाहन्युरथात्र भेरी र्दध्मुश्च शंखानितरे प्रहृष्टाः । प्रवादयन्ति स्म परेऽत्र वीणा एवन्ननन्दे सुमहोत्सवश्रीः ॥ ॥ १३ ॥

जयति श्रीजार्जाख्यो डिल्यां साकं स्वभार्यया मेर्या । पट्टाभिषेकगमद्भारत वर्षे त्रिलोकमहितो यः ॥ १४ ॥

भूपेषु पूर्वमवनीपनृपादिशब्दायोगार्थतां विजहतो धृतरूढयो ये। सम्राजि सर्वनृपमण्डलसार्वभौमे योगार्थतामपि दधु स्सुगुणाकरेऽस्मिन् ।१५।

त्रैलोक्यरक्षणचणो रमया सजानिस्त्राणाय सर्वजगतामवतीर्णवान्सः । सोयं स्ववृत्तिमवलोक्य भुजे यदीये निद्रायते कमलया किल दिव्यदेशे ॥ १६ ॥

अष्टाभिरेव नृपतिः किलकल्प्यतेंशैस्स्वस्थो ह्यभूदिति विमृश्य दिगीशवर्गः । सङ्क्रान्तमात्मगुणराशिमसौ समस्तं दृष्ट्वा विभाविह दिगन्तमगादिदानीम् ॥ १७ ॥

सदा द्विजेशक्षयकारिणस्ते सुरेन्द्रमुख्या स्त्रिदशा द्युलोके । रसातलञ्चाहिभयं विधत्ते नैतादृशी रीतिरिह व्यलोकि ॥ १८ ॥

आस्माकपुण्यैरियमेव भूमी राजन्वती पार्थिवशेखरेण । यस्याः पतिस्सर्वगुणा करोऽसौ सामन्तराजार्चितपादपीठः ॥ १९ ॥

अस्त्वायुर्निगमोदितं क्षितिपतौ राज्यं चिरस्थापितं भूयात्पुत्रकळत्रमित्रसहितस्स स्राडसौ वर्तताम्। अस्त्वारोग्यमनेक सस्यनिवहैः पूर्णा समुद्राम्बरेत्येवं कोमळ वल्लिकासहचर स्संप्रार्थ्यते प्रत्यहम् ॥२०॥

श्रीशैलान्वयजन्मनश्शतमखप्रख्यातिमासेदुषस्तत्र्जेशाच्युतनायकाधिपगुरोस्तातार्यनाम्नोऽन्वये । जातोयं कमलासहस्र निवृते कर्तुस्तनूसम्भवस्तातार्यश्शुभपट्ट रार्यविशिखां श्रीकुम्भघोणे श्रितः।२१।

त्रयीशिखादेशिकसम्प्रदायाविवर्द्धिनी नामसभाधिपोऽयम् ।
विनिर्ममे विंशतिमस्य तुष्टयै मेरीपतेर्जार्जभिधानभाजः ॥ २२ ॥
(ति. च. श. ना. श्रीताताचार्यः । कुम्भघोणम् ।)

भद्रं भद्रं भूयात् ।

धारावारायतेऽसावनिशमुपचितोनन्त हर्षप्रकर्षो ध्वान्तायन्तेच दुःखान्यपगमित दयं शत्रुभिर्वर्धितानि । पद्मायन्तेऽरिवर्गा बहु वृजिनकरा भारतीनां प्रजानामिन्द्रप्रस्थो दयाद्रावुदयति नितरां शर्मदे जार्जचन्द्रे ॥

धन्या मान्या भारतीयं धरित्रीदिष्ट्या पूर्णोत्कण्ठितानां शुभाशा मेरी देवी राज राजेश्वरीयं भत्रैदानीं नन्दयत्यत्र लोकान् ॥

यशस्त्रिलोकीं द्विषतश्च शोको मोहः प्रजालोकहितं ज लोभः । क्रोधश्चदन्ड्या नितरान्प्रयाति त्यक्त्वा मुनीन्द्रानिव जार्ज भूपम् ॥

यो सौ समाराधितसर्वकर्तृकः सन्तोषिताशेषजनो बृहच्छ्रवाः । मेरीसहायो जन रञ्जनोत्सुको डिल्ल्यां महाहैरभिषिच्यते मुदा ॥

क क्रियाधिकविवार्धितलक्ष्मीरेष वैरि दळदारणधीरः । कयमेधितदरिद्रमहौघा भारती विधिवशाद्बलहीना ॥

स्वामिने निखिलदुःखहराय स्वागताय किमसावुपकर्तुम् । शक्नुयान्ननु तथागतवृत्तिः स्निग्धकंण्ठजयशब्दकृतार्थी

लण्डनाधिपति राडुपचारं भक्तिमात्र मुरीचरिकर्ता । ईश्वरः स्वयमनुग्रहशीलो भक्तिमौक्यनिजभक्तिकृतार्चः ॥

अर्चितं प्रतिगृहाणाहि हार्द भक्तिभाव परिकलितमेतत् । नान्यदास्ति परितोष करं ते मन्यते हि नृपतिर्बहु भक्तिम् ॥

सर्वलोकपरिपीडनकारि ध्वान्त शान्त निरताय सवित्रे। मानवैः स्वतनुरक्षण मात्रेशक्तुवद्भिरपि किं खलु देयम् ॥

पूर्णतामियमिहार्चकतायाः प्राप्नुया दखिलभुभरणार्हः। येन तेन करुणामृत पूरप्लावितेन नयनेन विलोक्य ॥

कीर्तिर्यातु दिगन्तरानरिगणैरापरिराश्रीयतां विस्तीर्यत कुछेन राज्यविभवेनाऽऽलम्ब्यतामाततिः। वर्त्यत प्रजया सुखाधिकतया राड्भक्तिराश्रीयतां श्रीमेरी सहितस्य जार्जनृपतेरायुश्चिरं वर्धताम् ॥

(म. शु. चि. नरहरिशर्मादेवप्रयाग—गढवाल।)

हन्त हन्त महोत्सवः।

बाल्ये सोयं बहुविधकलाकोविदोभूत्पुरस्तादेड्वर्ड् पुत्रो विनयमहितो वीक्षणीयान्निरीक्ष्य। पश्चाब्दाल्ये गतवति॰ तदा न्यस्तभूभार आसीत् जार्जाख्योयं क्षितिपति शिरोभूषणं भासतेस्मात् १

आज्ञा यस्य नरेन्द्रमूर्ध्नि सततं [illegible]यातेभारतप्रत्यर्थिक्षितिपालगर्वदमने (दलने) कीर्तिः कुठारायते। मेरीमानसपङ्कजस्य सततं हंसायते यद्वचस्सोयं जार्जभिधानभूपति मणिर्बाभाति भूमावहो ॥ २ ॥

जगद्दीपे भूपे गतवति परं लोकमधुना पुरन्ध्री सा लक्ष्मीर्जलनिधिसुताचञ्चलमनाः। क्षितीन्द्रे जार्जाख्ये विहितरतिरास्ते गुणवति पुरन्ध्रीणां चित्तं पुरुषगुणविज्ञानविमुखम् ॥ ३ ॥

प्रत्यर्थिक्षितिपालसम्भृतकरैस्संशोभि तमागणो लण्डनाख्यविहारमन्दिरलसल्लक्ष्मी समालिङ्गितः। मेरीवल्लभया कलासुषुमया कीर्त्या सुधाज्योत्स्नया (धारया) श्लिष्टो जार्ज भिधानभूपतिर्मणि र्बाभाति भूचन्द्रमाः ॥ ४ ॥

पटाभिषेकमङ्गळमधुमत्ताजगति मानुषास्तस्य । रामायण-कविकल्पित (दर्शित) नारायणचरितनिस्पृहा भान्ति ॥ ५ ॥

पृथ्वीमेनामावृतां भूमिपाले जॉर्जी रव्योर्ये भूतभाग्नी नृपालः । कृत्वाभाती त्यदूभुतंमर्त्यलोके भूयात्तस्माद्दुर्बोध्यं शतायुः ॥ ६ ॥

बहुविधगुणयुक्ते बालकेन प्रणीते नृपतिनुतिकृतौ ये प्रायश-स्सन्ति दोषाः । विबुधमतिगृहीतास्तांस्तथा क्षिपध्वं नहि नहि मतिहानिर्जायते पण्डितानाम् ।

(देवरकोण्ड S. बालसुब्रह्मण्यः ।)

शुभंभवतु ।

ओं भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षिभिर्यजत्राः । स्थिरैरंगैस्तुष्टुवां सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः । शुभं भवतु ।

एड्वर्डसम्राड्भूमिपालतनयस्सत्यप्रवीणस्सतामाढ्यस्सर्वसुसम्मत-स्सुविजयी मोदेन यो वर्तते । श्रीमेरीवरकल्पवल्लिसहितः श्रीजार्जि भूपालकस्सामोदं जयतु क्षितौ पर शतं संवत्सरं श्रीयुतः ॥ १ ॥

जयतु जयतु राजा जार्जिसच्चक्रवर्ती जयतु जयतु राज्ञी मेरि देवी चिराय । परमिह जयतां तौ दम्पती लीनचित्तौ परम भगवति स्याद्दम्पतिभ्यां सुभव्यम् ॥ २ ॥

श्रीमतिमेरीयुक्तः पञ्चमजार्जिर्यथासुखं भूतौ । श्रीपतिकृपया सुचिरं श्रीयुतवान् सदापि जीयात् शम् ॥ ३ ॥

(ए. ड्रि. हरिशर्मणः ।)

क्रीटधारणोत्सव ।

स्वागतं स्वागतं जार्ज्यशश्चन्द्रमाः
राजतेऽराजते सत्पदं चाश्रयन् ।
पालितापालिताशेषदृङ्मानस
स्वोत्सवं सोत्सहं तन्वतः श्रीनिधे ॥ १ ॥

श्रीमल्लुण्डन कालवाल विलसत्सान्ताकी वल्लरी नित्यानन्द निलिंपनाथरमणी कर्णावतंसायते । तस्यास्सुन्दर मञ्जरी दलफलस्वच्छा स्वसुगुच्छागलच्छ्री मासांचित पुष्पराजमधु किं भृङ्गैर्न सङ्गीयते ॥ २॥

श्रीरामानुग्रहेण प्रगुण मनुभवंश्चायुरा रोग्य भाग्यं श्रीपुष्टस्वीय नष्टाधिभय विषय जाशेषशिष्टातितुष्टः । श्रीमज्जार्ज् भूपवर्या नतविशयशोरा शीनीशारिताशः श्रीमत्यामेरिपत्न्या सहविहर चिरं पुत्रपौत्रैश्चरक्षन् ॥ ३ ॥

कावेरी कूल परिमण्डित कुम्भा घोण वास्तव्य भागवत रङ्गकवीडयवाग्भिः । आनन्द सागर सुमग्रहद्रा समेयं भक्तिं हि सूचयति भारतराजराजे ॥ ४ ॥

(यस. राधाकृष्णय्यर, लोकानुकूलन्पत्राधिपः ।

सर्व मङ्गल मङ्गलम् ।

चिरं जीवन्तु सम्राज सम्राज्ञ्या प्रजया सह । साम्राज्य चापि भुञ्जन्तु भवन्तु जयिनः सदा ॥

वैराजं विमलं विलोचनयुगं हित्वा निमेषं सदा यद्राज्यान्यभिवीक्षितुं क्षिति भुजां दुष्टात्मनां दान्तये । ध्वान्तं ध्वंस यितुं च चक्रारसा चंक्रम्यतेऽसौ सुखं सम्राट् पंचमजार्ज खण्डविजयी वो भूयतां भूतले ॥

संकेतैर्विबुधाश्रमाद्रिनटिनी वृक्षैस्तथा वापिभिर्यद्राज्यं सुकृता-श्रयं क्षितितले निर्माय धात्रा पुरा । सिन्धूवेष्टनया विभाजितमथो पापान्विताद्राज्यतः सोऽयं पंच ।जर्जनूनविजयी वो भूयतां भूतले ॥

यत्साम्राज्यसुखायरत्ननिवहं धात्रासुधा वाहितं पर्याप्तं नहि सञ्चितं नु धरणी गर्भे पुनः स्थापितम् । तत्रापूर्णमनोरथेन निहितं नागाश्रवेणुष्वसौ श्रीमान् पंचम जर्जजस्त्रविजयी संराजतां राजसु ॥

विज्ञानोन्नतिकल्पनाहितचिता यद्राज्य रङ्गाङ्गणे धात्रा व्योम-वितानके ऽनुरचितं नक्षत्रहारादिकम् । ज्योतिश्चक्रमजस्त्रविभ्रमिव इद्दत्तं निदर्शान्तरं सोऽयं पंचमजर्ज खण्डविजयी वो भूयतां भूतले ॥

यद्राज्ये जनतारुजोपशमने भैषज्यजालं महत् धात्रा मन्दर-गन्धमाधनहिमाद्यङ्केषु सम्पादितम् । यत्साफल्यविनाशनाय च विषं व्यालाननेष्वादधे सोऽयं पंचमजर्जखण्डविजयी वो भूयतां भूतले ॥

सम्भावयाम्येवमशेषविश्वं विशां पतेः प्रीतिविवर्धनाथ । धात्रा विसृष्टं ममतानु गेन मुधा न मन्दोऽपि करोति किंचित् ॥

वदन्ति सत्यं सुधियो ऽन्यहेतुं संसार सृष्टेर्यदि, बुद्धियोगात् । न साधु मन्ये नवमोदमत्तस्तथाहि सम्भिन्नरुचिर्मनुष्यः ॥

(वागीश्वरीटोलसम्पादकस्य शालिकोठानिवासिनः ।)

अभिनन्दनपत्रम् ।

रक्षा हेतोः प्रजानां त्रिविधगुणयुतां विष्णुशक्तिं दधानः कामानां भूरि वृष्टेः क्षितितल जनता नन्ददाता विडौ जाः । दुष्टानां दण्डकर्ता यम इव विभवाधीश्वरः किन्नरेशः श्रीमान् राजा-धिराजः सजयतु विजयी पञ्चमो जार्ज भूपः ॥ १ ॥

क्षान्तौ क्ष्माऽगः स्थिरत्वे बलिरिव वि धृता वाशुतोषे गिरीशः भानो स्तुल्यः प्रतापे यशसि शशिसमो ह्यर्ज्जने राज राजः। ऐश्वर्ये सत्यसन्धो दशरथ तनयो विक्रमे विक्रमार्कः श्रीमान् राजाधिराजः स जयतु विजयो पञ्चमो जार्ज भूपः ॥ २ ॥

मान्धाता मानवेन्द्रः कृतयुगसमये सप्तसिन्धु क्षितीशः त्रेतायां रामचन्द्रो जलनिधितरणेसेतुबन्धप्रबन्धम् । च श्चक्रे वानरभ्यः कुरुकुल तिलको द्वापरे ऽजातशत्रुः श्रीमान् राजाधिराजः कलि युगसमये पंचमो जार्ज भूपः ॥ ३ ॥

गङ्गातीरप्रवाहैर्नहरमुपगतैर्मेदिनीं सिंचयन् सन् इन्द्रं लज्जी-कुर्वन् सुपथिक मनुजान् प्रापयन् धूमयानैः । एकान्हा देश देशं निषध पतिमुखान् यानिकान् ह्रेपयन् सन् श्रीमान् राजाधि राजः सजयतु विजयी मेरि राज्ञी समेतः ॥ ४ ॥

रात्रीं विद्युत्प्रकाशै र्दिनमिव धवली सम्प्रकुर्वन समन्तात क्षोणी सङ्काशयन् सन् बहुळ नृप युतां मन्दयन् रात्रि नाथम् । विद्यादान-प्रभावै र्दिशि दिशि विदितै र्न्यूनयन् भोजराजं दक्षौ विस्मारयन् सन् त्रिदिव मुपगता बोषधीनां प्रदानैः ॥ ५ ॥

स्थाने स्थाने नराणां झटिति सुल भनै स्तार दूतैः सुतारैः सम्यग्बोधं प्रकु र्वन् सुरसदन सदा भर्त्सयन् का नानि । भानोरश्वं विहङ्गं दितिज कुलरिपोः केकिनं षण्मुखस्य जिष्णो र्नागं वृषेन्द्रं त्रिपुर सुर रिपो रत्रिसूनोः कुरङ्गम् ॥ ६ ॥

देशे देशे नराणां सपदि हृदिगतं प्रेषयंस्तत्क्षणेन डाक द्वारैः सुचारै र्विग लित भयकै रेक कार्षापणेन । स्वीयै स्तेजः प्रतापैः सुविमल यशसा खेदयन् पुष्प वन्तौ श्रीमान् राजाधिराजः सजयतु विजयी पञ्चमो जार्ज भूपः ॥ ७ ॥

रक्षन् धर्मान् प्रजानां प्रतिदिन मनिशं सर्व वर्णाश्रमाणां विद्यागारान् प्रकुर्वन् सुतमिव जनतां शिक्षयन्नीति मार्गम् । वार्त्ता वृत्तौ प्रवीणान् विपुल धनचयै र्वर्द्धयन् व्यावहारैः नीति स्थानुच्च-देशं परिषदिगमयन् दण्डयन् दण्डनार्हान् ॥ ८ ॥

दुःष्टाःसन्तु पराहताः सुजरिताः सन्तु प्रसन्नोदयाः दोषास्सन्तु तिरोहिता ननु गुणाः सन्तु प्रभातास्तथा । देशाःसन्तु निरामयाः सुमुदिताः सन्तु प्रशस्ताः श्रियः श्रीमान् पञ्चम जार्ज सन्तु महितास्ते ते विचारास्सदा ॥ ९ ॥

पौषेमासे शुक्लपक्षे दशम्यां नागर्लक्ष्मीविते वैक्रमाब्दे । श्रीमान् जार्जः पञ्चमो मारवाडै र्विप्रैः सभया स्त्रीयया संस्तुतो भूत ॥ १० ॥ (रामचन्द्रजोषी ।)

(मन्त्री मारवाडी ब्राह्मण सभा, कलकत्ता)

मालाचतुष्टयम् ।

भूपप्रपन्नपरिपालनलग्नलक्ष्य स्त्रीयप्रयत्नयमितारिवरिष्ठरिष्टः। श्रीशक्रशर्वशरदीश यशस्यशस्यः वीरस्वरम्यरतिरेव शिवस्तुवश्ये॥१॥

पालान्मालाललामो वरस्वरकरणान्लीलया लब्धलक्ष्यान् भेजे रेजे विजेतावनजन मनसां प्रेमधामत्व मत्र । श्रीजार्ज्जासजाय स्सहि महितहितश्रीयुतो युक्तयुक्ति र्जीया ज्जायाहियालं पतिमतिर-तितस्सेवते वज्रिवर्यम् ॥ २ ॥

किं चित्रं चित्तचिन्ताविमलमतिमता भूरहो रत्नरम्या येनेयं नेतृनेत्रा नहि बहि रहितं सत्रविता विप्रविद्धा । श्रीमान्मानाति मानः किल बलंबलदो गोपतिः पथ्य पद्मः पालो नीलोतिलोलः विनतनतिनगः पालको लक्ष्मलक्ष्मीः ॥ ३ ॥

पाता जातारितापः परवरहरणे पावनो वर्यवज्रः लोकेशोकेनकेतु प्रचयचलचलद्भूरि वैरिस्वरिष्टः । सारा धारा रराज प्रतिहतिरिति नो भारतारस्वरक्षः श्रीजार्ज्ञोजासजायो महितहितहितः दीनदानस्वनम्रः ॥ ४ ॥ (खापे. नागराजशर्मणः ।)

श्रीजार्जमहाराजविजयः ।

श्रीजार्जसार्वभौमं मेरीदेवीममुष्य महिषीं च । अपि चैतदीय राज्यं पायात्सततं स वेंकटेशानः ॥

श्रीजार्जराज एषश्श्रीमेरीवल्लभा चतस्यैषा । तस्यैतदपि च राज्यं जयता दाचन्द्रतारकं जगति ॥ १ ॥

श्रीमानत्र महीतले विजयतां श्रीजार्ज पृथ्वीपतिस्संरक्षन् जनतामिमां चिरतरं मेर्या समं भार्यया । यःपूर्व युवराडपि स्वजनकाद्यक्षुण्णमार्गी प्रजासौख्यासौख्य विचारणाय कुतुकात्प्रागापिमामिण्डियाम् ॥

आलंकऋनगरादशेषसुगमादाचापि शीताचलान्नानाद्वीपवृतामिमां वसुमतीं राजन्वती सर्वतः । कुर्वाणो निजशाननैरभि मतैस्सर्वस्ट लोकस्य च श्रीजार्जः पृथिवी पतिश्चिरतरं धन्यो विजेजीयताम् ॥३॥

कामं सन्तु सहस्रशो नृपतयो भुमण्डलेऽस्मिन् परं जार्जस्यास्य नकोपि भूपतिमणेरारोढुमीष्टे तुलाम् । दीपत्वं समुपेत्य भीत इव स स्वेनैव नित्योज्ज्वलस्तद्रक्षाविषये प्रकाशियति यद्देशं सदा भास्करः ॥४

एतस्मिन् किल चक्रवर्तितिलके जार्जे दयाम्भोनिधौ प्रत्यर्थिप्रभुपङ्क्तिपूजितपदे विन्यस्य भूमीभ्वरम् । प्रत्यावृत्तिविधौ ध्रुवं सच हरिश्शेते प्रमादम्बुधौ नोचेदेष कुतो बसेज्जलनिधौ सत्याभियत्यां भुवि ॥ ५ ॥

श्रीमज्जार्जमहीमहेन्द्रमकुटीनिक्षेपणोदञ्चितश्रीडिल्लीनगरीमहोत्स वकथासन्दर्भ मानन्ददम् । प्रत्याख्यातपुरातनाखिलमही पालाभि षेकोत्सवं कोवा वर्णयितुं पटुर्यदि भवेत्साक्षात्सहस्राननः ॥ ६ ॥

नानादिक्तटराजराजिमकुटीनीराजितांघ्र्यम्बुजश्रीमेरीदयितस्य जार्जनृपतेः पट्टाभिषेकोत्सवे । श्रीडिल्लीनगरीमिपामगिनवालंकार मालोज्जलां मन्ये श्रीरघुनायकोत्सव कथारम्यामयोध्यापुरीम् ॥७॥

वर्तन्तामिह कोटिशो भुवि जनाः किं तैस्स्वसद्मांगणे निद्राणै-रनिरीक्षितप्रभुमणि श्रीजार्जराज्योत्सवैः । डिल्लीमेत्यच वीक्ष्य जार्ज नृपतिं सिंहासने सुस्थितं यो लेभेऽक्षिफलं तमेव कृतिनं धन्यं च मन्यामहे ॥ ८ ॥

नानाजातिभवा नवाप्पप्रभृतयः पूर्वं नृपालाश्चिरादैन्द्राज्यमपाल यन्निति कथा ज्ञातैव सर्वैरपि । कोवा हूणनरेन्द्रप्रज्जन ममुं पाति स्म साद्यैर्निजैर्निष्कापथ्यमुदीर्यतां ननु समालोच्यापि बुद्ध्या दृढम् ॥९॥

अन्यं देशमिह स्थितस्य यदि ते गन्तुं मनीषा भवेद्दिद्धयेनं गत मेव देशमचिरा द्दृष्टांश्च तत्र स्थितान् । यस्माद्भूपतिभिर्नवोयदतुल प्रज्ञाविशेषोज्ज्वलैरेभिर्मारुत वेगधूमशकटी क्लृप्ता बभूवाधुना ॥१०॥

येवा केचन भूसुरा विजहति प्रज्ञा स्स्वनित्यक्रियां विघ्नाधिक्य वशेषन धूमं शकटीसंरोहणप्रक्रियाम् । तेषां चापि बभूव हन्त सुगमं काश्यादिपुण्यस्थलं य द्रथ्या विदधेऽग्र ·सान्द्रविटपिच्छन्नातपा भासुरा ॥ ११ ॥

कल्याणं यदि संभवेत्तव गृहे सद्यः पुरातार्कितं काशीं वा तव ·बान्धवोधिगत वान् देशं.दविष्ठं ततः । तन्त्रया ज्ञापित एव नैव गणयन् वित्तव्ययं वा भृशं त- त्कालेन समागतो मुदमयं चाप्नोति तद्वा· कथम् ॥ १२ ॥

आस्तां नाम धनव्ययैकसुलभा तन्त्री त्वरावेदिनी निस्स्वस्यापि सुदूरवृत्तकलने स्याच्चेन्मतिर्मादृशः । सद्यः पादकलांवि तीर्य सहसा पत्रं लिखन् वासरैर्जानात्यैव किलाल्पकैर्वदत मोःकस्मादिदं ज्ञायते ।। १३

काशीं मोहमयीमथापि कलिकाताख्यां च माद्रीं पुरीं किं वाक्यैरफलैरमीभि रधिकैर्द्वीपान्तरं वा पुनः । लोकाजामधि तस्थुषामतितरां गाने पटूनां मुदा पश्यामः किल पाटवं वयममी प्रत्यक्षवत्तत्कथम् ।।१४।।

राज्ये हूणसमेध्यमानविभवे यःकश्चि दज्ञानतः कस्याप्यालयमेत्य तत्र यदि च स्पृश्यात्तृणं चाकरात् । सद्यस्तं परिबध्य हस्तयुगळेप्याताड्य चारक्षिणः कारागार मवापयन्ति हि पुरा रीतिः क्वचैतादृशी ।।१५।।

नव्यं पुस्तकमस्ति यस्य निकटे तत्रैव दृश्यं हि तन्नान्यत्रास्य विलोकनं हि सु लभं प्राचां प्रभुत्वे किल । अद्यत्वेपि च पुस्तकानि सुबहून्यानाय्य कोशालये मुदा प्याखिलदृश्यतामगमयन् प्रीत्या किलैत ज्जने ।।१६।।

द्रष्टृश्रोतृमनोविनोदनकरीमत्यन्तसौ ख्यास्पदामेतादृक्प्रमुखीं स्वबुद्धिविभवै रुद्योतितां नूतनैः । मख्याप्यात्मजकौशली मपि जनान् प्रापय्य हर्षं सुखं को हूणा दपरो नृपात्स्वयमपि प्राप्नोति हृष्टस्सुखम् ।।१७।।

ब्रूमः किं वयमस्य दीनजनतासंरक्षणं भूपतेस्तद्देवे सुरनायकेपि सुतरां ताटस्थ्य मातस्थुषि । दौर्भिक्ष्यात्सकलेपि ताम्यति जने नौभिः पदार्थान् बहून् वह्नीभिस्स- मवाप्य रक्षति किल द्वीपान्तरेभ्योपि यत् ।।१८।।

अन्यायात्परवित्तमल्पमपि वा गृहाति नासौ बलान्न ब्रूतेह्ययथार्थं

वाचमपि वा क्लिश्नाति न प्राणिनः । रक्षत्येव जनान् यथार्हमखिला-
नागस्विनश्शिक्षते ब्रूतास्या वनिनायकस्य सदृशो दृष्टश्श्रुतो वा
नृपः ॥१९॥

श्रीमद्वेंकटनायकस्य कृपया श्लघ्यैश्च वृत्तैर्नैजैर्भाग्येनापि जनस्य
चास्य धरणी सौभाग्यभाग्येन च । एड्वर्डस्सपितेव तस्य जननी
ख्याता यथा वाजया जार्जोऽयं च सपुत्रपौत्रदनिती राजा चिरं
वर्ध- ताम् ॥ २० ॥

श्रीजार्जराजमकुटीधारणसमये बुधो- ज्ज्वले सदसि । कोच्चा
नृसिंहशर्मा सम्नुप न्यस्येत्यतोषयत्सकलान् ॥

(नरसिंहाचार्य—कोच्चा. ।)

मकुटधारणोत्सवः ।

श्रीयुक्ता भुवि भारते विजयतेऽसौ हस्तिनाख्या पुरी मानं
काचिदपीह राज नगरी यस्या समं नागमत् । नन्दश्रेष्ठ सुतावता-
रसमयेऽस्या मेव पाण्डोः सुतैः पञ्चभ्रातृभिरानतीकृतधरापै राजसूयः
कृतः ॥ १ ॥

चक्रुर्हिन्दुमहीभुजा मनु चिरं साम्राज्य मिस्लामिनः मह्मद्गो-
रिकुतुब्दिनप्रभृतयोऽप्यामेव देहल्यां पुरि। जाहङ्गीरस्य पितुः समाः
सुयशसो येषां कुले सम्बभु र्जन्योत्कैरथ मोङ्गलैरपि कृतं साम्राज्य
मत्रैव तैः ॥ २ ॥

भासा या निजया तिरस्कृत मरुत्व द्राजधानीद्युतिः रम्या
यांगलराजराजन्नगरी भुमण्डलीमण्डना । तस्या विश्रुत लण्डना-
भिधपुरः सौभाग्यमाप्तं यथा चत्वार्यत्र मुखानि न्वेत्तदपिको दिल्ल्याः
क्षमो वर्णने ॥ ३ ॥

क्रय्याद्यैः सुखदैः पुरेङ्गिलशमहासाम्राज्य साधस्य यः वरयैः केहमुखैः सुकोण दृषदो न्यासः समापादितः । तीर्थीभूत शरीरया ऽर्हनमया विक्टोरिये त्याख्याया यावत्पौरसुखेच्छया तदुपरि प्रसाद् आरोपितः ॥ ४ ॥

वर्यश्चेड्वरडः स्वकीयजननी विक्टोरियामेत्रय चक्रे स्वीयच रित्रनिर्मितिं विधावादर्शरूपां स्वयम् ।द्रव्यं रक्षणशिक्षणादिषु ददल्लो- कापितन्धक्रमः दिव्याहर्म्यं विनिर्मितिः किमु न सा साम्राज्य सौधो परि ॥ ५ ॥

वाचा वक्तुमिहं चरित्रमतुलं नो शक्य मभ्यर्हितं कल्पद्रुमप्रति- मस्य सज्जन जने दीने दयाया निधेः । रौद्रस्योत्कृति मोहिते खलजने दण्डये कृतान्तात्मनः विश्वग्भूपतिवन्दितांघ्रिकमलश्रीजार्ज नाम्नः प्रभोः ॥ ६ ॥

जम्बूका इव दुष्क्रिया अमतयो ये राजविद्रोहिणः यन्मत्तारि- गजौघभेदनविधौ कण्ठीरवत्वं गतम् । ते श्रुत्वैव तु चण्ड शासनममुं भीता निलिल्युः स्वयं तस्या सौ महिमा चकोरसमसच्चिते शशाङ्का- यते ॥ ७ ॥

राज्ये भारतवासिनामविकलं नित्यं जनानां शुभं नन्वन् तां स्वपितामही मनुसरन् तस्या अनुज्ञांस्मरन् स्यादौन्नात्य गिरेरुपर्यंथ समारूढं यथा भारतं सौख्ये नैव यथा तथाऽवनिमसौ सम्राट् चिरं रक्षताम् ॥ ८ ॥

मुक्त्वाऽमुं मुकुटोत्सवं कलियुगे कस्यापि सम्राट् प्रभोः कुत्रापीह न भारते समभवद्राज्ञी सहाध्यासिनी । टङ्काराद्धनुषः पुराहतरिपू रामो यथा सीतया धाम्ना ऽसावधिकं तथा विलसताद्राज्ञ्याच्च मेर्याह्वया ॥ ९ ॥

रम्यो निस्तुलवैभवो निरुपमः कुत्राप्यदृष्टश्रुतः पूर्णोवर्णयतुं मयाऽल्पमतिना ऽशक्यः किरीटोत्सवः। वात्सल्यांबुनिधिं चराचर-पतिं श्रीशं ततः प्रार्थये वर्ण्यो भूपतिभूषणो विजयता माचन्द्रमातरकम् ॥ १० ॥ (अनन्तशास्त्रिणः

धाराराज्याश्रितस्य बदनावरवासिनः)

(भारत मित्र कलकत्ता।)

अभिनन्दनपत्रम्।

जयतु जयतु देवो भूतनाथोमहेशः
जयतु जयतु देवो भव्यकर्त्ता गणेशः।
जयतु जयतु देवः पद्मबन्धुर्दिनेशो
जयतु जयतु देवो जार्जनामा नृपेशः ॥ १ ॥

धन्यं धन्यमिदं नृपेन्द्र! सुदिनं यत्र त्वदीयागमो
वर्षे भारतनाम्नि सूर्य्यशशभृद्वंश्यः प्रजावल्लभैः।
राजर्षिप्रवरैरधिष्ठितचरेऽपूर्वश्रिया शोभिते
शक्रप्रस्थपुरेऽधिरोढुमनघं साम्राज्यसिंहासनम् ॥ २ ॥

अस्माकं चिरवाञ्छितं भगवतान्तर्य्यामिणा पूरितं
पश्यामो मधुराकृतिं निजदृशा यद्भारताधीश्वरम्।
नानोपायनपाणिभिर्नृपगणै राराधितं सादरं
श्रीमेरीसहितं विभूषितहरिप्रस्थीयसिंहासनम् ॥ ३ ॥

दुर्दान्तैर्यवनेश्वरैर्बहुविधं सन्तापिता ये पुरा
कांक्षन्तश्चिरमावसन्नययुतां राज्यप्रवृद्धिं सदा।
किं ब्रूमस्तव शासनस्य गुरुतां स्वे स्वेऽधिकारे स्थिता
ब्रह्मक्षत्रविशस्तथेतरजनाः स्वस्थाः सुखं शेरते ॥ ४ ॥

इन्द्राणया सजयन्तयाऽमरपतिः स्वर्गे यथा देवताः
श्रीदेव्या सह सीतया रघुपतिः श्रीरामचन्द्रो यथा ।
पाञ्चाल्या सहितो मुरारिकृपया सरक्षितो धर्मराट्
श्रीमेरीसहितस्तथा त्वमपि नः शाधि प्रजाः स्वा इव ॥ ४ ॥
भिन्दन् शत्रु तमांसि बन्धुकमलान्युल्लासयन् मित्रवत्
सन्तापं शमयन् सुनीत्युदकतः प्रावृतट्डित्वानिव ।
विद्याज्ञानकलाकलापकुमुदान् प्रोल्लासयंश्चन्द्रवत्
पाह्यस्मान् विविधान्तरायनिवहात् भूपालचूड़ामणे ॥ ६ ॥
दुर्भिक्षं विलयं प्रयातु भवतात् देशे सुभिक्षं सदा
दुष्कर्माणि च नो भवन्तु नितरां तिष्ठन्तु धर्मे प्रजाः ।
विद्याज्ञानकला भवन्तु वितता मौर्ख्यं लयं गच्छतात्
भूयासुःसुखिनो जना धनयुतास्तत्पाज्यराज्योदये ॥ ७ ॥
हिन्दुस्थाननिवासिषु प्रतिदिनं प्रेमप्रकर्षोऽस्तु ते
हिन्दुस्थाननिवासिनां च भवतु त्वय्यस्तदोषा रतिः ॥
त्वं ह्यस्मान् सुखयंश्चिरं सुमहितो जीव्याःशतं वत्सरान्
कल्याणं परम प्रयाम च वयं त्वत्स्वे हसंवर्द्धिताः ॥ ८ ॥

गोपायितारं सर्वेषां शरण्यं शरणैषिणाम् ।
रक्षकं नीतिधर्माणां राजराजेश्वरं प्रभुम् ॥ ९ ॥
तत्कृपाकल्पवृक्षस्य तले प्रच्छायशीतले ।
निवसन्तः स्वकं धर्म्ममाचरन्तः सदैव हि ॥ १० ॥
आशीर्भिरभिनन्दयैनं प्रार्थयामो महेश्वरम् ।
चिरं राज्ञीसमेतोऽसौ जीव्यात् संरञ्जन् प्रजाः ॥ ११ ॥

इति प्रार्थयितारो–

(वङ्गकसिद्धान्तसंरक्षिणीसभासभ्याः ।)

———

(हितवार्त्ता—कलकत्ता ।)

आशीर्वादावलिः ।

महीनाथः शान्तः पृथुल यशसा यो विलसित;
प्रजाभर्त्ता दाता नयसरणि दक्षो नृपपतिः ।
सदाधारा यस्य प्रसरति सदा वाक्यनिवहे,
सजार्जो लोकेशो जयतु जयताद् भूरिविभव ॥ १ ॥
महाराणी मेरी परमरमणाया सुरमणी,
सुशीला साध्वी श्रीमतिचरणपूजारतमना, ।
प्रजानां तोषार्थे जननिरिव याता स्वयमपि,
अनन्तं सौभाग्यं प्रचुर समयं सैतु मुदिता ॥ २ ॥
शत्रु शत्त गजेन्द्र नाशनहरी राजन्वतो येन भू,
यस्मिन् शासति जीवनं पिवति ही सिंहेन सार्धं वृषः ।
सोयं पञ्चम् जॉर्जनामनृपतिः श्रीएडवर्डात्मजो,
जीव्याद् धार्मिक भारतीय जनतामोदप्रदानोत्सवः ॥ ३ ॥
महीपवृन्दवन्दितः सुरेशभूतवैभवः ।
महेशतुल्यविक्रमो रतीशतुल्यसुन्दरः ॥ ४ ॥
समस्तभूमिनायको दिगन्तवित्तकीर्तिकः ।
अशेषशास्त्रदर्शकः सुनीतिमार्गलुब्धकः ॥ ५ ॥
कलत्रबन्धुसंयुतः सुपुत्रपौत्रवर्धितः
सुजार्जराजपञ्चम् श्चिरं वसेद्धरातले ॥ ६ ॥
इत्याशीर्वादावृन्दो भवताद् भवतां भूतये सदैव ।
रघुवरदयालुशर्म्मणा कृतो राज्याभिषेकोत्सवेमुदा ॥ ७ ॥

रघुवरदयालु वैद्यशास्त्री,
नौधरा, कानपुर ।)

(शुभाचिंतक प्रयाग)

दरबारोत्सवका कविता।

गुणानुरागी गुणिनांदयायुतो, युवानृपः पंचमजार्ज संज्ञितः
पितुःपदंप्राप्य स पार्लिमेण्टसत्, सभाजनैर्मोदित माऽश्वशोभत ॥१॥
डिसम्बरे द्वादशवासरे शुभे, नमत्सुभूपेषु स भारताधिपः।
समेत्यंदिल्ली कुरुतेमहोत्सवम्, स्वराज्यरोहस्य परंपरागतम् ॥२॥
नृपस्यतस्या खिलदेशजाः प्रजाः, नवावतारस्य निशापतेरिव।
समुन्नतिं प्रोन्नतनेत्रपंक्तयो, दिदृक्षवो मोदमवाप्नुवन्परम् ॥३॥
वसुन्धरा यद्यपि पूर्वराजभि, र्मान्यैःसुभुक्ता रमणीवसंततम्।
तथापि जार्जे भरताधिपे चिरात्, अनन्यपूर्वा सुभगेवसंश्रिता ॥४॥
मुदाद्यसर्वैर्भरतांग्लवासिभि, र्नृपैःप्रजाभिः क्रियतेसदुत्सवः।
समेत्य नारायणदीक्षितादयो, ऽप्यतःप्रयागेभिसजोऽत्रतत्पराः ॥५॥
स पूर्वजेभ्यो ऽप्यधिकःप्रतापवान्, प्रजासुदक्षः समभावमाचरन्।
दयानिधीराज्यधुरं वहनजयी, भवेत्समेरीमहिषीसमावृतः ॥६॥

नवेराज्याधीशेभवतुनवथाभक्तिरधुना,
जगद्वंद्येजार्जेनृपतिपतिपूज्येऽद्यजगताम्।
समारोहेह्यद्येविनयनतिलभ्येसुपरमा;
जनोभूपादस्मात्कुशलसुभगोहर्षनिवहात् ॥ १ ॥
सुखात्सौराज्यात्तेकरुणवरुणाधीश्वरविभो,
जगत्कीर्तेरीवावनिकुलपतेरद्यमहती।
चिरांवख्यातास्वाद्धिनयविपुलापाठसरणिः
प्रमोदोवालानांजयतु मधुरास्वादज नितः॥ २ ॥

जार्जःस्मितास्निग्धदृशाप्रजास्तथापश्यन्प्रजानाथइवापरःप्रभुः।
शनैर्जगामाथयुधिष्ठिरस्य सपुरंप्रहेन्द्रालयसंनिभंनृपः ॥ १ ॥

श्री लण्डनेशवसुधाधिपचक्रवर्ती जार्जोमुदाविजयतेकुरुराजधान्याम्।
यस्यागमोत्सवविलोकनजातहर्षाः संत्यज्यसर्वविषयान्ययुरुद्भारा २॥
गुरुण्डराजानमुपागतंनृपाः कलिङ्गवङ्गाङ्गसुमध्यवर्तिनः ।
सर्वेषुयानैरशुवर्जितैर्ययुर्मुदामहर्षोत्कलिताननःश्रियः ॥ ३ ॥

(वैष्णव नारायण पाठशाले के अध्यापकों ने इन पद्यों को उक्त उत्सव में पढ़ा था ।)

(अभ्युदय प्रयाग)

श्रीजार्जाष्टकम् ।

जयतु जयतु सम्राट्पंचमजौर्जस्सदारः

किमग्निः किंभानुः किमुकुसुमधन्वा धृततनु-
र्हरिः प्रादुर्भूतः किमशिवमपाकर्तुमखिलम् ।
विहर्तुं वाऽऽयातः किमुसुरपतिर्नन्दनवनात्-
प्रभुर्वाऽयं जार्जो नरपतिपतिः पञ्चम इह ॥ १ ॥

शचीयं वा किंवागिरिपतिसुता सर्वशरणा--
रमा किंवा सीता किमुपरम सौन्दर्य्यलहरी ।
तडिद्वातारा वा किमु सुरसरिद्वाहिमलता-
ऽथवा राज्ञी मेरी सकलजनमाता गुणायुता ॥ २ ॥

यथावृक्षावल्यां विलसति सदा देवविटप-
स्सुरेन्द्रोदेवालौ विधुरतिगनें तारकगणे ।
तथाराज्ञांपंतावपि मधुरवाग्राज्यतिलको-
.त्सवे श्रीमज्जार्जो विलसति सदारैस्सुहृदयः ॥ ३ ॥

य इन्दुस्ताराणमिव नरपतिनामधिपति–
र्यमालिर्विज्ञानां कथयतिसुरेन्द्रोयमितिवै ।
कृतोऽधीनो येनामितगुणगणैर्भारतजन–
स्सदायस्मैदेवा अपिकुशलमिच्छन्ति मनसा ॥ ४ ॥

रविर्भीतोयस्मादतिहतछविश्शान्तहृदयो-
महाराज्येयस्यक्षणमपि नयात्यस्तभवनम् ।
गुणाःसर्वैयस्मिन्नवनरपतौ सन्ति सुखदा–
हरे ! दारायुक्तस्सभुविसुखदोजीवतुसदा ॥ ५ ॥

सुभायावद्गङ्गा भुविभयहरा पुण्यपददा-
पतिर्यावल्लक्ष्म्या ललितहृदयोरक्षतिधराम् ।
सदादारायुक्तो जनपतिशिरः पूजितपदा-
म्बुजस्तावत्सम्राडति सरलचेता जयतु वै- ॥ ६ ॥

यावद्व्योम्नि शशिप्रभाकरसुभायावच्चभ श्रेणयो–
यावद्दाशरथेर्यशोरघुपतेर्यावम्मुनीनांसुगीः ।
यावद्योगिजनेशकृष्णारचितागीतेहवैविद्यते
जीयात्तावदिहप्रमोदसहितो जार्जस्सुधीः पञ्चमः ॥ ७ ॥

हेकृष्णचन्द्र ! करुणाकर दीनबन्धो !
हे रामचन्द्र ! चरणैः कृतपुणलोक ।
हे पर्वताधिप सुतेश शरीरभाजां–
स्वामी सदार इह जीवतु फिरफ जार्जः ॥ ८ ॥

(वैद्य रामचन्द्र शर्म्मा–आगरा)

(मिथिलामिहिर, दरभंगा)

श्रीमान् जार्जाशीर्व्वादाष्टक ।

कल्याण दात्री भुवनस्य धात्री, कोरोतु भव्यं शरदिन्दु, गात्री ॥
जार्जस्य नित्यं मम पञ्चमस्य, शिवारमागीश्रम हीश्वरस्य ॥१॥
रुद्राणी मणि मण्डितस्यचरणा, वाणी गुणाधीश्वरी ।
कल्याणं कमलालया वितनुतां, जार्जस्य भूभृत्पतेः
बुद्धिः शुद्धतराप्रजापतिसमस्यास्तु प्रजा पालने ।
दीर्घायुष्ट्वमथो यथोचितिमिति, प्राज्य प्रतापावलेः ॥ २ ॥
प्रतापराजी विलसत्प्रकाशः प्रजावलीनां बहुपूरिताशः ॥
महीश्वरः पञ्चमजार्ज कोऽसौ, सुखं चिरञ्जीवतुबन्धुवर्गैः ॥ ३ ॥
राजानं भगवन्तमार्य चरितं, जार्जाख्य संप्राप्यकिं ।
मन्ये धन्य तमास्वमत्रभवती, राजन्वती जानती ॥
द्राक्सर्वत्रशुभावहाऽर्थ, निवहा सम्पूर्णसस्योन्नता ।
विद्यान्दो लन तुंदिला सुजनता, मोदाकुलाऽभूदिला ॥ ४ ॥
विभोते प्रतापं निशम्यात्रलोके, सुसन्ती द्विपन्तश्चकुर्वन्तु नित्यं ॥
प्रहर्षं विलापं सदेत्यर्थयेऽहम्–प्रफुल्लाननेभ्योजनेभ्यः प्रहर्षात् ॥५॥
तवैवविज्ञाय शुभाह्निकंविभो–स्त्वपालनासेचनकं महोत्सवम् ॥
स्थले स्थले सर्वजनानुमोदिनी, तनोति हर्षंखलु वीरमेदिनी ॥६॥
धन्या दीक्षीवयं धन्या, धन्यंभारत मण्डलम् ॥
धन्यञ्चनिखिलंविश्वं, जार्जपादसमर्पणात् ॥ ७ ॥
मतिहीनोऽप्यहंवक्तु–माशिषञ्चकथं क्षमः ॥
हर्षान्धोन्मुक्तबन्धानां, प्रबन्धेकी विचारणा ॥ ८ ॥

(बाजितपुर निवासी श्रीकुलेश्वर कुमार)

सम्राट् सुयशोवर्णनं ।

शौर्य्यौदार्य विचारसिन्धु जयशश्चन्द्रांशु शश्वन्निमलत्फुल्लन्मानसकैरवाः सुमनसो यत्प्रीतिमाशासते यत्र श्रीरपि भारती प्रणयिनी शान्त्योजसी तादृशी सम्राट पञ्चमजार्ज भूपति पतिः श्रीमान् सजीयात्प्रभुः ॥ १ ॥ सर्वशक्ति मदधीश्वरादिभोरेतदेववरमर्थयामहे ॥ आधिपत्यमदसीयमेधतां शाश्वतं सकल सौख्यमुन्नतम् ॥ २ ॥ यन्नलब्धमपि पूर्वपूरुषैः स्वप्नवद्भिरपि नान्वभूयत ॥ भारतेशतिल कोत्सवोद्गतं तत्सुखंवयमिहाद्यलम्भितः ॥ ३ ॥ पौषमास्यसितपक्ष सङ्गता भास्वती तिथिरु पेतमङ्गला ॥ अद्य तत्र परमोत्सवोयतः सूचितः प्रभु मनोगतंततः ॥ ४ ॥ पोषयाम्यसित भारत प्रजाः स्वाः प्रजाः प्रियतमाः सिता इव ॥ भास्वती रपिकरोम्य भीप्सितैरपि तैरपि सुमङ्गलाइति ॥ ५ ॥ वक्तु मद्भुतकृतिं किमीशतेकेपिकुत्रचिदमुष्यशासने भूमियानजलया तोऽधिकंदर्शितं गगनयानमद्भु तम् ॥ ६ ॥ स्वस्वधर्मपरिपालनं नृणां जायते विहत विघ्न मीप्सि-तम् ॥ एक लस्य धनिनोपि नोभयं सद्मनीव विपिनेपि निर्जने ॥ ७ ॥ सद्यएवहितृणां दवीयसां वाचिकंवदति विद्युदद्भुतम्,सर्वदैव समयं वदरीयन्त्रमेतदभितो विराजते॥८॥एकमेमधिकाधिकं प्रजा हेतवे विविधअर्पितं हितम् । मर्पयिष्यति पुनः प्रियं प्रभुस्तत्त्वदीय शुभमस्तु सर्वथा ॥ ९ ॥ मण्डलेश करपद्म सम्पुटं तन्वतास्मितसुधां महिवता धिन्वताश्रितदृशश्चकोरवद्भूयते प्रभुमुखेन्दुना धुना ॥ १० ॥ अद्यसिद्धसुमनोरथोद्धतालापिनी भवति भारती प्रजा । श्रीरमेश्वर पदैक सेवकः कश्चिदालपतितत्समुत्सक ॥ ११ ॥

देवदेविदिवानिशं वहुश विधेहि वरे ।
राज राज रमेश पञ्चम जार्ज नीति परे ॥
भारतादि महा महा विषयान वत्य समे ।
राम विक्रमातोऽधिकं सुयशः श्रिते परमे ॥
भक्तभारत वासिनां स्वयमेत्य दर्शन दे ।
रामया रंमया समं जगतीश्वरे शुखदे ॥
अद्य हृद्य महोत्सवे जयतादसौसदये ।
श्रीरमेश्वरा ासिंहसेवि सुरेश मोदमये ॥ १ ॥

(श्रीसुरेश शर्मा ।)

श्री हरिः ।

कारुण्यसिन्धोः जगदेकबन्धोः महेश्वरात्सममनि मार्थयामः ॥
तत्रैव स्टष्टेः परिरक्षकोऽसौ जीवान्न्ट पःपञ्चम जार्ज नामा ॥ १ ॥
श्रीमन् महाभाग भारतसम्राट् ! पुराभिषिक्ता भवतः पितामही ॥
विक्टोरिया मूर्त्तिं मतीव देवता निः शेष भूमीमुपरिक्ष्यमाणया
तयाऽवतस्थे सुमनायमानया । २ ।
विशेषतो भारतभक्तस्नाय रक्षाविधानं बिविधं बितेने ॥
अशेषतीर्थान्भ्रामायसंघः निर्मापयद्धूमकलायनम ॥ ३ ॥

धर्म्मैकसारानपि भारतीयान आत्मीयपुत्रानिव रक्षयन्तो कर्मै
कमूलं सुखशान्तिहेतुम् वेदादि शिक्षां प्रथमाम्बभूव ॥ ४ ॥

तीर्थाघनर्थ बिनिवारयन्ती ग्रामे तथा तस्करदस्युभीतिं समान्
दृष्टया बलिनोऽबलांश्च सुशासती शान्तिमजीजनत्सा भवत्पितानाति
चिराय चक्रे राज्यतथात्रापिसुशासनैर्भ ॥ ५ ॥

सम्प्रीनयन्भारतवर्षमेनम् सुखाम्बुधौ मज्जयतिस्मसर्वम् । ६ ।

अस्मान्भारतवासिनो जनगणान्भक्तान् रक्तान हितान् । श्री मन्न्यस्त समस्तजीवन भरान्धर्मार्थशिक्षार्थिनः ॥ पुत्रान् स्वानिव पालयन्प्रतिदिनं त्वं दीर्घ जीवी भवन् । भूया सन्ततमन्त ङ्ग सहितो श्री शीतलस्या शिषा ॥ ७ ॥

(शीतल प्रसाद शर्म्मणः छपरा)

(शिक्षा आरा)

श्रीमती राजराजेश्वरी भारताधीश्वरी

श्री १०८ श्रीमैरी सम्राज्ञी सेवायां

स्वागताशिषः ।

इङ्गलैण्डतो भारतवर्षमेत्य,
कृत्वाभिषेकोत्सवमिन्द्रप्रस्थे ।
प्राचीनचौहानसुकीर्तिशेषे,
यद्राजपुत्रायणकेन्द्रभूते ॥
अजयमेरुमध्ये राजपुत्रान् कुलीनान्,
प्रथितलार्डमेयोकालिजे पाठ्यमानान् ।
बृटिशराजभक्तौ धर्मनीती प्रवीणान्,
मुदितमानसासौ द्रष्टुमायाति राज्ञी ॥
'अतो वयं श्रीपरमात्मानो मुदा,
अभ्यर्थनां स्वच्छहृदा प्रकुर्महे ।
तदीयसौभाग्यसुखैकहेतवे,
सम्राड्चिरायुष्यसमृद्धिवृद्धये ॥

सर्वेषां निजधर्मकर्ममतिदा विद्याप्रचारोत्सुका,
लोकोद्धारपरा विशेषसुखदा सर्वत्र शान्तिप्रिया।
श्रीमल्लण्डनराज्यराजमहिषी श्रीभारताधीश्वरी,
श्रीमैरी पतिपुत्रबान्धवयुता जीयाच्चिरं सौख्यभाक्
दीनान् रक्षयितुं नृपान्नमयितुं पातुं धरामुत्सुको,
दुष्टान् मर्दयितुं बलेन सुजनान् त्रातुं दृढप्रक्रमः।
साधून् सेवयितुं प्रजाः सुखयितुं नित्यं समुत्कंठितः,
सम्राट्पञ्चमजार्ज ईशकृपया जीयाच्चिरं सौख्यभाक्
सम्पत्तिः प्रथतां यशःप्रसरतां धर्मसदा वर्द्धताम्,
कल्याणं भवतात् प्रजाप्रणमनाच्छत्रुक्षयोजायताम्
राज्यं विस्तृणुयात्तव प्रतिदशं लक्ष्मीपतिः सर्वदा,
सम्राट् पञ्चमजार्ज! जीवशतशः स्त्रीपुत्रयुक्तःसमः
बुद्धौ लाभे कीर्त्तौ राज्ये मत्यां स्यात्ते शश्वद्वृद्धिः।
एषामाद्यैर्वर्णै र्नाम्नो भक्त्या सनत्वा शीर्वादा मे॥

(मेयोकालेज-धर्मशिक्षक-पञ्चाम्बुभूषण-विद्यासागर-शास्त्रिणः।)

॥ श्रीसम्राट् पञ्चकम् ॥

इन्द्रप्रस्थ पुरी सुरेन्द्र महिता भूमण्डले मण्डनम्।
यत्र श्रीपद जात शत्रुरभिषि क्तोऽभून्नृपाधीश्वरः॥
तत्रा साद्य परोह्यजातरिपुक स्सिंहासनोधिष्ठितो।
मेरी संयुत पञ्चमोनृपवरो जार्जश्चिरं नन्दताम्॥ १॥

कालापकम् ।

चेदेनं तुलयामि भानु विशुनाऽसौराहुणाग्रस्यते ।
विप्रौषध्यधिराट विधुः क्षयकलो रात्रिंचर श्चाङ्क भाक् ॥
चेदेनं भवदाम्य सौक्षितितले ह्या खण्डलोऽखण्ड राट् ।
दध्यश्चादि परासु दुर्यशयुत श्चाचार्यत्रत्रादिहा ॥ २ ॥
चेदेनं भवदापि मानुषमणिं नैतादशो मानुषः ।
केनेमं समता भ्नयामिसुनृपं सर्वांशभाजं स्मरन् ।
सर्वेषामधि नायक श्शुभगुणो विष्णुर्यथा निश्चितः
क्षीरोदार्णव कन्याया स्वमनसा निश्चित्य चाङ्गीकृतः ॥ ३ ॥
श्रीशस्सर्व गुणा करोह्यनुपमो श्रीसम्पदायो ह्यहम् ।
श्रीशंचेत् भवदामि राजमुकुटं युक्तोह्ययुक्तोऽथवा ॥ ४ ॥
युक्तः श्रीवच नैरुदाहृत मिति नृणांनरेशोह्यहम् ।
संचिन्त्याऽमुमधिष्टितं नृपनृपं श्रीविष्णुना तोलये ॥
श्रीविष्णुःस्वविभूतिमेन भवतात्सार्चं सुतैश्चाश्रितैः ।
श्रीविष्णुस्त्वममीहयच्छतु इदं स्वाशीःसहस्रं ददे ॥ ५ ॥

(ये श्लोक बड़ोदा साधु कर्यालयमे, मुकुट धारण महोत्सवके दिन शास्त्री श्रीनिवासाचार्यजी पढ़ाथा)

श्रीजॉर्ज पंचकम् ।

श्रीमान् महा महिम पञ्चम जॉर्ज सम्राट्,
सामन्त मौलिमणि चर्चित पादपीठः ।
शस्त्रास्त्र सज्ज चतुरङ्ग बलै रुपेतो,
जीयाच्चिरं भुवि सुमन्त्रि गणैः समेतः ॥ १ ॥

यस्य प्रताप मतुल म्भुवनैक वेद्यं,
दृष्ट्वापरां मुद मुपैति नृणां समूहः ।
वर्णैश्चतुः परिमितै रथ सम्प्रदायैः
कृत्स्नैस्सदैव निज धर्मरतस्सदा स्यात् ॥ २ ॥
त्यक्त्वा सर्व भयं जनाः प्रमुदिता राज्ये वसन्तोऽनिशं ।
स्वे स्वे कर्मणि स्वेच्छया ऽ ऽ त्तमनसः सर्वेऽपि धर्मेरताः ॥
नैता दृक् समभूत् पुराण समये भाविन्यथो वत्स्यति ।
तम्वै पातु सरस्वती सुमतिदा श्री राजराजं सदा ॥ ३ ॥
श्रीमान् पञ्चम जॉर्ज मेरि सहितं क्ष्मापाल चूडामणिं ।
सद्धर्म प्रतिपन्थि कुञ्जर घटा प्रोद्दाम कण्ठी रवम् ॥
श्रीमद्धार्डिंजलार्ड संज्ञक महा साचिव्य युक्तं मुदा ।
पायाच्छश्वदनश्वर श्रि विलसत् पादारविन्दः प्रभुः ॥ ४ ॥
श्रीमान् पञ्चम ज्यार्ज भूपति वरः स्वीया महिष्यायुतः ।
स्वीयै स्सूनु सुतादि सर्व विभवै स्सर्वाधिकारै र्वृतः ॥
शास्तु क्ष्मामखिलां यथा दिवि विभु र्वृ त्रारि रास्ते तथा ।
जीयाद्वर्धतु नो विवर्धयतु शं स्वस्त्या सदा नन्दतु ॥ ५ ॥

(यह पंचक भद्रपुर दरबारोत्सवके दिन छात्र हिम्मतलाल मूलजीभाई महता पढ़ाथा)

(वैदिक सर्वस्व प्रयाग)

सम्राटका राज्याभिषेक

श्रीपति यदुनायकं बुध शुखदायुक्त सर्वेड़ित सर्वेशम् हृदि सन्निधाय भारत शुखाय मति वर्धनाय भूपेशम् ॥

भवनाय विभव विद्यार्थ शिल्य विज्ञानधर्म सुविचारैः
सर्वत्र सदात्मज यार्थ चयोन्नति रविगति नीति प्रचारैः ॥ १ ॥
सर्वप्रिय नृपवर श्री राजेश्वर पञ्चमजार्ज कृतीशः
सद्यो ददतोध्वि परेत्रचयः सुविभाति सतामव नीशः ॥
तस्याभिषेक जनितोत्सवोच्च मङ्गल सुखाध्वि राकेशः
मित्रेण मित्रतः संविराजते चित्र मितीह विशेषः ॥ २ ॥
किं निशा दिवा करतो निशाकरो दिवा त्रनिशा करतोवा ॥
राज्याभिषेक तो मातृ प्रेमतो भूमौ भूमि सुतोवा ॥
एवं प्रकार सुविचार तोथ कौतुक मवलोक्य बुधेशः
जिन मात्र भाशया किमपि वदति नृपराज चरित्र मशेषः ॥ ३ ॥

(पं. धर्मनारायण द्विवेदी)

(सुधानिधि, प्रयाग)

राजराजेश्वराभिनन्दनम् ।

एह्येहि भारत महीतल चक्र वर्तिन्
सुस्वागतम् विर चितम् सुमना गृहाण ।
विस्मेर भक्ति कुसुमै र्विहितेन सश्वत्
हृद्येन नाथ विनया ञ्जलिना निकामम् ॥ १ ॥
निसर्ग शुद्धेषु विनीत वृक्षैस्तन्नेषु भक्ति सुमनः सुयदस्ति
किञ्चित् ॥
तेनाऽधुनाहि मधुना रचितां सपर्या भावेन भाव विवशः
स्त्वरित प्रतीच्छ ॥ २ ॥
प्रेम संस्तरण सज्जितम् महत्नाथनो हृदय मण्डलम् मृदु
आसनंहि भवते प्रकल्पितमास्थितां ननु कथम् विलम्ब्यते ॥३॥

प्रसादय सुहृज्जनम् प्रकृति मण्डलम् रञ्जय
विनोदय मनः सतांननु शुभम् समासादय ॥
महेन्द्र जगती तलम् वशय शासनैः शोभनैः
शतक्रतु समस्सदा रिपु कुलम् क्षयम् प्रापय ॥ ४ ॥

दारिद्र्य विघ्न मनसोऽपि वयम् समर्थाः
नाथम् भवन्त मनु रञ्जयितुम् नरेन्द्र ?
दिग्वास सोपि शिशवः पितु रन्तरङ्गम्
धिन्वन्ति किन्नहि प्रियैः खलु शुद्ध भावैः ॥ ५ ॥
उपकृतं महदद्यत्वया प्रभो, दयितया सहितेन नरेश्वर
यदधुना किल भारत मण्डलं निज शुभागमनेन कृतार्थितम्॥६॥
श्री मत्पञ्जमजार्ज! भारत मिदं त्वद्दर्शनोत्थं सुखं
वक्तुं न क्षमते कथन्नु हृदया नन्दः प्रकाशं व्रजेत्
इत्थं साधु विचिन्त्य नाथभवते कारुण्य पूर्णात्मने
निःशंक्य प्रमदप्र हृष्ट मनसा स्वात्मासमा वेदितः ॥ ७ ॥
महाराज्ञी महाराजो जीवतां शरदां शतम्
इत्य जस्र भगवतः प्रार्थयामो हृदा मुदा ॥ ५ ॥

(चन्द्रशेखरओझा शास्त्री)

(साधु अड़ोदा)

आनन्दोल्लासः

स्वस्ति स्तात्सर्वतो राज राज ! !
रवीन्द्र शमनप्रभृत्य मरवृन्द तेजो दधन्
नराधिपति रप्यहं कृष्ण वाक्यात्सहि ॥ १ ॥

सभारतनिवासिनां रति विलास रङ्गावनि
रनस्त रवि भूपति जयति जार्जनामा नृपः ॥ २ ॥
आयाते निजदेशतोऽद्य नृपतौ वर्षन्तिव यम्भारतम्
श्रीमत्पंचम जार्ज नाम्नि महिषी युक्ते दया सागरे ।
देशेवा नगरेऽथवा जनपदे गेहे जने सर्वतो–
ह्यानन्दः किल मूर्तिमानिह भृशं नृत्यं त्यथा नन्दतः॥ ३ ॥
श्रीर्धी भूमिः सखायो बल मथ सचिवा राज संसत्सदस्याः
पौर श्रेणी तथाच प्रतिनिधि रथच स्त्री सुत भ्रातृ वर्गः ।
एतैः सम्वर्द्धमानैः सह वहु मुदितः स्वाः प्रजा राजभक्ताः
रक्ष न्दीर्गायु रस्तु प्रवल तर महाः पंचम श्रील जार्ज ॥ ४ ॥
अष्ट षण्णव चन्द्राब्दः पौषः पक्षोऽसितः कुजः ।
सप्तमी हृदये प्रीत्या लेख्याः स्वर्णाक्षरै र्दले ॥ ५ ॥

(गोस्वामी लक्ष्मणाचार्यजी मथुरा)

(सनातन धर्म पताका, मुरादाबाद ।)

पद्यपंचमालिका ।

अहो अहो महोन्मदं महो महोद्धतः स्वयं
प्रमोदयत्ययं न कं नकं जगद्गत जनम् ।
विलोचनोत्पलोत्करं चिराय कोरकायितं-
विकासहासभासि चादि कस्यनो तनोत्ययम् ॥ १ ॥
प्रबोधलब्ध बोध साधु भाग धेयमद्य नः–
कला कलाकरस्य वर्द्धते यथा सिते तथा ।
यदार्यजार्जपंचमो नितान्तमार्जवान्वितो-
महीमहेन्द्र इन्दिराकराभिषेकमंचति ॥ २ ॥

चकोरचित्तकोरकं चकोरबान्धवो यथा-
यथा च भानुरुन्मनीकरोति पुष्करं करैः ।
तथा जनाननाम्बुजातजातमुन्मदायितं
प्रजेश एष देशभीतिभेषजः प्रकल्पयेत् ॥ ३ ॥
सदा सदारदारकः सदा स दारको द्विषा-
मनन्यभावभावितप्रजाशिरुत्प्रभावितः ।
प्रमोदमन्दिरान्तराधिवासभासिताननः
श्चिराय जायतामधिप्रजं हि जार्जपंचमः ॥ ४ ॥
अलङ्करोति भारतानुशासनानृपासनं
सनाथयन्निमाः प्रजास्तु जार्ज पंचमोऽधुना ।
अमानिमानिमानदः प्रजाहिताभिकः सदा-
मनोऽरविन्दवृन्दमेष नो विनोदयिष्याति ॥ ५ ॥
पद्यपंचतयीयं मे सुमनःस्रगिवोज्ज्वला ।
राजतां राजराजस्य कण्ठेऽकुण्ठित सौरभा ॥ ६ ॥

(पं. मिहिरचन्द्र शास्त्री प्रथम संस्कृताध्यापकः
बन्नूनगरीय मिशन महापाठशालायाः)





श्रीवेंङ्कटेश्वर समाचार मुम्बई

सम्राटका स्वागत–दरबारकी बधाई ।



[हिन्दि पद्य ।]

शुभदिन शुभघड़ि आज कीन्ह पदार्पण हिन्दमें ।
जार्ज नृपति महराज, लगि भारत-हित-कामना ॥
सादर स्वागत भारत करता, देत बधाई मन भरके ।
शुभ दिन आज पधारत पञ्चम, जार्ज राजराजेश्वरके ॥
स्वागत, स्वागत, स्वागत, स्वामिन् ! लेओ आशिर्वचन अपार ।
पुण्य पवित्रा महिके सारे, जन करते हैं बारम्बार ॥
स्वागत, भारत-मङ्गलदाता, स्वागत, भाजन उत्सवके ।
कर्मभूमि भारतके स्वामी, स्वामी, नरपति पुंगवके
स्वागत, स्वागत, पुनि तव स्वागत, करनेको मन चाहता है ।
सादर मानिय स्वामिन् ! यह मन, रुकनेमें नहीं आता है ॥
स्वागत, सर्व-शिरोमणि राजन् ! मस्तक-महिम-मुकुटधारी ।
स्वागत, आगल-अवनीश्वर तुम, स्वागत, स्वामिन् ! सुखकारी ॥
स्वागत, भारत-राजेश्वर ! तव, राजा-परजा-हितकारी ।
स्वागत, जल-थल-शासनकर्त्ता, स्वागत भूमि-भार-धारी ॥
स्वागत, भारत-सर-सरोजके. सूर्य प्रताप-किरणवारे ।
सब जन-चक्षु-चकोर सुधानिधि, स्वागत, चन्द्रिक-यश-धारे ॥
भारत-जन-कुमुदिनि-वन-रञ्जक, स्वागत, शशि शोभनवारे ।
स्वागत, भारत-राज-प्रजाके, महाराज जारज प्यारे ॥

परम्पनासे भारत-जन हैं, राजभक्त होते आये।
भूत समयकी नीति अखिलमें, राजभक्ति दरशा आये॥
भारतेशका स्वागत कर अब, अवसि भक्ति दिखलावेंगे।
काल-भविष्यतमें भी आशा, डिंडिम यही बजावेंगे।
जबसे पितामहीने निजकर, भारत-शासन-भार लिया।
तबसे उनने जो जो उन्नति, अरु भारत-उपकार किया॥
कभी न हम उनको भूलेंगे, नितप्रति मनमें रखते हैं।
बृटिश-राज्यके रसमय फल नित, नूतन नूतन चखते हैं॥
भारत-युद्ध हुआ अवनीपर, अकर्मण्यता फैल गई।
कर्म-व्याप्त भारत-धरणीसे, कर्म-वासना लोप गई॥
पितामही तब पिता कुशलने, कर्मबीजको फिर बोया।
बीजांकुरकी रक्षा करके, भारत-चिर-कलंक धोया॥
अहो भाग्य हैं आज हमारे, हर्ष-विषय है अतिभारी।
परम पुनीतात्मा उनहीके, योग्य तात तुम अधिकारी॥
पूज्य पूर्वज़न-कर्म अनुष्ठित, देखा कठिण बड़ा भारी।
तो भारतमें स्वयम् पधारे, स्वहि पूरण करन विचारी॥
उस बीज़ांकुरको अब झटही, वृक्षरूपमें लावेंगे।
भारतकी डिगती धरणीको, ठीक किनारे थावेंगे॥
भक्ति-प्रेमसे भारत- जनकी, आशिष अधिकी पावेंगे।
चिरंजीव आयुष भोगी हो, नीति दक्ष कहलावेंगे॥
राजनीति-कौशल-दृष्टीमें, दिल्ली भारत- रजधानी।
पड़ा रहा जिसका सिंहासन, खाली अबतक अनजानी॥
करि दरबार उसी दिल्लीमें, प्रेम सहित अपनाते हैं।
राजभक्तिके बदले हमको, प्रजा- प्रेम दिखलाते हैं॥

ऐसे अवसरके समय, क्यों न उत्सव हम करै ।
चिरंजीव हों नृपति कहि, प्रेम- छवि दर्शन करैं ॥
(बालाप्रसाद ।)

दोहा ।

याही मंगलवारको, मंगलदायक मानु ।
प्रगट्यो भारत गगनमें, मंगलरूपी भानु ॥
दिनकर सदा प्रकाश हैं, जासु नृपतिके देश ।
तिन्हैं जो तुलय दिनेश सम, उपमा कछु न विशेष ॥

सोरठा ।

कीन्हें पञ्चमजार्ज, आर्य अवनि पगु धारिके ।
प्रमुदित सकल समाज, धन्य धन्य शुभ आगमन ॥

सवैया छन्द ।

सबको हिय हर्ष बढ़ावन है प्रभु पञ्चम जार्जको भारत आवन ।
भवलोक विलोकं विशोक चहूँदिशि मंगलदायक साज सोहावन ॥
प्रजा सरिता सुखवारि बढ़ी अरु 'श्याम' सराहि लगीं यश गावन ।
यों आज अनन्द अमीं बरसे तरसे लखि जाहि पयोनिधि पावन ॥

दोहा ।

विविध भाँति फूले सुमन, प्रगट जार्ज ऋतुराज ।
रसिक अलिनपहँ करि गमन, पवन देत सुधि आज ॥
राजत राज समाज महँ, सिंहासनपर जार्ज ।
नभ नक्षत्रके मध्यमें, जनु सोहत निशिराज ॥
दिल्ली तिलक स्थान छबि, 'श्याम' सके को गाय ।
इतनाहीसे जानिये, सुरपुर देखि सिहाय ॥

राजदम्पतिको बधाई।

दोहा।

आज दिवस आनन्दको, अतिशय हर्ष अगार।
राजतिलक महराज कर, अति मंगल दातार ॥ १ ॥
अति आनन्द महान हर्षकर, दिवस दियो जगराई।
सिंहासनपै भये आजु थित, नृपनायक इत आई ॥ २ ॥
करि अतिकृपा महान दया कर, भारत मोहिं पधारे।
जित देखहु तित आनन्दकेरे, बाजत आजु नगारे ॥ ३ ॥
करि अतिकृपा महान दिखाय प्रेम बहु, सुत सम हमकहँ जानी।
नृपनायक यहि देश पधारे, प्रेमपात्र अनुमानी ॥ ४ ॥
धन्य धन्य भारतको निश्चय, भाग्य महान अपारा।
लख्यो आजु दर्शन भूपतिके, अति आनन्द दतारा ॥ ५ ॥
राजतिलक उत्सव सुखदानी, आजु हर्षपद भारी।
जित देखहु तित कहत धन्य धनि, भारतके नर नारी ॥ ६ ॥
हे जगदीश्वर मांगत तुमसों, यही जोरि दोउ हाथा।
चिरंजीव महराज रहैं नित, हर्ष सहित नरनाथा ॥ ७ ॥
हम सब प्रजावर्ग आनन्दयुत, निरखैं हर्ष समेता।
महाराजकेरो शुभ शासन, अति शुभदायक नेता ॥ ८ ॥
सदाकाल प्रभुवरको लखिकै, शास्त्र मोद अगारा।
हम सब प्रजा रहैं प्रमुदित चित, भाषैं जयति भुवारा ॥ ९ ॥
राजतिलक उत्सव आनन्दप्रद, होहि सदा सुखदाई।
चिरंजीव रहिये नरनायक, आनन्द सहित सदाई ॥१०॥
धन्य भाग्य दिल्ली नगरीके, जित नरनायक आई।
राजत आजु प्रीति भारतपै, अति महान दरसाई ॥११॥

दोहा

धन्य धन्य दिन धन्य यह, घड़ी मोद दातार ।
राजतिलककर जो भयो, उत्सव यश आगार ॥१२॥

भारतवासी जानत प्रभुकहँ, निश्चय पिता समाना ।
जानत ईश्वर अंश भूपवहँ, सत्य सत्य परमाना ॥१३॥

ईश्वरके दर्शन सम मानत, ईश्वर दर्शन काहीं ।
सदाकाल हिय मांहि प्रेम अति, राखत शंसय नाहीं ॥१४॥

सत्य सत्य हम चाहत निनप्रति, प्रभुवरको कल्याना ।
रहहु सुखी नित हे राजेश्वर, नृपवर भूप प्रधाना ॥१५॥

सदा रहिय मुद सहित नित, रहै न्यायकी खानी ।
प्रजावर्ग हित आनन्ददानी, श्री मेरी महरानी ॥१६॥

रहै भूप परिवार हर्ष युक्त, आधि व्याधि परिहारी ।
नितप्रति रहैं सुखी दम्पति प्रभु, प्रजावर्ग हितकारी ॥१७॥

शत्रुवर्ग जो चहत भूपकर, हित मांहीं अपकारा ।
ते शठ होहिं नाश कांपहिं मन, निरखि प्रभाव अपारा ॥ १८ ॥

सब भारतवासी हर्षित मन, देते आजु बधाई ॥
राजतिलक उत्सव भूपति कर, होय महा मुददाई ॥ १९ ॥

धन्य धन्य जो प्रधान कहैं, देखी फस्यो आनन्दा
दर्शन दियो आप राजेश्वर, हरनहार दुखद्वन्दा ॥ २० ॥

जैसो प्रेम प्रजनपै प्रभुवर, करि करुणा दरशायो ।
तैसो प्रेम आजुलौं है प्रभु, कोऊ नाहिं दिखायो ॥ २१ ॥

आजु मगन मन इतउत विचारत, फूले भारतवासी
करत विविध विधिके शुभ उत्सव, परम मोद परकासी ॥ २२ ॥

जिमि करि कृपा आय भारतमह, राज मुकुट शिर धारयो।
ताही भांति दयानिधि हम कह कबहूं नाहिं बिसरयो ॥ २३ ॥
नौशेरवां सरिस न्यायी व्है, शिवि समान व्है दानी।
हरिश्चन्द्र सम सत्यवान अरु, रन्तिदेव सम ज्ञानी ॥ २४ ॥
धर्मराज सम धर्म विज्ञ है, पालहु प्रजा सुखारी।
प्रजावर्ग आसीस देत यह, प्रमुदित बारहि बारा ॥ २५ ॥
इंग्लिश–राज्यमांहिं हम निश्चय, महामोद प्रभु पावें।
यामहँ कछुक चापलूसी नृप, नहि कृपालु दरसावें ॥ २६ ॥
अवसर पाय विनय हमहूं इक, करत नाथ कर जोरी।
पुरवहु नाथ कीर्ति हो निश्चय, बारहि बार निहोरी ॥ २७ ॥
अधिक कहहिं का आपु दयानिधि, धर्मविज्ञ मति खानी।
ताते दीननकी विनती कहं, लेहिं अल्पम हँ जानी ॥ २८ ॥
कहहु सकल आनन्दित हियते, भारतके नर नारी।
रहिये सदा काल प्रमुदित चित, भूपति श्रेष्ठ सुखारी ॥ २९ ॥

दोहा।

सदाकाल आनन्द लहि, कीजिय राज उदार।
उत्सव शुभ यह होहिं प्रभु, यह आसीस हमार ॥ ३० ॥

(शिवदास पाण्डेय, मस्तूरी।)

सम्राटकी बधाई।

मास दिसम्बर बारहीं, दिल्ली ताज समाज।
श्रीयुत पंचम जार्जको, देत बधाई आज ॥

कवित्त

सुखद सरन सन भूमि विधु ग्रह चन्द, बारह दिसम्बर विशेष मन भाये हैं। वार भूमिसुवन सुमंगल दातार ऋक्ष, पूरवा पुनीत शुभ सबहीं सुहाये हैं॥ पञ्चम श्रीजार्ज महाराज राजतिलक-को, आज साज देहली सुजान छबिछाये हैं। अचल अशेष आयु चाहत परेशते, चहूँघा देशदेशते नरेश जुरि आये हैं ॥ १ ॥

घरघर आनन्दबधावरे बजत पेस, मंगलको साज साजि मोद भीजियतु हैं। चिरजीवैं महाराज पञ्चम श्रीजार्ज आज, विनती परेशते विशेष कीजियतु हैं ॥ बारह दिसम्बरकी महिमा महान यों सुजान सबै प्रेमपूरे नाम लीजियतु हैं। भीर भारतीनकी सुहाई देहलीमें महा,–राजकी अवाईपै बधाई दीजियतु हैं॥ २ ॥

उमँग अथाय बढ़े हरष बलित हिन्द, सलिल सुखद पाय सुखी मनु मीन भो। गेह गेह मंगल मनावत सनेह छके, सफल मनोरथ सुजान सबै दीन भो॥ पंचम श्रीजार्जजू पधारे आज भारतमें, द्युटिनको प्रबल प्रकाश प्रेम पीन भो। बखत बलन्द भरे बारह दिसम्बरको, महाराज देहलीमें तखतनसीन भो ॥ ३ ॥

सवैया ।

आप हुते जब वेल्सको प्रिन्स, सनेह तबेही महासरसायो।
उन्निससौ सन पांचमें हिन्द–निवासिनको निज रूप दिखायो ॥
आज अनन्दको सीव नहीं सबहीको सुजान भयो मनभायो।
राजको ताज जो रावरे सीसपै भारत आपने हाथ सजायो ॥ ४ ॥

स्वर्गीय श्रीविकटोरियालौ प्रजापालन प्रेमते कीबो करो।। न्यायके काजमें त्यों पितुलौं मुदते कलकीरति लीबो करो॥ सानँद आशिष देत सुजान सुशासनपै चित दीबो करो। श्रीयुत पञ्चम जारजजू

जगतीतलमें चिरजीवो करो ॥ ५ ॥

(श्रीकवि सुजान,-हल्दी)

॥ कुण्डलिया ॥

जारज केसरहिंद नृप, शाहनशा इङ्गलेंड । राजसिंहासन ब्राजिया, प्रजा भई आनन्द ॥ प्रजा भई आनन्द खुशी घर घरमें होई । रागरङ्ग उछरङ्ग सजै श्रृङ्गारस कोई ॥ महता कहै उमेद चरण जीवो अखिलेश्वर । तेज प्रताप प्रचंड रहो मालक हिंदकेसर ॥ १ ॥

शुकरगुजारी करत सब, घरघर मङ्गलचार । शाहनशाह पधारिया, दिल्लीरे दरबार ॥ दिल्लीरे दरबार हिन्दभूपति सब आया तेरै तेज प्रताप छाप सू हुकम उठाया ॥ महता कहै उमेद आपकी कारगुजारी । मानत हैं अहसान करत सब शुकरगुजारी २

कवित्त।

सम्राट जार्ज पञ्चम पधारे देश हिन्दमें हैं, साथमें हमारी मात मेरी महारानी हैं । दीन देश भारतके आरत विनाश हुए, हुई धरा परम पवित्र राजधानी है ॥ स्वागतको शोर चहुँ ओर रहो छायो अति, छाई ध्वनि जै जयकी गगन गुँजानी है। बहुत दिनौंसे शाह दर्शनकी प्यासी प्रजा, पायशुभ दर्श आज फूली न समाती है ॥ १ ॥

(पन्नालाल ।)

तिलकोत्सव ।

(तिलकोत्सवकी बधाई—छप्पय)

पति पग परसन हेतु पुलकि रहि भारत भूमी ।
पितु दरशन कह पुत्र प्रजा चख चञ्चल घूमी ॥

पुनि अश्वासन वचन सुनन सुश्रोनन झूमी ।
रसना गुन गन गान निमित लोलुप इव दूमी ॥
सुयश सुगंधप मधुप, कवि वृन्द विन्दु गुंजारहीं।
जयति पञ्चम जार्ज नृप, सब भारतीय जुहारहीं
(हरि गुलाम ठाकुर—गोरखपुर)

सम्राटको बधाई—प्रभाती ।

जयजय प्रभु पञ्च जार्ज, भारत हितकारी ॥ टेक ॥
शीश मुकुट धरत आज, भारतके राज काज ॥
युग युग प्रभु करहुँ राज, कीर्त्ति हो तुम्हारी ॥
जय जय प्रभु पञ्च जार्ज, भारत हितकारी ॥ १ ॥
महिमा क्या हुई अपार, जगह जगह रेल तार ॥
विद्यालयकी बहार, कीन्ही जग सारी ॥
जयजय प्रभु पञ्च जार्ज, भारत हितकारी ॥ २ ॥
दीनबन्धु हो कृपाल, भारतके रक्षपाल ।
चोरोंका दुख विशाल, देवें प्रभु टारी ॥
जयजय प्रभु पञ्चजार्ज, भारत हितकारी ।
चिरंजीव होवे प्रान, मांगे ईश्वरसे दान ॥
शङ्कर यह करत गान, अल्प बुद्धिकारी ॥
जयजय प्रभु पञ्चजार्ज, भारत हितकारी ॥ ३ ॥

विनयपत्र छन्द ।

पवन मन्द सुगन्ध शीतल बहति निर्मल पावनी ।
को जानि कहि आनन्द यमुना कूल दिल्ली सुहावनी ॥ १ ॥

दर्बार बिलोकि विचित्र रचना रुचिरता मुनि मन हरे ।
निज पान श्री हार्डिञ्ज साहब आन सिंहासन धरे ॥ २ ॥
अब कुशल पद पंकज बिलोकहु जार्ज पञ्चम सेव्यते ।
सुखधाम पूरण काम पञ्चम जार्ज नाम नाममिते ॥ ३ ॥
दर्बार पञ्चम जार्ज आये निरखि छबि उर लाइये ।
गुणधाम हैं श्रीकुइन मेरी विमल यश बतलाइये ॥ ४ ॥
सम्राट जार्ज सुजान पञ्चम शील रूप उजागरे ।
श्री एडवर्ड दयालु सप्तमसे अधिक गुण आगरे ॥ ५ ॥
केहि भांति वरणौं नाथ गुण श्रीजार्ज हैं त्रिभुवन धनी ।
अति हर्ष राज समाज चहुँदिश दुन्दुभी बाजहिं घनी ॥ ६ ॥
निज गिरा पावन करण कारण जार्ज यश मुरली कह्यो ।
श्री जार्ज पञ्चमके चरित संसारसागरमें छयो ॥ ७ ॥
दर्बार देहली उछाह मङ्गल सुनहिं सादर गावहीं ।
सम्राट जार्ज प्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं ॥ ८ ॥
करुणा निधान कृपाल रघुवर आज यह बर मागहूँ ।
चिरंजीव हों श्री जार्ज कैसर कमल पद अनुरागहूँ ॥ ९ ॥

(मुरलीधर शर्म्मा—बदायूं ।)

श्री जार्ज पञ्चक ।

धन्य ग्रेटब्रिटन हनोवरको बंश धन्य,
धन्य श्री विजैनी विश्वकीरति बिलासी हैं
धन्य शांतिकारी सुरलोक अधिकारी देव,
एडवर्ड सप्तम महान तेजरासी हैं ॥

तिनके सपूत पूत भारत पुनीत कीन्हों,
छई चहुँओर मानो पुण्य चंद्रिका सी हैं।
राजे महाराजे कै विलासी कै उदासी सबै,
धन्य अति धन्य आज भारतके बासी हैं ॥ १ ॥

पूरि रह्यो भूमि उतसाह महीमण्डलमें,
आनँद बधाये देवलोकहू में बाजे हैं,
दिल्लीके तखतको सनाह आज होत जानि,
मंगलप्रमोदसाज भारतने साजे हैं ॥
विस्तृत महान राज अस्त नाहिं होत भान,
जाके राना राजे अनगनित नेवाजे हैं।
भूप सिरताज महाराज राजराज आज,
जार्ज देव पञ्चम सिंहासनपै राजे हैं ॥ २ ॥

आये आप भारत सुहावने सिंहासनकी,
सोभाको बढ़ावने स्वप्रीति दिखरावने
नीच द्वेष कीच निज तेजसों सुखावने,
विरागआगि दयादृष्टि वृष्टिसों बुझावने ॥
कहांलौं बखाने भूप प्रीति औ प्रतीति गति,
अविचल भक्ति जनमन सरसावने।
अवधि करी है प्रजावत्सल महत्त्वकेरी,
जार्ज देव पञ्चम महान अनुभावने ॥ ३ ॥

राजनके राज महाराजनके महाराज,
प्रतिनिधि अंश हैं विशेष भगवान के।
अचल निवास कीन्हे प्रीति परकासी श्रिय,
जाके गुण देखि धारा नीरमें कृपानके ॥

सारथ बनायो भूपनाथ निज देवपद,
देवके समान प्रतिपालक जहानके ।
शीलके समुद्र महासागर दयालुताके,
गुणके निधान महावीर दान मानके ॥ ४ ॥
भारतके पुण्यको दिनेस भासमान भयो,
तम ज्यों कलेस दूरि भागो देश देसको ।
इंग्लैंड समान निज मानको प्रमान पाय,
गौरव गुमान जम्यो हियेमें हमेसको ॥
तीस कोटि मुखन असीस देत हिंद आज,
'राज रहे अचल' मनावत महेसको ।
बनिकै नकीब भूप बोलत बिरद,
"दरे दौलत दराज जार्ज पञ्चम नरेसको" ॥ ५ ॥

(सीताराम)

दोहा

श्रीमान् सम ईश्वरी, करहु अचल महि- राज ॥
झम्मनलाल पुकारि कहि, सदा सहारौ काज ॥

सवैया ।

श्रीमान् आगमन आप कियो, जबसे हमारो हर्षात हियो ।
अब दर्शन देहु महाहितकारी, जो भारत आप प्रवेश कियो ॥
श्रीमान् समान नहीं जगमें, जिन बहुतक दान आजान दियो ॥
धनि धन्य महारानी मेरी, जिन जगमें यश कर आप लियो ॥

दोहा।

क्रीट मुकट मस्तक धरा, लेत ईशका नाम।
झम्मन सब संसारमें, स्वामी ही से काम॥

कवित्त।

श्रीमान्को नाम सुनो जबसे, तबसे चित अत्य प्रसन्न भयो है।
अब आश लगी स्वामिहि देखनकी, मम दर्शनको हर्षात हियो है॥
अब क्रोध नहीं तनमें कुछ भी, अपु भारतको उपकार कियो है।
यों झम्मनलाल पुकारि कहैं, नेकीको वृक्ष सदाही हर्यो है॥

"येहु मन भायो है।"

दिल्ली मे दरबार राज सुन, भारत मङ्गल छायो है।
बाल युवा अरु वृद्धवृन्द उर, आगम जार्ज सुहायो है॥
देश देशके भूपवृन्द मिल, स्वागत छिप हरषायो है।
छायो सुखद विशाल राज, दरबार येहु मन भायो है॥१॥
भारतवासी दीन लखत, अनमोल समय हम पायो है।
शिक्षा ध्यान आत्मसुख पूरण, अहो! समय प्रभु लायो है॥
तिमिर शूल अज्ञान विरण, अहा! येहु प्रगटायो है।
नीति न्याय सुखदायक पालन, भलो येहु मन भायो है॥२॥
विविध भांतिसें सजें समाजें, प्रेम वारि वरसायो है।
औसर छविता काज साज मिल, नेह अवनिमें छायो है॥
अनुपम मोद छयो भारतमें, सुन संदेश शुभ पायो है।
क्या हिन्दू क्या जैनी मुसलिम, आज येहु मन भायो है॥३॥
स्वाति आश जिमि रटै पपीहा, आगम ऐसो छायो है।
ठौर ठौर गृह ग्राम ग्रामहूं, मङ्गल गीत उछायो है॥

विभुसे आश पुकार यही है, करो सुफल शुभ पायो है।
चिरजीवहिं महाराजा रानी, नन्द येहु मन भायो है ॥४॥

सम्राटकी महिमा।

कवित्त।

धन्य महाराज धिराज पञ्चम जार्ज स्वामी, तुम्हरो यश प्रबल प्रताप जग छायो है। पश्चिमसे पूरब अरु पूरबसे पश्चिम लों, भारी साम्राज्य मही चहूँ ओर पायो है॥ बृटिश सम्राज्यकी महिमा करूं क्या गान, सूर्य अस्त होवे नहिं तेरो यश गायो है। लंदन राजधानीमें राज्यअभिषेक करा, जूनी राजधानी हिन्द दिल्लीबिच आयो है॥ १॥

उन्नीससौ ग्यारह सन्-मास दिसम्बरहिं बीच, तिथी सात गुरुवार दिल्लीमें पधारे हैं। शुभ दिन शुभ घड़ी माहिं बारवीं दिसम्बरको, महारानी "मेरी" सह तख्त पग धारे हैं॥ लखिके आसीन तख्त ऊपर सब हर्षित भये, "नेशनल ऐन्थम" के राग शुभ उच्चारे हैं। किलेसे सलामी तोप एकसौ एकहू की, शूर-वीर गोलंदाज हर्षसे उतारे हैं॥ २॥

लखि तव दिव्यरूप हर्षित हो दे अशीश ईशसे मनावें कर जोड़ सकल प्रजागण। जिरंजीव रहैं नाथ भोगें निष्कंट राज, चक्रवर्त्ती होवें अरु पावें ये पुष्कलधन॥ जिसके रामराजमें बाघ औ बकरी सभी एक घाट पानी पियें बैर तजैं अपने मन। उनके प्रतापपर तन मन धन वारि डारैं, निज निज सब धरम पालैं रहैं सदा निर्भय मन॥ ३॥

भारत सम्राट तेरी कीर्ति क्या बखानूं मैं, तेरे इहि राज्यमें प्रजहिं सुःख भारी है। देशाटन करन हेतु वाणिजकी बृद्धि हेतु, सड़कें बनवाई नित रेल तार जारी हैं ॥ बने शफ़ाखाने डाकखाने सब ठौर ठौर. रोगको निबारैं अरु समाचार जारी हैं । खोलीं पाठशाला बड़ी बड़ी, विद्या पढावैं चातुर होवें नर नारी हैं॥ ४ ॥

चौकी अरु थाने ग्राम ग्राम बैठारदीन्हें, रक्खी है पुलिस रक्षा करत नित हमारी है। खोले न्याया- लय जहं बैठकर न्यायाधीश, करत हैं न्याय मुन्सिफ जज्ज न्याय कारी है ॥ औरहू अनेक यत्न करत सब प्रजा हेतु काममें लावें जेते साधन शुखकारी है। राज अधिकारी जिनकी बुद्धि बलिहारी है, राज्यको संभालैं उन चातुरता न्यारी है ॥ ५ ॥

कलियुगमें जेते बादशाहे हुए भारतमें, काहूके समय येतो सुक्ख नहीं पायो है। काहूके समय लूट काहूके समय कूट, काहूके समय धूम रिपूगण मचायो है ॥ तेरेही समय एक चैन और शान्तीसे, पृथकपृथक ज्ञाती समय हिलमिल वितायो है। प्रभुसे मनावै "राम" यही राज्य प्रलय तलक, कायम रहै हिन्दमांहीं प्रजा मन भायो है ॥ ६ ॥

(खुशालीराम, बडवानी)

बधाई है ।

सुमन सुवासनपै, खगन कलापनपै, वेलिन वितानपै, सुखमा सुहाई है। कानन, दिशाननपै, रवि शशि आननपै, सुजल तड़ाग- नपै, शोभा सरसाई है। शुक्र नरनारिनपै, बालवृद्ध ज्वाननपै, मूर्ख और ज्ञानिनपै, हर्ष अधिकाई है। सुकवि समाजनपै, देशी महारानपै, भारतसुतालं हेत भूमरी बधाई है ॥ १ ॥

स्वागत समाज सुखसाज राज काज सजे महाराज जारज सम्राजकी निकाई है। छकित छपाकर छपानो छवि देखि छिति छीन लीन्ही छनिक सुछत्र छवि छाई है। मेरी महारानी भारतेश सँग आई हैं, मानो युगजोरी अमरैयनस जाई है। विधिने बनाई तिहुँ लोकन निकाई सोई; भारतमैं आई सुखदाई बधाई है॥ २॥

(वैद्य रामप्रसाद शुक्ल।)

सम्राटकी जय।

लंदन ये नाम नाम नामनम नाम एक, देश देश देशन विदेशनमें छायो है। दीप दीपनमें दीपचहुँ वारि हैं घिराव, बारिध अगम्य लांघ वैभव बढ़ायो है॥ इङ्गलिशसी चेनल डोवर जिब्राटर, भूमध्य स्वेजपार ध्वजाको उड़ायो है। छायो है प्रताप तेज अहो नन्द आज ऐसो, जार्ज मेरी राज राज भारत उछायो है॥

बृटिश सम्राट राज राजनमें राज एक, शिरताजनमें श्रेष्ठ ऐसो हिन्दमें सुहायो है। छाई छवि छटाज्योति देशनेंहू देश देश, तेज पुञ्ज मंजुळ प्रकासरवि छायो है। रटत पपीहा भांति औसर सनूप पाय, पेखो दरबार राज भारत जु पायो है। चिरजीवी होयँ जग जार्ज महाराजा रानी, मङ्गल उमङ्ग पूर्ण अवनिमें गायोहै॥

इङ्गलेंडके बसैया दुःख भारत मिटैया मोदप्रकटैया तुम हिन्दीके रखैया हो। बंग भङ्गके जुड़ैया रजधानीके बनैया, भूपनके भूप शिरताजके धरैया हो। ज्ञानदानके दिवैया दरबारके करैया, दर्शके दिखैया शूळ द्वन्दन नसैया हो। अशान्तिता बुझैया पत्र घोषणा पठैया, ऐसे राजदम्पति करुणाके करैया हो॥

(परमानन्द जैन हीरापुर सागर)

(शार्दूल विक्रीडित)

राजा पञ्चमजार्ज वीर विजयी, आजानुबाहू बली । धर्मात्मा गुणखानि शुद्ध हृदयी, सत्कीर्ति पाई भली ॥ विद्यासिंधु प्रवीण नीति विनयी, साधू महा निश्छली । फूली देखि नृपास्य चन्द्र उदयी श्रैणी फफूल्लाकली ॥ १ ॥

सवैया

भूप अशंख्य प्रमोद भरे पुर लन्दनमें छबि छाजति हैं । तोप भुशुण्डि निनाद सुने अरिसेन सशङ्कित भाजति हैं ॥ पावक खेल छुटैंओर मनोहर बाजन बाजति हैं । भानु शशी सम किङ्ग प्रताप सुकीर्त्ति अहर्निश राजति हैं ॥ २ ॥

चन्द्र समान चमत्कृत कान्ति लसी महराज वराननमें । सागर सा उमड़ा लखिके सुख मानस राजन रानन में ॥ भानुमयी चपला-द्युति छाय रही सब ओर मकाननमें । लन्दन भूप महा अभिषेक जयध्वनि है सब थाननमें ॥ ३ ॥

(राजा फतहसिंह—पुंवाया शाहजहांपुर)

राजदम्पातिको बधाई ।

श्रीहरिं परमानन्द मुपदेष्टारमीश्वरम् ।
व्यापकं सर्वलोकानां कारणंतन्नमाम्यम् ॥

दोहा ।

प्रजावर्ग मानस बिमल, आनँद भयो अथाह ॥
सुदिन राज अभिषेक लखि, भारत शाहनशाह ॥

छन्द।

जिसकी प्रतीक्षा कर रही भारतप्रजा बहुकालसे। आज सो शुभदिन उपस्थित है अनोखे चालसे॥ आनन्द मङ्गल घर सुभग तन मोद युत विचरत सही। प्रति सदन चित्ताकर्ष अलकापुर मनो सोभित मही॥

दोहा।

तोप ध्वनी उत्साह युत, गगन सुचुम्बन लेत।
सैन दुर्ग सन्तापकी, नदिपति बोरन हेत॥

छन्द।

चहुँ ओर छुटती गगनभेदी तोप सौ सौ वार हैं। प्रति आन आनँदके समूह को करें उद्गार हैं॥ वायु बिच अगनित पताका उड़ रहीं शोभा मई। हरित पथकन बिमल मानस रंग रंगत निज नई॥

दोहा

सुन्दरता युत राजहीं, ऊंचे सब सुख रास।
दिव दैवनके शोभज्यों, मानो विजन विलास॥

छन्द।

बहुभांतिसे उत्सव मनावत आज नर अरु नारि हैं। दे वस्त्र भूषण असन दीनन याचकन निज द्वार हैं॥ विचरत प्रफुल्लित मनोमय नहिं अङ्ग अङ्ग समावहीं। श्रीराज राज महेन्द्र गुणगण जार्ज कीर्त्ति सुगावहीं॥

दोहा।

सारे भारतवर्षमे, निज पौरुष अनुकूल।
खुशी मनावत है प्रजा, मनो वृत्ति निज भूल॥

कवित्त।

छात्रनके छत्र छत्र धारणके छत्रपति, छाजत छटान क्षिति क्षेमके छवैया हो ॥ कहै कविराज सो प्रभावके प्रभाकरसे, दया दरियाव और धर्मके रखैया हो ॥ दीननके प्रतिपाल मान मर्य्यादा सिंधु, कीर्ति अकलंक कुल चन्दके थमैया हो ॥ पुहमीके राज राज राजनके महाराज, जीवो चिरकाल सर्व सम्पति रमैया हो

छन्द।

उपमा यथारथ भी न जिनकी श्रेष्ठ कवियोंको मिली। निर्दोष निर्मल कीर्तिरूपी कौमुदी जिनकी खिली॥ मानो दिवाकर तुल्य जिनका तेज भेष हमेश है। सो आज श्रीमहाराजके सर हिन्दको अभिशेष है॥

दोहा।

धर्म धीरता विनयता, साव्य शील आचार
जे ते शुभ गुण विश्वमें, सबके श्रीभण्डार॥

सवैया।

तेजनिधाननमें रवि ज्यों छविवंतनमें विधु ज्यों छवि छाजे। शैलनमें ज्यों सुमेरु लसे वर वृक्षनमें कलपद्रुम साजे॥ दैवनमें कविराज कहें मघवा ज्यों शोभित सिद्ध समाजे। धरनीनके त्यो धरनी पतिमे धरनीधर पञ्चम जार्ज सुभ्राजे॥

छन्द।

जगमें असको नरनाथ अहें, प्रिय प्राणहुसे नर नारि चहें।
प्रजाहित साधनमें मन हैं, दिन रैन बसी जियमें ध्वनि है॥
नर तुच्छ कहा सुरको डर है, विश्राम न लेत दिवाकर है॥

दोहा ।

श्रीकीरति वारिधि सरिस, को कवि सकै बखान ।
कोटि यत्न नहिं बनि सकै, कलश उदधि घट जान ॥

कवित्त ।

जौवलों या महिमें शशि सूर्यको प्रकाश होय, जौलों ईश शीशपै प्रवाह गङ्गपानीको । जौलों नभमण्डलमें थान रहे तारणको, जौलों जगबीच है विचार वर बानीको ॥ जौलों फण शेशपै सुधरनी विराजत है जौलों है जहानमें निशान कर्ण दानीको, तौलों चिरजीवे राज सकुटुम्ब अवनीपै लन्दननरेश सुप्रख्यात राजधानीको ॥

(राजधरलाल)

॥ पद ॥

जागे भाग दीन भारतके, आये श्रीपति अति सुखदाई । उघरे दृग अब सुधरे कारज, जनक जननिके दरशन पाई ॥ जिनकी जाश भरी नीतीकी निरखि निरखि अरि जात सुखाई । ते नरेन्द्र निज प्रजहि लखनहित, दिहली तखत विराजे आई ॥

आशीर्वाद ।

जौलौं इन्दु भानु आसमान बीच शोभनाय, शेषफणा शीश मणि धरा धरा भ्राजे है। जौलों पद्मनाभके विलास रहे रमा संग, रती धाय सेजको अनंगहेत साजि है॥ जौलों शम्भु अर्द्ध

अङ्ग अम्बिका विभासमान, नारदादि गान देवलोक मध्य गाजि है। तौलों भारतेश महाराजको अखण्ड राज, वृद्धि पा युगेन्द्र शुद्ध नीतिसों विराजि है ॥

(मुरलीधर युगेन्द्र, शर्म्मा)

॥ छप्पय ॥

जारज पञ्चम शाह, तेजधारी तपभारी ।
जारज पञ्चम शाह, नीति सब जग सुखकारी ॥
जारज पञ्चम शाह, नामवर कीनों नीको ।
जारज पञ्चम शाह, भूप सबही शिर टीको ॥
जारज पञ्चम शाह यह, प्रजापाल परदुख हरो ।
महता कहै उमेदसिंह, क्रोड़ जुगां राजस करो ॥

(महता उमेदसिंह, अखिलेश्वर)

दोहा ।

ब्रिटिश महाप्रभु आगये, भारतके शिरताज ।
जुगजुग जीवहु हे प्रभु, करहु अचल तुम राज ॥ १ ॥
द्वादश तारिखके दिवस, आनंदको नहिं पार ।
नगर नगर घरघरनमें, मङ्गल होत अपार ॥ २ ॥
ताज सहित दरबारमें, शोभित भानु समान ।
जार्ज महाप्रभु करहु नित, भारतको कल्यान ॥ ३ ॥
रामराज्य सम राज्य है, कहंतक करहुं बखान
अजर अमर कीरति रहै, राजाकी भगवान ॥ ४ ॥

वर्षा सम विद्या प्रभू, दिन दिन करें प्रचार ।
तासों भारतकी प्रजा, उन्नति लहैं अपार ॥ ५ ॥
शिल्पकला कौशल्यमें, उन्नति नित्य नवीन ।
रहे लाभ व्यापारमें, पावें मान प्रवीन ॥ ६ ॥
धन्य धन्य इङ्गलेण्ड रवि, अधिक कियो उपकार ।
जनम जनम नहिं पासकें, यशको पारावार ॥ ७ ॥
भारतके सब भूपती, प्रजा सहित हर बार ।
जय बोलो श्रीजार्जकी, बाढ़े प्रेम अपार ॥ ८ ॥

(शंकरराव शर्म्मा)

राजातिलकोत्सव ।

अमित अनंदित भये हैं लोग देखिवेको,
सुनि२ भारतमें आपकी अवाई है ।
ज्यों२ नगचात महाराजको 'मदीना'
त्यों, अधिक अधिकात सुख संजम सवाई है
उमडि उछाहके प्रवाह रह्यो भारतमें,
देखतै बनत चहुँओरकी सजाई है ।
सीताराम सन्तत मनावैं सब देवीदेव,
दरदर देत मिलि आनँद बधाई है ॥ १ ॥
केतेलोग आशके समुद्रमें हिलोरैं लेत,
केतेलोग बम्बईके बन्दरलों धायगो ।
केतेलोग दिल्लीदरबारकी प्रतीक्षा करैं,
केते हाट बाटमें मनोरथ पुरायगो ।

धन्य भई भारतकी भूमि हूँ अभागी अब,
बृटिशनरेशको जहांपै परि पायगो
सीताराम बहुत दिनोंपै आज पूरीभई,
महाराज कुशल समेत आज आयगो ॥ २ ॥
तेज रहै प्रबल प्रचण्ड मारतण्ड सम,
साहबी सुरेशते हमेशही बढ़ी रहै ।
खचित खजानें रहैं खूब मनमाने भरे,
प्रीति नीतिरीतिपर ऐसिये चढ़ीरहै ॥
उमँग उछाहको प्रवाह नित बाढ़ीरहै,
बैरिन बिनाशहित पूरित गढ़ीरहै ।
सीताराम संतत मनावैं जार्ज पञ्चमकी,
कीरती अखंड महीमंडल मढ़ीरहै ॥ ३ ॥
जगिरहै जगमें उजागर दयाकी दृष्टि,
शत्रुपै शनीचरसी भृकुटी तनीरहै ।
सजग सचेतबुद्धि बिमल समेत सदा,
बृटिशप्रजाके हितहेतही ठनी रहै ।
प्रबल प्रताप मारतंडलों प्रचंड रहै,
अमित अखंड गुण गरिमा गनी रहै ।
उमर दराज महाराज जार्ज पञ्चमकी,
युग२ साहबी सलामत बनी रहै ॥ ४ ॥
युग२ राज जार्ज पंचम तिहारो रहै,
अरुज बिहारो सदा सुमति लसी रहै ।
बांके बीर सुभट पिनाके जय ताके रहै,
सन्मुख समर सैन शत्रन त्रसी रहै ।

भजन जहानमध्य महिमा महान रहै,
तेरी बुद्धि विभव विभूषित वसी रहै।
सीताराम दम्पति तिहारो धन्य वाद धुनी,
व्योमबीच महिते पताललौं धसीरहै ॥ ५ ॥

सीताराम.

सनातन धर्मपताका, मुरादाबाद

भारतीय अभिषेक

फूलि रहे गेंदा और गुलाब बाग बागन में,
पुन्नग सुलोध पुष्प मन को लुभा रहे।
ठौर २ लुब्ध भौंर झुँड मंजु गुंज रहे,
मानों मदमत्त भये मोद गीत गा रहे ॥
दीखै हरियाली चहूं ओर जहां जाय दृष्टि,
खेतन में गेहूं और जौ लहलहा रहे।
कानन कुरंग चारु चौकड़ी लगाय रहे,
पुलकी पखेरू पेड़ २ चहचहा रहे ॥ १ ॥
पंथ माहिं पंकरेणु दीखै लवलेश नाहिं,
कांकरी कठोर कुश कंटकविला रहे।
भूमि हू करति पहुनाई काहू पाहुने की,
सिंचित सुमन मय मारग जता रहे ॥
शीतल सुगंध युत मारुत वहत मंद,
सरिता सरन वारि विमल दिखारहे।
भानु भगवान् को हू आतप सतावत ना,
किये नीचे शीस कैसे वेग २ जा रहे ॥ २ ॥

प्राकृतिक दृश्य हू बने हैं ये मनोहर जो,
जानत हो कारण विशेष क्या जता रहे।
ईश अंशावतार जारज महाराज फिफ्थ,
मेरी महारानी सह भारत में आरहे॥
जिनके विशाल राज अस्त रवि होत नाहिं,
सुयश प्रकाश ते हिमाकर छिपा रहे।
अहो भाग सोई समराट आज दिल्ली माहिं,
प्रजा रुचि पाय तिलकोत्सव करा रहे॥ ३॥

जिनके प्रताप ते स्वतंत्र निज पंथ चले,
भारत भविष्य भले फेरि दृष्टि आ रहे।
साम दाम दंड भेद नीति न्याय अपने सो,
शेर बकरी को एक घाट जल प्या रहे॥
सतयुग में मानधाता त्रेता में रामचन्द्र,
द्वापर युधिष्ठिर सुकीरति सिवा रहे।
ग्रहमें दिनेश ज्यों सुरेश सब देवन में,
कलि के महीपन त्यों आपकी प्रभा रहे॥ ४॥

याही ते हाट बाट दीखत अनेक ठाट,
मंदिरन सुन्दर पताका फहरा रहे।
काहू के भवन झाड़ फ़ानुस टगे हैं आज,
चूना पुतवाय कोई चित्र चिपटा रहे॥
बांधत वँदनवार स्वस्तिवाक्य द्वार कोई,
दिव्य दीपजोति दीपमालिका दिपा रहे।
मानें खल खंड करि ध्वंस गढ़ लंक करि,
जानकी समेत औध रामचन्द्र आ रहे॥ ५॥

गाँव गाँव ठाँव ठाँव दीखत है उत्सव ही,
गान नृत्य होय कहीं धन ही लुटा रहे ।
गामन के ग्वाल संग गोरुन के जंगल में,
मटकि मटकि हर्षभाव जतला रहे ॥
गावत हैं गीत नारि शंखध्वनि मंदिर में,
पंडितसमूह स्वस्तिवाचन करा रहे ।
जोरि के किसान पट्टीदारन कों कहूँ कहूँ,
देखो पटवारी राजसूचना सुना रहे ॥ ६ ॥
नग्र प्रति भूमिपति देव से एकत्र भये,
बैठे जिलाधीश करि इन्द्र ज्यों सभा रहे ।
बालवृन्द के मुखारविन्द है अमन्द हर्ष,
शाहीध्वज रूप बने जैधुनि लगा रहे ॥
अग्निक्रीड छूटत वसंत सो दिखात व्योम,
कविताकलाप कहुँ कवि हैं सुना रहे ।
बाजत है बैंड कहूँ तोप की दनादन है,
कोइ कहुँ तमगा मिठाई हैं बँटा रहे ॥ ७ ॥
रोगी और अपाहज अनाथ भे अनंद आज,
वन्दीगण काराग्रह दुख को भुला रहे ।
आश निज पूरी भई जानिके प्रजा के लोग,
हाथयुग ऊँचे करि दै यों दुआ रहे ॥
जौ लों नभमंडल में तारे दुति दामिन में,
जौ लों शेष नाग शीस धारण धरा रहे ।
जौ लों सिन्धु गंगा और जमुना में नीर बहे,
तौ लों राज जारज कों अटल बना रहे ॥ ८ ॥

(पं. प्राणसुख अध्यापक तहशीली स्कूल अलीगढ़)

शुभचिंतक प्रयाग

भारतेश्वर स्तुति ।

दोहा—प्रभा भानु स्वाहा अनल, रमा समेत रमेस ।
रोहिणि विधु रति मार मनु, सोभित सची सुरेस ॥
सिंहासन राजत भये, पञ्चम जार्ज नरेश ।
मेरी सँग सोभा बरनि, सक न सारदा सेस ॥

चौ०—तव स्वस्तयन भूप तिन कीना । आनंद रोम रोम महँ भीना ॥
पद पंकज महं सीस नवाये । नयन सफल अपने करि पाये ॥

त्रिभङ्गी—बाजी सहनाई अति सुखदाई जन मन भाई छबि छाई ।
अनँद परकासै सब दुख नासै धुनि दस आसै महँ धाई ॥
नक्कारे बज्जैं जनु घन गज्जैं तड़िता लज्जैं सुनत तहां ।
अरिवर उर फारै गर्वहि गारै सुख संचारै करत जहां ॥

दोहा—इहि विधि आनँद निरखि कै, सकल भूप समुदाय ।
भारतेश अस्तुति करत, बाजे विविध बजाय ॥

सोरठा—मण्डलीक सरदार, सब मिलि कै अस्तुति करत ।
भारतपति महाराज, सुनत मुदित मन चित दिये ॥

छप्पै—जयति धरम धुरि धरन धरम पालन पुनीत पन ।
जयति पर्व शर्वरी नाथ मुख गर्व बिभञ्जन ॥
जय भारतपति सील सिन्धु सुन्दर सुसील मन ।
जय भारत के ईश दुःख दारिद्र बिहण्डन ॥
जय जयति जार्ज पञ्चम नृपति, सरनागत पालन करन ।
जय जयति २ जय भूप वर, अरु " मेरी " चिन्ता हरन ॥

कवित्त

विधि तें मनावों जोरि हाथरु नवाय
सीस साहवी धरापे सदा रावरी बनी रहै
राका रजनी समान नित्त प्रति जागै जोति
परम सुदिव्य चारु दिव्यता सनी रहै ॥
यश की पताका ताकी सुन्दर सलाका सुचि
अवनि अकास बीच तार सी तनी रहै ।
जांचत हौं कृपा की निकाई बानि रावरे
की सोई गुनताई यहि देश पै बनी रहै ॥ १ ॥
जैसो धर्म्म राख्यो हरिचन्द्र नृप एक
भयो पृथुल दिलीप आदि कितने गिनाइये ।
शिवि औ दधीचि बलि परम प्रमाणिक
जे तेऊ भये आगे नहिं वैसो अब पाइये ।
द्वापर में कर्न एक धर्म्म को निबाह्यो जौन
ताहू को कथा में कहूं नाम सुन पाइये ॥
कलि में महीप मान जैसो भयो सुनी कान
सोई गुन आज एक आप ही में पाइये ॥ २ ॥

(बसन्तराम)

राज्याभिषेक ।

मनिगन मंडित बिराजैं सीस मोरपच्छ,
करुना की कोर सदा रावरी कियो करै ।
अलक झलक झलकाय झुकि झूमि गायें,

बनशी बजाय चाय चौगुनी जियो करै ॥
मोहन महान मुदमंगल की दीठ तेरी,
राजन समाज माहि मिलन दियो करै ।
यशुदा के नन्दन विदारि दुख दारिद,
सुपरजा प्रतिपालन को सुमति हियो करै ॥ १ ॥
एही नृप जार्ज महाराजा देश देशन में,
अतुल प्रताप तेरो होवे अखंड राज ।
गावैं गंधरव गुन गान करि चहू ओर,
पावें त्यों मान गुनी जन हूं तेरी समाज ॥
दिशविदिशान माहिं यश को प्रकाश करैं,
सुकवि सुजान हू सराहैं जौन सिरताज ।
भारत बसुंधरा को नेह भरपूर ऐसो,
हिय को करै दराज तेरो राज बृजराज ॥ २ ॥
लांघि सात सिंधु बीच जल के जहाज चढ़ि,
व्यापन चहत विधु मंडल अवासा है ।
घूमि घेर घरन दिगंतन में अन्त लियो,
बन उपबन गिर कन्दर के पासा है ॥
बानी बुधि मन में बिराजै रोम रोमन में,
हरषि हजार सेस फन पै प्रकासा है ।
एहो नृप जार्ज महाराज धनि धन्य आज,
करत तिहारी यश अजब तमासा है ॥ ३ ॥ (नम्र)

साधु बड़ोदा

सिंहासना रुढ़का महोत्सव ।

हे सज्जनो यह आज है उत्तम दिवस इस देशका ।

सब इस लिये कर लीजिये धन्यवाद उस सर्वेशका ॥
क्योंकि जो है शुभ इन्द्रप्रस्थ व हिन्दका वर राजस्थान ।
कहता है जग दिल्ली जिसे जिसमें हुए हैं नृप प्रधान ॥
नृपये युधिष्ठिर पूर्वमें चक्रवर्ति उत्तम शान्तवान् ।
कई हो गये नैतिज्ञ फिर भूपेन्द्र हिन्दू बुद्धिमान ॥
वह था जमाना अन्तका जबये पृथ्वी राजा चव्हान् ।
बस होगई रजनी हमारी गड़ा यवनोंका निशान् ॥
फिरहो गये औरंगजेब औअक्बरादिक बादशाह ।
संसारमें जिनके भी शासन की हुईथी खूब वाह ॥
शासन हटा कुछ अल्पही समयोंमें इनका भी वहां ।
होने लगे दारुण उपद्रव अनसहन सब दिश यहां ॥
करके कृपा जगदीशने भेजी सुगोरी कम्पनी ।
जिसने इस भारतपर दया कर शान्तिकीनी थी घनी ॥
जब लिया शासन हाथमें माता विमल विकटोरिया ।
तबहीं से छाने लग गया सुख प्रेम सबके भर हिया ॥
क्योंकि सुमाताने सुदित यह घोषणाकी थी उदार ।
की हर प्रजाके धर्ममें नहिं हाथ डालेगी सरकार ॥
यह नीति भा निकटोरियाकी हुई अतिप्यारीजहान ।
बस इसलिये यह होगया आधीन उनके हिन्दुस्थान ॥
शुभ एडवर्ड नृपेशका पश्चात् छिटका वह प्रकाश ।
जिससे विविध पाखंडियोंका होगया सब तमविनाश ॥
इनने भी माताके वचन का बड़ाही आदरकिया ।
हम हर किसीके धर्मको छेड़ेंगे ना यह कह दिया ॥
इत अब हुए है बृटिश पञ्चम ज्यार्ज न्यायी बादशाह ।
जिनकेसु शासनकी प्रणालीं अहै सागरसी अथाह ॥

जबसे बृटिश शाहीका शुभ आसन लिया है आपने ।
तबसे सभी बदमाश दुनियाके लगे हैं कांपने ॥
जब हुआथा अभिषेक पहिला तभी फरमायाथा यह ।
कि हम नहीं छेडेंगे हर कोमेंाको मजहबकी जगह ॥
यह सुनके भारत की प्रजाके हृदय अति सुख छागया
जानाकि यह श्रीरामके शासनके फिर दिन आगया ॥
है हिन्दकी सारी प्रजा अपने प्रभूकी भक्तिवान ।
मेरी सहित महाराजके रक्खें कुशल करुणा निधान ॥
सड़कें सुहावन कूप थाने और सुन्दर अस्पताल ।
ये हैं अनेकों काम ऐसे महाराजाके विशाल ॥
अब यही पञ्चम जॉर्ज जो हैं धीर महाराजा धिराज ।
सो शोभते हैं देहलीमें सहित अपनी नृप समाज ॥
उस देहलीकी छटा अनुपम छारही जो आज है ।
कहँलों कोई वर्णन करै अति सुघड़ सकल समाज है ।
है दुर्ग बांका तहांका खाई हैं चारो दिशिविशाल ।
है धरा जहां तख्त वह जिसमें जड़े माणिक व लाल ॥
पश्चिममें श्री जमुना तरंगों को रही हर्षित उछाल ।
बन बागमें लहरा रहे विधि विध के तरु कदमों रसाल ॥
है नगर दिल्ली आजजो अनुपम रुचिरतासे सजा ।
उसके लखे सुरराजका ऐश्वर्य जाता है लजा ॥
राजे महाराजे सभी दल बल सहित राजैं वहां ।
क्योंकि वे पञ्चमजॉर्ज बैठे हैं सिंहासन पर तहां ॥
शुभ पौष कृष्णकी सप्तमी और वार मंगल आज है ।
इसही मुहूर्त तख्तपर राजत नृपति शिर ताज है ॥

शत एक तोपोंकी हुई है बाढ़ नभ घहरा गया ।
जयकारका मुद शब्द चारों दिशामें द्रुत छा गया ॥
पुष्पोंकी वर्षा हो रही गजरा नरेशोंके सजे ।
बहु वाद्य मनहर जोरसे शुभ थलोंमें लगने बजे ॥
सुजनोंकी होगई भेट औ न्यवछावरैं होने लगीं ।
पदवी मिलीं नृपवरोंको शुभ प्रीतिकी शक्ति हु जगी ॥
मित्रो नृपेश्वरको सदा प्राणोंसे प्यारा जानियो ।
उनके सुहितके अर्थ ईश्वरसे विनय नित ठानियो ॥
बस आज धौंसा बज गया भारतमें शाही जार्जका ।
इसस्सेही यह जलसा सभामें हुआ उत्तम कार्जका ॥
सब एक चित्तसे बोलिये जय जयश्री जगदीशकी ॥
जय जय ब्रटीश सरकारकी जय जार्जश्री नृपतीशकी ॥
जय जय जगत्कर्ता प्रभो जय जय कोसलाधीशकी ।
जय जय कही श्री कृष्णकी गोविन्दकी व्रज ईशकी ॥

(महंत लक्ष्मणदासजी)

आनन्द, लखनऊ

भक्ति कुसुमावलि ।

मुदित भारती भूमि बहु चहुं दिश करत अनन्द ।
विक्टोरिया समुद्र सों उदित भयो नवचन्द ॥ १ ॥
जार्ज आर्य्य पंचम सुभग जाकी किरण अनूप ।
छिटकीं इत उत सुखद सब धारि दया को रूप ॥ २ ॥
जिनकी कृपा कटाक्षसो दुख संघ नसजात ।
ऐसो शुभ समराट लखि कौन न हिय हर्षात ॥ ३ ॥

कोऊ को ईरान कोऊ रूम वंश को नेम।
पै हिन्दू सन्तान को वृटिश जाति सो प्रेम॥ ४॥
हिन्दुन चिर सन्तप्त रह पाए कष्ट अपार।
दुख महा सागर परें डूबि रहे मझधार॥ ५॥
ऐसे अवसर पर सुघर विक्टोरिया सुमात।
शासन पोत चलाय करि कियो जगत उद्धार॥ ६॥
उनके पूत सपूत वर एडवरड गुण धाम।
शान्त रूप आनन्द धन नीति रीति की खान॥ ७॥
ऐसे पूजित वंश को अंश धारे समराट।
प्रगट भये नररूप में पंचम जार्ज विराट॥ ८॥
वहु कृतज्ञ भारत प्रजा क्यों न करे सत्कार।
जिनके घर आए स्वयं राजा परम उदार॥ ९॥
उनकी प्रिय सहधर्मणी मेरी मेरु समान।
अचल दया की स्रोतसी रानी सुख की खान॥ १०॥
देखि देखि जिनकी प्रभा प्रजा मुदित आनन्द।
करत उछाह जहां तहां विनवत परमानन्द॥ ११॥
चिरंजी वै सम्राट जू रानी सहित समाज।
इनकी सरणागत भयो भारत लाज जहाज॥ १२॥
बहुत काल सों राज सुख देखन की चितचाह।
आज भई पूरित प्रगट घर घर करौ उछाह॥ १३॥
हिन्दुन के वर इन्दु शुभ जार्ज महा समराट।
जिनके चरण सरोज नित ध्यावैं अगनित लाट॥ १४॥
वह आए भारत अवनि मेटे शकल कलेश।
उन कीरत की धुरि ध्वजा फहरै सुखद हमेश॥ १५॥

शिक्षा हित हित आप को बिदित भयो संसार ।
अर्द्ध कोटि मुद्रा दये दानी परम उदार ॥ १६ ॥
दिल्ली दिल्लूराज की फिर से बनी प्रवीन ।
भई राजधानी विमल धारे प्रभा नवीन ॥ १७ ॥
धन्य देश धनि धाम वह जहां प्रगट्यो नरनाथ ।
पंचम जार्ज महा विशद जिन किय देश सनाथ ॥ १८ ॥
बन्दी छूटे जेल के बने अनन्दी आज ।
देत अशीसें चित्त सों चिरंजी वै सरताज ॥ १९ ॥

शिक्षा, आरा ।

सार छन्द ।

आजु लखौ चहुं दिसि भारत पे माच्यो महा अनन्दा ।
सुखमय मंगल साज सँवारत नगर नारि नर वृन्दा ॥
भांति भांति फरहरैं फरहरे रंग विरंग पताके ।
ललित लरी लरकें फूलन की बनवारहु छवि छाके ॥ १ ॥
भारत की प्राचीन पुरी दिल्ली जु अहै रजधानी ।
तहं दरबार अपार मोदमय बरनि सकै नहिं बानी ॥
भारतपति पांचवें जार्ज को इत आगमन सुहायो ।
सुनि सुनि धाइ धाइ नृपगन अरु प्रजा परम सुख पायो ॥ २ ॥
बृटिशराज शुभराज मांहि यह आज अपूरब साजा ।
घर घर पुर नर नारि कहत जै जै भारत महराजा ॥
चाहति चिर सों रही चित्त सों पुरयो आजु सो साधा ।
अब सनाथ जान्यो अपने को भारतभूमि अबाधा ॥ ३ ॥
अब शकुन्तला सी भारत महि बिनवति तुम सों एही ।

भूलौ जनि यह नेह नाथ दुष्यन्तराज सों नेही॥
प्रजा सुतन के सुख दुख देखत चित दै सुनौ पुकारा।
सुमति मनावैं हमहु रावरौ सुखमय जयजय कारा॥ ४॥

लावनी।

गाओ गाओ मिलि आजु सबै शुभ गाना।
भारत में भारतराज उछाहि महाना॥ टेक॥
जै जै जगदीश्वर सकल देव सिरताजा।
जै जै यह भारतराज जार्ज महराजा॥
जै जै अंगरेजी राज काज सुखदाई।
जै जै मेरी भारत वसुन्धरा माई॥
जै लाट कलक्टर भूप रूप जगत्राना।
गाओ गाओ मिलि आजु सबै शुभगाना॥ भारत०
जै सदा सनातन भारत धर्म्म सुहाई।
जै सदा सचाई सने सुमति समुदाई॥
जै जै कृतज्ञता राजभक्ति उत्साहा।
जै जै सुराज जै राजनीति निर्वाहा॥
जै प्रजाहितैषी हाकिम हुकुम विधाना।
गाओ गाओ मिलि आजु सबै शुभगाना॥ भारत०॥ २॥
मेरे महराज धिराज हैं परम उदारा।
मेरे महराजधिराज सदा सुविचारा॥
मेरे कृपाल ये शील सनेह संवारे।
मेरे ये हैं दृढ़ नेम छेममय प्यारे॥
गम्भीर धीर गुन कलागेह विद्वाना।

गाओ गाओ मिलि आजु सबै शुभ गाना ॥ भारत० ॥ ३ ॥

इन के सुराज्य कबहुं रवि अस्त न होहीं ॥
इन के सुराज्य कल रेल तार सुख सोहीं ॥
इन के सुराज्य नहिं निबलहिं सबल सतावैं।
नहिं द्वैधरमी आपस में जंग मचावैं।
बे रोकटोक मजहबी नेम सब ठाना।
गाओ गाओ मिलि आजु सबै शुभ गाना ॥ भारत० ॥ ४ ॥

दिल्ली में महा प्रधान ठन्या दरबारा।
राजा रईस हुकमहुं जुरे अपारा ॥
नाना उत्सव सों सजे नगर घर खोरी।
वह अमरपुरी सी राजि गयी चहुं ओरी ॥
आये मेरे महराजधिराज सुजाना।
गाओ गाओ मिलि आजु सबै शुभ गाना ॥ भारत में ॥ ५ ॥

सजि धजा पताका सबै सजौ निज नेहा।
सजि हाटबाट पट अटा खोरि औ खेहा ॥
सजि मंगलमय घट तोरन बन्दनवारा।
सजि शीश रौशनी करहु रैन उजियारा ॥
सजि मंगल वेष बजावहु नवल निशाना।
गावहु गावहु मिलि आजु सबै शुभ गाना ॥ भारत में० ॥ ६ ॥

सब मिलि व्है हर्षित हरि सों आय मनाओ।
हरि भारत सम्राटहिं चिरजीव बनाओ ॥
यह सदा हमनपै हितहीं की रुचि राखैं।
हमहूं कृतज्ञता राजभक्ति सुख चाखैं ॥

आओ आओ सजि साजन सुमति सुजना ।
गाओ गाओ मिलि आजु सबै शुभ गाना ॥ भारत में० ॥७॥

(पं. शिवप्रसाद पाण्डेय)

चलो प्यारे करो स्वागत मेरे सम्राट आते हैं ।
यहां के रङ्क राजा सब बधाई आज गाते हैं ॥
दिवाकर अस्त होता है नहीं सुख राज्यमें जिस के
वही गुणवान राजेश्वर तुम्हें मुखड़ा दिखाते हैं ॥
नहीं अमरावती भी कर सके समता सु दिल्लीकी ।
जहां पर जार्ज पञ्चम आ स्वयम् डेरा गिराते हैं ॥
दया औ दानमें इनके बराबर कौन है जग में ।
गरीबोंके घरों पर जा कली दिलकी खिलाते हैं ॥
मृगों की पक्षियोंका वा मनुज की कौन गिनती है ।
पवन पावक जलधि परबत इन्हें जब सर झुकाते हैं ॥
जहाज औ तार रेलें कलकी जब सुधनेक आती है ।
तो कहता हूं विधाता हैं नयी दुनिया बनाते हैं ॥
इन्हें तुम धर्मका औतार जानो अपने मन बच से ।
इकट्ठा बाघ बकरी को सदा पानी पिलाते हैं ॥
नहीं इनकी प्रशंसा कोइ कर सकता है भूतल में ॥
जहां प्रतिभा नहीं जाती वहां अनुभव दिखाते हैं ।

(बाबू ब्रजनन्दन सहाय)

पञ्चमजार्ज राज राजेश्वर, मेरे परम पियारे ।
अलेक्ज़ेण्डरा महारानी के, नैनन के प्रिय तारे ॥
सहित श्री मती मेरी प्यारी, परिजन साज संवारे ।
बड़े भाग हैं, मो घर जो करि, कृपा आजु पगु धारे ॥
तुम हो दुर्लभ परम पाहुने, हम हैं परम भिखारी ।
तुमरे स्वागत योग भोग ले, क्या हम करैं तयारी ॥
इन दुखियन अंखियन के आंसुन तुमरो पांव पखारो ।
अति अयोग, पै भक्ति पूत हिय, आसन धरों सवांरो ॥
आवहु नाथ साथ प्रिय परिजन, यहिं पै आय विराजो ।
एक प्रेम उपहार ग्रहण करि, हम पै नाथ निवाजो ॥
" श्री कवि " हाथ जोर हम विनती, करौं नाथ इक एही ।
लखि निज ओर हमें न बिसारहु, जानि दीन निज नेही ॥

(पण्डित विजयानन्द त्रिपाठी)

अभ्युदय प्रयाग ।

प्रजा का उत्साह ।

मङ्गलकामना ।

श्रीभारत सम्राट् के स्वागत हित सौभाग ।
भयो प्राप्त भारत प्रजै प्रगटसि निज अनुराग ॥
श्रीनारायण तुव कृपा हमरे पंचम जार्ज ।
दीर्घायु गहि सुजस जग लहैं करैं शुभ कार्ज ॥

दमोदक छन्द ।

युतं नीतिः करैं निज राज्य भलौ,
गुण लोग यजैं महाराजनु के से ।

जुरि राजसभा शिर क्षत्र धरै,
शुभ साज सजैं महराजनु के से ॥
लवलीन प्रजा हितचिन्तन में,
लखि शीश लजैं महराजनु के से ।
कह सोहन हर्ष निशान सदा,
तिहि द्वार बजैं महराजनु के से ॥

सोरठा ।

प्रभु ये विनय हमारि, करहिं राज्य चिर कास लौं ।
भारत प्रजा सुखारि, ताकर छाया तर बसै ॥

(सोहन शर्म्मा, डिबाई)

सम्राट् को बधाई ।

स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति आवो मेरे सम्राट् राज कैसी सुखदाई यह रावरी अवाई है । दीन दुखियान दुख संकट टरैंगे अब, कैसी दिन फेरि यह भाग्य उदयाई है । बरसि बरसि शुभ शिक्षा सों प्रपूर नीति, सींचिये त्रिवेदी राज्य बाटिका सुहाई है ॥ धन्य धन्य हस्तिनानगर तोहि धन्य धन्य, भारत में आजु तोहि घर घर बधाई है ॥ १ ॥

आनंदकीसीमा कही ना जाति कौन्यू भांति, भारती कहै लगै तौहू थकि जाई है । शेष कहै पावैं नहीं पार कोटि कल्पन में, नारद की गति नहिं कहिबे केताई है ॥ धन्य धन्य भारत के बासीगण आज तुम्हैं, तुम्हरे शुभ देश सम्राट् की अवाई है । नगरन में गावन में गलिन में, गैलन में, भारत में घर घर में बाजत बधाई है ॥ २ ॥

धन्य घरी जौनी तिथि ऐसे महाराज इतै, धन्य तिथि जौनी घरी पूरण अवाई है। धन्य मास जौने वर्ष इज्जत अनेक पायो, धन्य वर्ष जामें पग धारिबो सुहाई है॥ धन्य धन्य वे जो अवलोकैं इन आखिनसों, धन्य धन्य दरशन की आशा जे लगाई है। धन्य धन्य धन्य कानन से सुने जे सुधा से बैन, धन्य धन्य बोलैं जे बधाई है बधाई है॥ ३॥

एहैं महाराज महारानी के समेत जानि, राख्यो रचि नीको शुभ मंडप सोहाई है। मुदित अनन्द ना उमात आजु चित्तन में, कैसी यह हर्ष फुलवाई फूलि आई है॥ लालसा लगी ही हुती पूरण भले ही भई, लखि बहु पत्रन में पूरण अवाई है। रसना यह चाहैं कछु महिमा बखान करैं, श्रौण कहैं सुनैं तो बधाई है बधाई है॥ ४॥

जौ लौ नभ मंडल दिनेश विधु तारागण, जौ लो भुवि भागीरथी भानुजा सुहाई है। जौ लौ सहसानन के सीस धरा धरी रहै, जौ लौ संसार की अचल थिरताई है॥ मारकण्डेय सी उमरि दराज होय, राज जाके प्रजा मन मोद अधिकाई है। जिऔ जुगजुग दोनौ करौ राज्य कल्पकल्प, नितही बधाई है बधाई है बधाई है॥

(सेठ जानकी प्रसाद)

सम्राटको बधाई

धनि धनि पञ्चम जार्ज मम, धनि महरानी मात।
धन्य आज शुभ दिन घरी, अजर अमर रहु तात॥
धन्य लार्ड हार्डिञ्ज अरु, धन्य सेक्रेटरी स्टेट।
धन्य प्रजा भारत अहै, भई स्वामि तैं भेंट॥

॥ कवित्त ॥

धन्य प्रजा बंबई की सबतैं निहारी पूर्व,
स्टीमर 'मदीना' तैं सवारी आत रावरी।
नारी कहैं नरन्हि को चलो बेगि देखैं हम,
बोलैं नर नारीहू को बेगि बेगि धावरी।
आनि कै बिराजी तहां मेरी महारानी साथ,
निरखी अपूर्व छटा दंपति उतावरी।
देवराज भाखैं जार्ज पञ्चम पधारे आज,
सङ्ग महरानी मेरी आनन्द बधावरी॥ १॥

॥ दोहा॥

चारि दिवस दर्शन दिये, फिरे प्रात अरु सांझ।
एड्रेश दिय बम्बइ नरन, रहे मदीना माझ॥
दोय दिसम्बरको भयो, शुभागमन इह ठौर।
पाँच दिसम्बरको लौं रहे, रात गमन किय और॥
स्पेशल महं जुरि गई, दश गाड़िन की जोर।
महरानी महराज सह, बैठे निज निज ठौर
स्टेट सेक्रटरी पास की, गाड़िन में किये चैन।
लार्ड आर्ल सब तियन सह, बैठि गये सुख लैन

॥ कवित्त ॥

सीटी दे चली है ट्रेन स्पेशल बनी है खूब,
ऐं जिनहू धक्क धक्क धन्य यों पुकारे हैं।
सप्तम दिसम्बर के प्रात ही पधारी खूब,
आनन्द तैं दिल्ली देवराज यों उचारै हैं।

बड़े लाट राजे महाराजे औ नवाब सेठ,
साहूकार औफीसर स्टेशन पधारे हैं ।
स्वागत भयौ है आज धन्य महराज मेरी,
खूब ही जलूस साथ किल्ले को सिधारे हैं ॥ २ ॥

॥ सवैया ॥

उत्सव कीन्ह अनेक यहां अरु, खेलहु देखि लिये मन भाये ।
फौज कवायद कीन्ह वहै, निरखी निज नैनन्हि तें चित चाये ।
राजन केर मिलाप भयो, सब तैं कर बात हिये हरषाये ।
लंदन तैं चलि पञ्चम जार्ज, जय ध्वनि साथ दिल्ली महँ आये ॥३॥
उन्निस सौ सन ग्यारह ईस्वी, द्यौस दिसम्बर बारह, आयगो ।
मङ्गलवार किये सब मङ्गल, नाँमउ दङ्गलहू को उड़ायगो ।
भारतभूमि निहारति राह प्रजा जन उत्सव खूब बधायगो ।
पंचम जार्ज दिलीपति आज, भये सबठाँ आनन्द छायगो ॥ ४ ॥

॥ कवित्त ॥

इन्द्रप्रस्थ हस्तिनापुर ऐसे सुनाम जाके, ।
अन्य बादशाह ताहि दिल्ली करि चीन्ही है ।
पृथ्वीराज आदि जाके हिन्दू महाराज भये,
ऐसी बीर भूमि को चितधरि अब लीन्ही है ।
नेक मंत्री मंडली को नेक मंत्र मानि जार्ज,
पञ्चम सम्राट् देव दीठ धारि दीन्ही है ।
दिल्ली कौं फकीरौं जोग भाषी सब लोग ताकौं,
राजधानी ठानि कै अमीरौं जोग कीन्ही है ॥ ५ ॥
दिल्लीपति पादशाह केउक भये हैं यों तो,

रावरी अनोखी बात कौनसी दिखात हैं।
आजुलौं न देखी काहू बेगम बिराजी तख्त,
स्वामी साथ आनि प्रजा आनन्द मनात है।
याही काज राजाही कौ कहै लोग माततात,
तात साथ लाये हौ हमारी महामात है
बैठि कै जुगल जोरी दिल्ली राज पाय तख्त,
कीन्हौं दरबार देवराज यौं लिखात है॥ ६॥
श्री मुख उचारे बैन कैसे सुख दैन भये,
फूली फूली फिरै प्रजा आनन्द मनाती है।
दीन्हे हैं पचास लाख, विद्यादानकाज याकौ,
हर्ष है अपार बोलि मुख से जनाती है।
बङ्ग को सुधार भयौ यातैं सब बङ्गबासी,
कैसे हैं प्रसन्न एक जिह्वा का गनाती है।
कोऊ उपकार कीन्ह दिल्ली दरबार मांझ
जियौ जार्ज पञ्चम ये आसिष मनाती है॥ ७॥
कौन ऐसौ ना आज भारत की भूमि पै है,
जाके जिय मँाझ नाहि आनन्द उछाह है।
जितै देखौ तितै झुण्ड नारी नर बाल बच्चे
सबही प्रसन्न सच्चे बाढ़ी चित चाह है।
कोऊ गये वर्ष बीति नई नई देखी नीति,
अब तौ निहार्यौ हमारो नरनाह है।
आँम कौं सुनाई स्पीच पालिसी दिखाई,
खूब सभी कहैं वाह वाह वाह वाह है॥ ८॥

(पंडित देवराज पंचानन शास्त्री)

लक्ष्मी, गया

मुबारकबाद, कसीदा

जब तलक प्रेम चकोरीका रहै चंदापर ।
जब तलक हिन्दमे बहती रहै गंगाकीधार ॥
जब तलक प्रेम सहित लोहको खींचै चुम्बक ।
जब तलक पड़ती हिमालय पै रहै शीत तुषार ॥
जब तलक हाइड्रजन आकसिजन मिलमिलकर ।
प्रेम संयुक्त बनाया करैं शीतल जलधार ॥
जब तलक सींगशशाकेनलखै वंध्यापूत ।
जब तलक शीश पै है शेषके पृथ्वीका भार ॥
जब तलक वायु बहै सूर्य सितारे चमकैं ।
जब तलक रात व दिनका रहै दुनियामें प्रचार ॥
तब तलक 'जार्ज' महाराज व रानी "मेरी" ।
राज्य शुखभोग करैं मोदलहैं सह परिवार ॥
चित्तमें चाह प्रजा जनकी भलाई की रहै ।
न्यायमें प्रीती रहै, कार्यमें ब्यौहार उदार ॥
चिन्तना चित्तमें भारतकी भलाई की रहै ।
'दीन' भारतको मुबारकहो य दिल्ली दरबार ॥

गृह लक्ष्मी, प्रयाग

सोरठा ।

जग रक्षाके हेत, जाहि पठायो विधिविर चि
य है समुद्र – निकेतकी, विभूति हरि रूप न र
जाके करकी छांह, सुखीं भंजा विपदाभ जी

र हत सोह नरनाह, मोद मनावत नित्य न व
ज ल जिमि सूर सुखाड, बरसावत अमरित मन ह्व
पं डित-नृपकर पाइ, त्योंहि प्रजा पालत ध रा
च तुर भूप असजानि, सुनेउ प्रजा प्रतिनिधि अर ज
म हादान अनुमानि विद्याहित दिये द्रव्य व हु
नृ पको प्रवल प्रताप, जय जस विमल कवींद्र भ जु
प रकाशत विनुताप, चहुं दिसि तीनिहुंकाल ज ग
ति हूं लोकके माहिं, नाहिं जनम्यो बैरी प्रव ल
ज गत जगह असनाहिं, जहंन छई तव जस प्र भा
य हो कहत फुर आहि, तव राज्यहिं आठौं पह र
मे हमानी जनु खाहि, नाहिं अथवत रवि नितरह त
री ति नृपनकी येह, हरैं सदा दुखदीन के
म न करुणा को गेह, दया द्रवै दुखके दर सु
ह रि निज देश दुरास, करि प्रवन्ध वहु देहि सु ख
रा खत हिये हुलास, निज अरु रय्यतके स दा
नि त विनवत युगपानि, जोरि हरिहि कवि सीसम नि

(राज्य भट्ट)

कवित्त

राजै दिनेश अकाश जितेद्दिन जन्हु सुताजलधार घनेरी ।
मध्यमही हिमशैल रहै, जवलौं धरतीकि करै शशिफेरी ।
दानी दयानिधिको विनवौं, प्रभु ! जीवैं सुखी वरसैं वहुतेरी ।
सज्जन-नायक जार्ज महीपति मेरी सुरानि गुसाइनि मेरी ।

दोहा

गौरी सुत विघनन हरैं, मंगलदेहिं महेश ।
डगै पैजनहिं पुहुमि पै, सुदृढ़ करै अचलेश ॥
रहै प्रताप दिनेश सम, सकल भुवन यहछोय ॥
सब सुरनर शुभ करनमें, तुम्हरे होहि सहाय ॥

(शिवाधीन ब्रह्मभट्ट)

भूमिहार ब्राह्मण पत्रिका, छपरा

सम्राट्का स्वागत

जारज पञ्चम राज महान, ब्रिटन देशके अत्र भवान ।
पत्नी मेरी सहित स्वकीय, पुरुष प्रकृत जनु कियो द्वितीय ।
आवत भारत चन्द्र समान, उमहत नयन सकल निजमान ।
दैव होत जब परम दयाल, पावत दर्शन प्रजा भुआल ।
गुरुजन परम तोषको पाय, देते दर्शन लघु गृह आय ।
ऐसा आया अवसर जान, भारत भाग्य लिखा कल्यान ।
धर्म राजने स्वानुष्ठान, साधा जहां परम मनमान ।
उसी दिल्लीके भीतर आज, रहा बधावा मङ्गल वाज ।
देश देशके नृपति स्वाधीन, जाते वहां प्रेम मन भीन ।
प्रान्त प्रान्तके सूबेदार, जाय रहे हैं सब तैयार ।
भारतका यह शुभ संयोग, स्वर्णाक्षरमें लिखने योग ।

सरस्वती—प्रयाग

दरबारदर्शन ।

१—नगरसे कई मील था दूर बसा भारी दरबारी कैम्प ।
निशामें देतेथे वां चारु छटा बिजलीके अगणित लैम्प ॥
महाराजा ओंके छविवन्त रावटी, तम्बू और वितान ।
सजेथे थोड़ीथोडी दूर, धन्य वह दिल्लीका मैदान ॥
२—जहांथा किसी समय सुनसान, वहां है वस्ती शोभा—धाम।
दिया जलताथा जहां न एक वहांसे तम हटगया तमाम ॥
जहांपर रहतेथे न किसान वहां हैं भूपोंके रनवास ।
विहंगमबोले जहां कुशब्द, रसायन गायन हैं सुखरास ॥
३—गवरनर जनरल आदिक उच्च कर्मचारी कमाण्डर चीफ़ ।
बड़े आदरके रूलिंग चीफ़ महाराजा, नौबाब, शरीफ़ ॥
धनी हिंदुस्तानी अंगरेज, बिलूचिस्तानी, वर्मालोग ।
सिकिम भूटान—चीन—जपान—निवासी—गण का था संयोग॥
४—वस्तही की बसतीमें भूप जार्ज पञ्चमका था सुखवास ।
सहित श्री मेरी हृदय उदार राज—रानी श्री—शील—निवास ॥
नहोगी कुछभी अनुचित उक्तिकहूंजोमैं करके कुछ गर्व ।
जगतके धन—बल—यश—सौंदर्य्य पधारे हुए वहींथे सर्व ॥
५—प्रातसे अर्धरात पर्य्यन्त लगा रहताथा ताता तोर ।
फिटन,टांगे अरु मोटरकार—"टनन्""पों""चलोबचो"काशोर॥
तीर्थमें पर्वसमय जन—वृन्द यथा जुड़ते हैं संख्यातीत ।
हुई त्यों भारत—प्रजा—प्रजेन्द्र—सन्धि—संक्रान्ति अनूप प्रतीत ॥
६—डाकघर, रेल, तार, नलनीर, सभीका था पूरा आराम ।
सकल दिन घूम घामकर लोग रातको जातेथे निज धाम ॥

सभी भूलेथे सारे काज यही कहतेथे " भाई! आज ।
गयेथक करते करते सैर पुनः अब देखेंगे कल साज ॥
७-भूप-एडवर्ड-मिमोरियल-कृत्य, खेल 'पोलो,' हाकी,' फुटबाल ।
" फौजको रंगोंका उपहार, " चर्चमें " सर्विस " आदि विशाल ॥
हुए जो अवसर उनमें भूप हमारे आये गये स हर्ष ।
प्रजाने पाये बार अनेक राज दम्पति-दर्शन-उत्कर्ष ॥
८-" बादशाही " मेलेका दृश्य प्रजा-दल-रञ्जन था भरपूर ।
सभीने देखे होकर पास राज दम्पति-हुजुर पुरनूर ॥
सातसेले सोलह-पर्य्यन्त रहे दिल्लीमें भारत-भूप ।
जयन्ती रही महा-मुद-पात्र यथा अवसर नवरात्र अनूप ॥

(राय देवीप्रसाद, पूर्ण)

श्री भारतेश्वराष्टकम्

[स्फुट पद्य]

श्री मद्कृपाल मणिमौक्तिक कण्ठमाल ।
हे सर्व-भौम नृप भारतवर्ष-पाल ॥
नीतिज्ञ सर्व गुणयुक्त ' सुधर्म ' धीर ।
श्री जार्ज पंचम महाशय दान वीर ॥ १ ॥
प्रभु वर तव कीर्तिः मैं कहां लों बखानूं ।
परम सुखद राज्यं पायके हर्ष मानूं ॥
नृप बहुत भये हैं भूमिपे तेज धारी ।
नहि सब विध शान्ति थी प्रजा में सुखारी ॥ २ ॥
था राज्य काल, मुगलान, महादुखारी ।

देते अनेक विध कष्ट, सदा अपारी ॥
नीतिज्ञ विप्र—निज नेम, जिन्हें न भाते।
कर्तें उपद्रव बिशेष हिये सुहाते ॥ ३ ॥
कीन्ही अनेक थल में प्रभु! मूर्ति भंग।
इस्लामि धर्म हित कीन्ह अनेक जंग
थी पूर्ण दुःख सहिता, अबला बिचारी।
चीन्ही न पुत्रि नयते हियमें सुधारी ॥ ४ ॥
हा हा प्रजा करत नित्य, सुने न कोई।
दीन्हों अनेक जनने, निज प्राण खोई ॥
तोभी न शान्ति भइ, भारत भो दुखारो।
ये सत्य बात हियमें, सबही बिचारो ॥ ५ ॥
हा हा सुनो सकल को, प्रभु आर्तनाद।
कीन्हो यथा मकर तें गज पें प्रसाद ॥
वैसे भयो ब्रिटिश राज, सुचक्रधारी।
आनन्द शान्ति भइ हैं, सब को सुखारी ॥ ६ ॥
विद्या प्रचार तव, राज्य विषे अपार।
कीन्ही कला जगत में, अतिही प्रचार ॥
होके प्रवीण सब दें, हियतें अशीश।
दीर्घायु होउ नृप! भारत के अधीश ॥ ७ ॥
दानी परमदयालु। स्वधर्म रागी परोपकारी है ॥
श्री चक्रवर्ति नृपकी। आयुः कीर्ति स्सदा बढो जगमें ॥८॥
विष्णु चरण अनुरागी। माल्व रतनावती-निवासी है ॥
मदनराज श्रीमाली। हेतू सुत ने समर्पिपा कंविता ॥ ९ ॥

(पण्डित मदनराज श्रीमाली रतलाम.)

कवित घनाक्षरी

द्वादस दिसम्बर ओनीससतरुद्र सन सहज हिवेरे सब लोगन विसारे हैं ॥ महाराज पंचम जार्ज राज्य अभिषेक सुनि हिलमिल आपुसमें प्रेमपर चारे हैं ॥ असन बसन बहुदान दै गरीवनको मंगलप्रसाद रातरोसनी सवारे हैं ॥ जीवै जुगजुग सुख दीवै दीन भारतको कविता प्रवीन यह आसिष उचारे हैं ॥

॥ सवैया ॥

साज समाज सुराज्यकरो जबलौनभसूरज चन्द्र निसानी ॥
वंस तुम्हार अपार बढ़ै यह आसिष मंगल दीन वखानी ॥
सत्रु रहैं न जहान कोई भगवान कृपाते सुनो सुखदानी ॥
पंचम जार्ज महीपति पै अनुकूल सदा जगदम्ब भवानी ॥

(पं. मंगलदीन उपाध्याय, राजापुर–बादा)

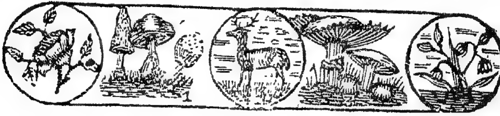
आशिरवाद।

जुग जुग जीवो पञ्चम जार्ज टेक–
महारानी नित रहो अनन्दमें और सबी युवराज।
इस भारतके तुम रखवारे, तुम हमरी आंखनके तारे
मेरी और महाराज, जुग जुग जीवो ॥ १ ॥
नित सत्रुनको विजय करो तुम भारतको दुख दरद हरो तुम
राखो शरणागतकी लाज, जुग जुग जीवो ॥ २ ॥
विजय नगारे बजो तुमारे सुन सुन कर हम होय सुखारे
दिल्ली अटल रहो तवराज, जुगजुग जीवो ॥ ३ ॥
तुमतो होगे पाण्डव प्यारे माधो कहिये सखा तुम्हारे

युधिष्ठिर संग यथा बृजराज, जुगजुग जीवो ॥ ४ ॥
भारत बासिन की यह इच्छा ईश्वर करे आपकी रक्षा
रहो सदा जैसे ही आज, जुगजुग जीवो ॥ २ ॥
आप नृपन सङ्गसोहो ऐसे देवन सङ्ग पुरन्दर जैसे
इन्द्र प्रस्थ लख सुरपुर लाज, जुगजुग जीवो ॥ ६ ॥
आप राम प्रतिनिधि स्वरूप हैं महारानी जानकी रूप हैं
लवकुश सदृस सबी युवराज जुगजुग जीवो ॥ ७ ।
रामनाथ दोऊकर जोरी हे बृजेन्द्र यह विनती मोरी
अटल रहैं जारज सिरताज, जुगजुग जीवो पञ्चम जार्ज ॥ ५ ॥

(रामनाथ लशकर, ग्वालियर स्टेट)





बुद्धीप्रकाश अमदावाद

अभिषेकाष्टक.

[गुजराती पद्य]

हरिगीत.

दरबार दिल्लीमां हवो, द्वादशी अेकादश अेकनी,
अगीआर ओगणी अडसटी, द्वय साल अे अभिषेकनी;
महाराणी मेरीने मळो, हमेश दिन सुख मोजनो,
आ जग विषे वळी जुग जुगे, जय थजो पंचम ज्योर्जनो. १
जेहना प्रौढ प्रतापथी, सुख शांति स्थिरता पामिया,
जेहना निर्मळ न्यायथी, अन्याय विग्रह वामिया.
ते देशना महाराजनो, जयकार उचरो सौ जनो,
आ जग विषे वळी जुग जुगे, जय थजो पंचम ज्योर्जनो. २
" रैयत सुखे सुखीयां अमे, " शुभ सुत्र जे वडियाइनुं,
पाळ्युं पिताए प्रेमथी, ते समजीने सुखदायनुं;
ते पाळवानो धर्म पोते, मानता बहु बोजनो,
आ जग विषे वळी जुग जुगे, जय थजो पंचम ज्योर्जनो. ३
सुख आपवुं, दुःख कापवुं वळी पाळवुं पण आपणुं,
छे क्षात्रतानी पात्रता, सुपात्रने सवळुं घणुं;
ते काज सघळां काज करवा, राज्य नियमज रोजनो,
आ जग विषे वळी जुग जुगे, जय थजो पंचम ज्योर्जनो. ४

विद्या विषे व्यासंग राखी, राज रीति नीतिने,
प्रीति थकी जे पामिया, समजी सकज कळ स्थितिने;
अभ्यास कीधो कष्टथी, नाविक नौका फोजनो,
आ जग विषे वळी जुग जुगे, जय थजो पंचम ज्योर्जनो. ५
परियटन पृथ्वी पर कर्युं, वळी अटन हिंदुस्ताननुं,
महाराज राणा राजवीनी, भेठ ए कृत्य माननुं;
खरी रीति भाति जाणवाने, लाभ लीधो खोजनो,
आ जग विषे वळी जुग जुगे, जय थजो पंचम जार्जनो ६
कीधा सुधारा ने वधार्या लोकना हक राजमां,
नीति नियमो न्याय नियमितपणुं, सघळा काजमां;
अंग्रेजनी ए खुबीए, प्रसर्यो प्रतापज राजनो
आ जग विषे वळी जुग जुगे, जय थजो पंचम ज्योर्जनो. ७
जड जुलम ने अज्ञान केरी, काढी झाडीझाडीने,
विज्ञान करी सौ जातने, बहु भात शाळा काढीने,
शुं वखत विद्या वृद्धिनो आ, जनक विक्रम भोजनो ?
आ जग विषे वळी जुग जुगे, जय थजो पंचम ज्योर्जनो. ८

दोहरो.

महाराजा महाराणीने, देजे सुख जगदिश,
मळी मंडळी दरबारमां, आपे छे आशीश.

(H. D. K.)

महीकाठा रेवाकाठा गजेट, अमदाबाद.

गायन.

बादशाही दृढ ब्रीटीश राज्यनी, रसिक हिन्द अंदर रहेजो;—टेक०

शहेनशाह पांचमा ज्योर्जने, दीर्घ आयु इश्वर देजो. —
जेना अमलनी थतां जमावट, भागी जोर जुलमनी भीतिः
प्रचलित थइ छे पुण्य प्रभावे, निर्मळ सहुस्थळमां नीतिः
विश्वमही वखणाइ रही छे, राजकीय जेनी रीति. बादशाही.
तेज भर्यो प्रभु ताज हिन्दनो, एने शिर अविचळ राखो;
भारतनां संतान भलां फळ, एना अमल तळे चाखो;
उन्नति थाजो केशव एनी, अवनीमां आ भव आखो. —बाद०.

(बारोट केशवलाल श्यामजी.)

धन्वतरी, विसनगर

" विश्वे पंचम ज्योर्ज भूपति तणी गादी रहो शाश्वती. "

(शार्दूलविक्रीडित वृत्त.)

आनंदार्द्र प्रजातणांहृदय छे, शु वृष्टि आनंदनी ?
स्वातिबिंदुसुधाथी चातकतणी संपूर्ण इच्छा बनी;
शांति सांथ महोत्सवे वसुमती हर्षस्वरे गाजती,
विश्वे पंचम ज्योर्ज भूपति तणी गादी रहो शाश्वती. १
विद्यावृद्धि खिली रही भूमिपरे, शुं पूर्णिमांचंद्रिका ?
विद्याद्वार ग्रही सुधारस सुखी भासे भली भूमिका;
सूर्ये जेम सरोज तेम सहुनी सद्बुद्धि विकासती,
विश्वे पंचम ज्योर्ज भूपति तणी गादी रहो शाश्वती. २
स्पर्शी वासित वृक्ष वायुलहरी दिशा दशे व्यापती,
ठामे ठाम तमाम सेम जगमां ख्याति सदा जामती;

शांति शीतळ राज्यछायनी नीचे आर्यप्रजा पामती,
विश्वे पंचम ज्यॉर्ज भूपति तणी गादी रहो शाश्वती. ३
पाळे सर्व प्रजा धरी हृदयमां द्विरेफपद्म प्रीति,
जग्ते कार्यकळा समाज सकळे छे न्याय नीति रीति;
पामे हुन्नर वृद्धि जेम व्रतति फाले वसंते अति,
विश्वे पंचम ज्यॉर्ज भूपति तणी गादी रहो शाश्वती. ४
वर्षामां सरति सरित सरखो आत्मे दया सौ वशो,
न्याये घातक चोर जेम गगने निस्तेज सूर्ये शशी;
पक्षे कृष्ण शशीकळाक्षय समी शत्रु दशा दीसती,
विश्वे पंचम ज्यॉर्ज भूपति तणी गादी रहो शाश्वती. ५
रिद्धि सिद्धि महान शक्ति जगमा सर्वोपरी पामजो,
शत्रुओ शिर नामी पाय पडता सामासहू आवजो;
खंडे खंड अखंड राज्यनी धजा जग्ते रहो उडती,
विश्वे पंचम ज्यॉर्ज भूपति तणी गादी रहो शाश्वती. ६
जेवा शांति सुखे सहु उजवीए राज्याभिषेकोत्सवो;
तेवा श्वेत अने सुवर्णज हजो ! चिंतामणी उत्सवो;
दीर्घायुषी रहो महा सुखमहीं देवांशी पृथ्वीपति,
विश्वे पंचम ज्यॉर्ज भूपति तणी गादी रहो शाश्वती. ७

(महासुखभाई चुनीलाल, विसनगर)

कड़वाविजय, विरमगाम

दील्ली दरबार प्रसंग तथा प्रभू प्रार्थना.

दोहरा.

वंदी आ अवसरं विभः उच्चरुं धरी उत्साह:

राज्यारूढपदे थया, भारत शाहनशाह.
सन ओगणिअगिआर शुभ महिनो तारिख बार;
वळी शुभ मंगळवार दिन, दील्लीनो दरबार.

(सवैया–एकत्रीसा.)

दील्ही आ अवसर अलबेली, इंद्रपुरीसम बनी अनूप,
ताज धरी शिर आज बिराज्या, जोर्ज पांचमा ईंद्र स्वरुप:
श्री शाहनशा ' बानुमेरी , संगे ईंद्राणी अनुसार,
उचरे आर्य प्रजा उछरंगे, जोर्ज पांचमानो जयकार,
भारतना सहु भूप पधार्या, युरोपना आव्या उमराव.
अरजदारो सरदारो आव्या, दीप्यो देवंशी दरबार.
उचरे आर्य प्रजा उछरंगे, जोर्ज पांचमानो जयकार.
नाथ निरंजन भवभयभंजन, करी मन रंजन पूर्या कोड,
आप कृपाथी आंहि पधारी शाहनशाह तणी शुभ जोड;
क्रिया ताज पोषीनी कीधी, शुभ रीते पाम्यो सत्कार.
उचरे आर्य प्रजा उछरंगे, जोर्ज पांचमानो जयकार.
भाग्यवंत भारतने मळीआ. स्वामी परमेश्वरना अंश,
शाणी म्हाराणी जाणीती, बिक्टोरिआ माताना वंश
सूत सातमा एडवर्डना, हाल थया छे ते हकदार,
उचरे आर्य प्रजा उछरंगे, जोर्ज पांचमानो जयकार.
आखो हिंद बन्यो आनंदित, सर्व स्थळो दीशे सुखकंद,
भाषे सघळां शहेर शुभोभित, मंगळगान करे जन वृंदः
विजय वावटा चोदिश चमके, ब्रिटिश राज्यनी छे बलिहार,
उचरे आर्य प्रजा उछरंगे, जोर्ज पांचमानो जयकार.
जुलमी कंइक प्रथमना राजा, देता रैयतने बहु दुःख,

राम राज्य सम आज राज्यमां, सर्व प्रजा पामे छे सूख;
धर्म कर्म धन विषे स्वतंतर, रहे निरंतर नर ने नार,
उचरे आर्य प्रजा उछरंगे; जोर्ज पांचमानो जयकार.
इंग्लिश राज्य थवाथी अहिआं, प्रजा केळवणी पामी बेश,
विद्या हुन्नर वध्यां विशेषे, वळी उन्नती थाय विशेषः
सर्व कोम संपीने चाले, अदल न्याय आपे सरकार,
उचरे आर्य प्रजा उछरंगे, जोर्ज पांचमानो जयकार.
न्यायी आ नरवरनुं निशदिन, रक्षण करजो हे जगराय.
मित्र पूत्र परिवार सहोदर, सुख शांतिथी रहे सदाय;
दिर्घायुष्य दईदुख हरजो, वंश तणो करजो विस्तार.
उचरे आर्य प्रजा उछरंगे, जोर्ज पांचमानो जयकार.
दुश्मन दीनता दारिद्रता डर, रोग दोष सहु करजो दूर,
कळा कुशलता कीर्ति कांत्ति, भाव धरी करजो भरपूर;
राजताज सुखसाज वधारी, भरजो लक्ष्मीथी भंडार,
उचरे आर्य प्रजा उछरंगे, जार्ज पांचमानो जयकार.
बुद्धिवंत बळवंत बनावो, करे सदा हितकारी काम,
गुणियल कविवरो गुण गाइ, देश बधे दीपावो नामः
प्रजा पूत्रसम गणीने पाळे, हक लायक आपे निरधार,
उचरे आर्य प्रजा उछरंगे, जोर्ज पांचमानो जयकार.
मन वांच्छीत महोत्सव इश्वर, पूरण कीधो रुडीपेर,
दान मान सन्मानो दीधां म्माराजाए आणी म्हेर;
निर्विघ्ने निज देश सिधावे, करुणा ए करजो किरतार,
उचरे आर्य प्रजा उछरंगे, जोर्ज पांचमानो जयकार.

राज्य अविचळ अमपर राखी सकळ मनोरथ करजो सिद्ध,
प्रजापाळ भूपाळ अमारा, पूरण रीते थाय प्रसिद्ध;
" छगन " वचन श्रवणे प्रभु धरजो, एज अमारा छे उदगार,
उचरे आर्य प्रजा उछरंगे,जोर्ज पांचमानो जयकार.

मुम्बई समाचार, मुंबई

भुजंगी ।

अहो देवना देव आनंद दाता, अमारा खरा आप छो मात्र त्राता;
अमारी रुडी याचना आ स्वीकारो, भला ज्योर्जनी कीर्ती विश्वे वधारो
अमारी अने एमनी भावनाओ, तमारी कृपाथी सदा पुर्ण थाओ;
अमारा भला भावमां आप व्यापो;भला ज्योर्जने कीर्ति आयुष्य आपो
महाराणी मेरी वळी साथ आव्यां, प्रजाए पुरा प्रेम पुष्पे वधाव्या;
तमे हस्त बेने शीरे नाथ स्थापो, भला ज्योर्जने कीर्ती आयुष्य आपो.

वसंत तीलका छंद.

ईंद्रासने अवनीमां नीज पाद धारी,
भुपेंद्र जॉर्ज जगनो लइ नीज स्वारी;
हैये धरी हरषने हींदमां पधारे,
पुष्पो लइ प्रीयवदी जन सौ वधावे.
पुजे प्रजा नरपती अती नेह आणी.
साथे ऊभां सती समा गुणी मेरी राणी;
शोभी रहे सुरपती सुर मध्य जेम,
नीर्खो तमे नृपमणी जन मध्य तेम.
कुन्ता कुमार सम छे बळमां बलीष्ट,

इच्छे सदा रैयतनुं नीषदीन इष्ट.
सत्ये बीजो शीबीसमो करजोज सेवा,
राजेंद्र जॉर्ज दीसता जगनाज देवा.
आजे जुवो अहीं रुडा भुप भोज आव्या,
मुर्ती बीजी वीषे धरीनेज लाव्या;
आदीत्य ईंग्लंडतणो चळकी रह्यो छे,
स्पर्धा करी पृथवीमां स्थीर ते थयो छे.
जेवा रुडा रघुपती रथमां बीराजे,
भुपेंद्रने नीरखवा जन सर्व गाजे;
नेत्रोतणी नीमीपने वळी चुकी जातां;
उत्सुक ते अती बनी सुथमां भराता.
आमात्य उत्तम सहु नीज पास उभा,
वीवेकने वीनयथी वळी शहेर सुबा;
वातु करे वीगतथी लइ तार तंत्रो.
मंत्री करे मसलतो मुकीनेज मंत्रो,
हीन्दी प्रजा हरषथीं अहीं सौ उभी छे.
भक्तीतणा भुवनमां नीरखी रही छे;
वीश्वांस ने वचनथी धरी पुर्ण प्यार,
द्रष्टी दयातणी करो कहु हे नृपाळ.
हे भुप जॉर्ज, जगमां यशनेज लेजो,
कील्लो रुडो कीरतीनो नकी बांधी देजो;
ख्याती रहे खलकमां, नही जाय नाम,
आशीष अंतर थकी दुरगाज राम.

(दुर्गाशंकर हरिशंकर व्यास—महुवा)

मुंबई समाचार, मुंबई ।

पद्य ।

आ ! दीव्य गान साथे बहु क्यम पुष्प वृष्टी थाय छे ?
भारत वीषे आनंदमां जन बहु क्यम देखाय छे ?
शीद हर्ष बहु उभराय आ ? रसरंग आ शा कारणे ?
रे ! आज भारतनो पनोतो पीय आवे बारणे.

सौ भारत नीवासी स्नेह थापी पुंज कंकु भरी लावजो,
महा अमर कीर्त्ती श्रीफळ साथे मोती बहु जमावजो;
रे ! धन्य भारत मात आजे जाय पीय वधाववा,
ते साथ चालो सर्व आपण राज्यभक्ती बतावबा.

अमृत पद तम पुजवाने कयुं नथी कंइए अमे,
तदपी मानो प्रेम प्रजानो दीव्य अंतरथी तमे;
दातार पीता छो अमारा एम जाणी उर फुलीये,
व्हाला ! पधारो बारणे तम दर्शने दुःख भुलीये.

तम राज्य अमपर तपो नीशदीन दीव्य आ प्रकाशमां
तम आत्म वृत आहाह्लादथी गुंथो अमारा श्वासमां;
हे ! पीता माता ! आत्मनां अम नमन आ स्वीकारजो,
तम भावपुंर्ण शुछत्र शीरपर हमारा धारजो;
दीनरात कंचन प्रजा साथ वीनती करे छे हे प्रभु !
जुग जुग जीवाडो ज्योर्जने करवा अमल अमपर वीभु.

(कंचनलाल छगनलाल बक्षी—नांदोद)

राग प्रभात.

आज मुंबइनां, भाग्य उदय थयां, भाळीने भुपती ज्योर्ज राजा,
ताप त्रीवीधीना, सर्व आजे टळयां, सांभळी ज्योर्जनां गीत वाजां.
लोक टोळे मळी, जाय छे दर्शने, हींदना स्वामी श्री ज्योर्ज केरां,
सर्व उत्साहमां, प्रेम घेलां बन्यां, दर्शने हर्ष पामी घणेरा. १

दोहरा (साखी.)

गृह गण शोभे भानुथी, नीशा शशी सुखदाइ;
शोभे राजा-ज्योर्जथी, मनहर आ मुंबाइ.

मनहर छंद.

देवराज इंद्र जेम, सुरनी समाज मध्य,
ताज तणा तेजथी समाजने शोभावतो,
राज तणा राज, महाराज ज्योर्ज राज तणो,
ताज आज मुंबइना, साजने दीपावतो,
भुली कामकाज महाराज तणा "झाझ" मध्य,
प्रजा वर्ग प्रेम थकी, द्रगने दोडावतो.
सुरनी समेत आसमानमां अद्रष्य रही,
इंद्रराज आज अत्र पुष्प वरसावतो.

दोहरा (साखी.)

जेम पतीने पामतां, सजे॰नार शणगार,
प्रजा भुपने भाळतां, हैडे हर्ष अपार.
अवीचळ हो अवनी परे, राज्य, अने शुभ ताज,
जगमां जश पामी, घणुं—जीवो ज्योर्ज महाराज.

(अंबालाल लज्याशंकर आचार्य पाट्टण—गुजरात.)

मालीनी.

धन्य धन्य धन्य उग्यो सुर्य हेमंतनो शूं?
रवी नीज कर हेमे आजनो शोभतो शूं?
धन्य धन्य धन्य आवे हींदनो नाथ प्यारो,
झटपट झट राजा पांचमाजी पधारो. १
धन्य धन्य धन्य धार्यूं हीत हैये प्रजानुं,
अचळ अमल जामो वाक्य ए छे मजानुं;
अखील जग्तमां आ राजनो न्याय सारो,
झटपट झट राजा पांचमाजी पधारो. २

सवैया.

भरतखंडना भुप पधारो, प्रजा तमारी करे प्रणाम,
मुंबापुरीमां प्रथम पधारी, थजो पनोता देश तमाम,
प्रजाहितमां खुब खरचजो, आज आपनुं तन मन धन,
भले पधार्या भुप हींदना, ज्योर्ज पांचमा ओ राजन. १
नीती नामनुं नाव बनावी, न्याय धर्मनो धरजो सढ,
दया तणो दरबार भरीने, खुब दीपावो दील्हीगढ,
प्रजा उपरे पीता तणा जे, धर्म पाळवा करो मनन,
भले पधार्या भुप हींदना, ज्योर्ज पांचमा ओ राजन, २
आप पीताने पीता महीनो, शीलो पकडजो ओ राजन,
पुनः वारमां हींद आवता, नाम दीपावो आ राजन,
करी जातरा आर्य वृतनी, पुण्यदानमां धरजो मन,
भले पधार्या भुप हींदना, ज्योर्ज पांचमा ओ राजन. ३
वीश्व विभु ओ वीश्व वीधाता, अम उपर कंइ करजो मेर,
आज हमारा शहनशाहना, सकळ शत्रुने करजो ठेर,

शुभ दीसे छे राज एमनुं, बधा राजमां वधो वजन,
भले पधार्या भुप हींदना, ज्योर्ज पांचमा ओ राजन. ४
सत्य तेजना बळे प्रकाशो, प्रथम पो'रज्यम प्रगटे भाण,
बधी प्रजाने पडे आकरां, माफ करो सउ एवां दाण,
धर्मरायनी धजा फरकजो, आ देशे परदेश गगन,
भले पधार्या भुप हींदना, ज्योर्ज पांचमा ओ राजन. ५

(जटांशकर अळवेश्वर, त्रीवेदी.)

हरीगीत छंद

स्वीकारजो प्रभु प्रार्थना, करे हींद बाळको आजनी,
आश उरमां एवी नीशदीन अचळता रहे ताजनी.
महाराज ज्योर्ज पांचमानी आयु बहु लंबावजो,
अम भरतवासीओ सहु परे नीत्य ताज तेज तपावजो. १
अम हृद्‌यमां आनंद वाध्यो आजनो कंइ अती घणो,
वरणाय नही स्वमुखे तेह आनंदनो सागर गणो.
दरशन दुर्लभ जे हतां तेह आप तो आवी मळ्या,
वधु बाळको आशु वदे, अम हृदय तेथी उछळ्यां. २
नीती अने प्रीती बतावी दील दया बहु लावतां,
अम बाळकोने नीज गण्या श्री हस्तीनापुर आवतां.
आ देशने गणी आपनो ने बाळको अम अपनां,
नहीं दोष जुओ अमतणा हे ! ज्योर्ज राजा पांचमा ३
प्रजा प्रीतेथी हीन्दनी प्रेमे प्रणमे आपने,
ब्रीटीश न्यायी राज्यमां स्वतंत्र पाडी छापने.
हींद गादी हस्त करीने चक्रवर्ती पद पामीयां,

कर्यां कार्य परमार्थीं घणां जेथी जुगे जश जामीयां. ४
तम दरशने अम दीलमां कंइ नुतन तेज प्रगटावीयुं,
दुष्काळे दूखी देशने सुख स्वप्न तो देखाडीयुं.
तम भावी सुखनी आश राखे देशना आ बाळको,
शुभ कार्य करवा सहाय थाये आपने दुःख टाळको. ५
भरतखंडनी भुमी फळद्रुप रमणीय ने रसाळ छे,
समृद्धी सहु तेमां भरेली ग्रहे-नारा क्यांज छे ?
कळा-कौशल्यथी करीने भुमी आ खेडावशो,
महाराज ज्योर्ज पांचमा सुखो अमुलां आपशो. ६
तम-प्रशंसा अम मुखथी वरणी न जाय हे ! राजवी ?
देखाडीयुं तेवुं व्हाल राखो अम परे हे ! राजवी.
वीवेकमां कंइ दोष जाणो लेश नही हृदये धरो
कहेवाइए बाळक तम तणां मीठी नझर तेथी करो. ७
सह कुटुंब सुखीयां थइ जुग जुग जीवोने शहेनशाह,
तख्त साथे इश आपने अचळ राखे पादशाह.
होय रीपु नाश थाये फरी नही जन्म कदा,
इच्छीए उरथी एटलुं तम सुखमां रहोने सदा. ८

(लालजी केशवजी जोडयावाळा, करांची)

सत्यविजय, अमदावाद.

राज्याभिषेक प्रसंगनुं यशोगान.

सदा नृप ज्योर्ज जगमांहि, दयानां बहु करो कार्यो;
प्रजापर प्रेम राखीने, दीपावो शहेनशाहीने १

गरीबोनां हृदय ल्हुशो, गरीबोनां हरो दुःखो;
निहाळी ऐक्य दृष्टिथी, दीपावो शहेनशाहीने. २
करो परमार्थनां कार्यो, हृदयमां साम्यने धारी;
वधारी सृष्टिमां शान्ति, दीपावो शहेनशाहीने. ३
भलामां भाग लेवाने, जीवन सघळु वहो निर्मल;
प्रजानां दुःख छेदीने, दीपावो शहेनशाहीने. ४
सदा रहो राज्यमां शान्ति, प्रजामांहि रहो शान्ति;
दयाना मेघ वर्षावी, दीपावो शहेनशाहीने. ५
प्रजाथी शोभतो राजा, उडुगणमां यथा चन्द्रज;
प्रजापर रहेम राखीने, दीपावो शहेनशाहीने. ६
सदा सद्गुणथी शोभो, तमारु दील दुनियामां;
पशु पंखी बचावीने, दीपावो शहेनशाहीने. ७
सकलने न्याय छे सरखो, मनुष्योनुं करो रक्षण;
प्रतापी पुण्यना योगे, दीपावो शहेनशाहीने. ८
सकल भारततणा जैनो, सफरमां शान्तिने इच्छे;
" बुद्ध्यब्धि " धर्मना लाभे दीपावो शहेनशाहीने. ९

लोकमित्र, खानपुर.

प्रशस्ति.

नृप–गण–मणि–भूषा चक्रवर्ती नृपाल ।
अवन करिं प्रजेचें तातसा हीस पाल ॥
सकल गुण निधी तूं राजनीतिज्ञहोसी ।
चतुर, कुशळज्ञाता, सौख्य देगा अम्हांसी ॥ १ ॥
मुदित भरत–भूमी जाहली धन्य वाटे ।

तब चरण-धुलीनें राहिलें दैन्य कोठें? ॥
भुवनिं निशि तमाचा बास जों इन्दु नाहीं ।
निशिपति उदयाये चद्रिका केविं राही ॥ २ ॥
तब धवल यशाचा दुंदुभी घोष होवो ।
खल अरि समुदाया कंपत्वन्नाम देवो ॥
अतुल बिभवभोगें पुत्र-दारे-सहीत ।
सदनिं तव रमेचा बास होवो नितांत ॥ ३ ॥
मरिचि न कधिं लोपे राज्य सेसे अफाट ।
पवन, सलिल, वन्ही, जाहले कीर्ति-भाट ॥
तुज सम नृप कोठें नाहिं सारया महींत ।
प्रभु-वर बहुदेवो आयु, ठेवो सुखांत ॥ ४ ॥

(ओंकार भट्टजोशी-पाचोरा)

गुजराती, मुंबई.

राजगीत.

दोहरा अने हरिगीत १

अहोभाग्य ! देशना, शिरपर धरवा ताज,
आज पधारे हिन्दमां, चक्रवर्ति महाराज.

महाराज आज पधारतां आनंद मंगल थाय छे,
घर घर विषे सौ हरखमां आजे अहो ! उमराय छे;

१ इस पद्यके लिये लेखकको १९०) रु. का पुरुष्कार रा. रा. जहांगीरशाह अ. तालियारखान के तरफसे मुंबईमे मिला

छलकाय छे उर सर्वनां—नरनारीनां होंसे अति,
आयुष्य हे ! प्रभु दीर्घ दे, सुख दे अति ए विनति.
हे ! प्रभु तुं आ जगतमां, दे अधिकआनन्द,
चक्रवर्तिं महाराजने, सदा करो सुखवन्त.
आनन्द आपो सर्वने, ए विनति हुं इश्वर करुं,
अन्तःकरणनी लागणीथी, आप आगळ उचरुं;
देवाधि एवा देव त्हमने अविचळे सुख आपजो,
शान्ति विषे रही सर्वदा, संकष्ट सौनां कापजो.
संकट कापी सर्वनां, वर्त्तावो जयकार,
प्रेम—मग्न रैयत बने, शहेनशाह सुखकार.
सुखकार सर्वे थाय ने, दुःख जाय दूरे सर्वथा,
मतिमान ए गुणवान ने, विद्वान ने, न्यायी तथा;
नॉतिवान एवा नर बनी, रैयततणी संभाळ ले,
आ गरीब हिन्दुस्तानने, होंसे करी उद्धारी ले.
उद्धारी ले हिन्दने, पाळे पुत्रनी पेर,
महाराणी विक्टोरिया धन्य स्वर्गसुख ल्हेर.
विक्टोरिया महाराणीजीनी बुद्धि ने उदारता,
आ विश्वमां गाजी रही, थी अेडवर्डनी पण सदा;
जे उपकारो अेमना रैयत विषे जामी गया,
तेथी सवाया जामवा आ "जोर्ज" पर करशो मया.
जश पामो आ जगतमां, पामो अविचळ मान,
कीर्ति अखंड गजावता, शोभो देव समान.
ए देवना जेवी धरे, शोभा सदाए अंगमां,
कल्याणनां कामो करे, हम्मेश रही उछरंगमां;

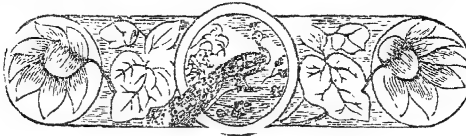
रैयततणा पालक बनी, आ खलकमां खेले सदा,
इश्वर कहुं छुं–एटलुं, आपीश नहि लव आपदा.
नव आपे तुं आपदा, रहो सुखी शीरताज,
कुटुम्ब साथे सर्वदा, ए मागुं महाराज.
महाराज म्हारी विनति आ उरमां त्हमे होंसे धरो,
ए ताजना उज्ज्वल प्रतापे तेज अधिकुं वापरो;
सौ बंड, टंटा ने फिशादो नाम सुणी नाशी जजो,
सर्वत्र शान्ति–शान्तिमां आ दिवस सौ वर्त्यां जजो.
आ शान्तिना दिवसो, सदा बनो सुखकार,
महाराजाना नामनो, थाओ सदा जयकार.
जयकार थाओ जगतमां महाराजना आ ताजनो,
उपकार तो भूलाय नहि, किंचित् कदा आ राज्यनो;
सुखनां बधां साधन दइ, आ हिन्दने उद्धारवा,
करशो मति ईश्वर त्हमे, आ समय छे सुख पामवा.
सुख पामे सर्वदा, हिन्द गरीबनवाज,
तारा मध्ये चन्द्रमा, त्यम शोभो आ राज.
आ राज्य शोभे मंडळे आकाशमां ज्यम चन्द्रमा,
ने अमल एवो सजड शोभे, सूर्यनी जेवी प्रभा;
सवितातणां किरणो सदा फेलाय छे दिगन्तमां,
तेवी रहे किर्ति सदा, आ राज्यनी शुभ शान्तिमां.
बधां राज्यमां एमनुं, श्रेष्ठ गणाये राज,
वाधे यश, धन, श्रीपति, करशो एवां काज.
करशो त्हमे प्रभुजी सदा, आ देशनुं सारुं थवा,
अनुकुळ आवा समयमां कैं लाभ मांडया पामवा;
राज्याभिषेके आपणो, आनन्द उरमां माय ना,

सौ हर्षयी जयकार बोलो, देवगण यश गाय हा.
  जश गाये सौ देवता, वर्तावे शुभ इष्ट,
  जोर्ज–मेरीसह पांचनां, सदा हरो सौकष्ट.
धी "मेरी" अमारां राज्यमाता, धी "ज्योर्ज" छे पितासमा,
रैयत बधी आ पुत्रसम, संपे रहो ए सर्वदा;
मातापितानो प्रेम हम्मेशां रहो रैयत परे,
रैयत कदि पण अंतरेथी, गुण नहि भुले अरे !
  राज्यभक्तिनु सूत्र छे, प्रेमभक्ति भरपूर,
  एक बीजानी मददमां, प्रेम भर्यु व्हो उर.
गत समय सौ भुलावजो, गादीपति थातां नवा,
सारा समयना वाय वायु, आळसी जाजो कवा;
सौ नव-नवीने, भातभातें, उत्सवें दिवसो जवा,
आ विनति म्हारी सांभळी ल्यो उरविषे हे ! इश्वरा.
  हे ! इश्वर आ सांभळी, लाव्य दया दिल मांय,
  गादीपति सुखीया थवा, अमी दृष्टि वरसाव्य;
अमी दृष्टिथी प्रभु पोषजे, रैयत अने राजा तणां,–
सौनां कुटुंबो सुखमां संतोषमां पण ना मणा;
आनन्दथी दिवसो गुजारे, प्रेममग्न वनी बनी,
इश्वर सदा आबाद राखे,सर्वने ए श्रीपति.

शिखरिणि.

महाराजा केरुं अविचळ तमो राज्य जगमां,
सदा आनन्दोना दिवस सघळा जाय सुखमां;
त्हमारी पासे हुं करगरि कहुं हे ! जगपति,
वधारो कीर्तिने, जुगजुग जीवो ए नरपति.

(मढडाकर–नागर, भावनगर.)



एक मराठी पुस्तकसे

[मराठी पद्य]

श्रीमान् राजाधिराज प्रभुवर विजयी भूपते भाग्यशाली ।
होसी सत्ताधिकारी, सकल जनमनें ऐकुनी तुष्ट झालीं॥
शोभे सिंहासनी या, सुरुचिर तनु ही, पांचवे जार्ज नाम ।
द्यावें दीर्घायु देवें विपुल बलयश। पूर्ण होवोत काम ॥

पद्य

विजय असो भूपाला । अखंड सुख दे ईश त्याला ॥ विजय असो ॥ धृ० ॥ शत्रुपराक्रम विलया जावो । कीर्ति तयाची त्रिजगीं होवो । अभिष्ट त्याचें सिद्धी पावो । हीच विनती तवपदकमला ॥ विजय असो ॥ १ ॥

पद (मांड–दादरा.)

स्वस्ति असो संतत तुज जॉर्जनृपमणी ।
न्यायनीति निपुण पूर्ण करुण सद्गुणी ॥ धृ० ॥
हिंदवासि सकल तुझ्या या प्रजागणी ।
प्रेम-लक्ष ठेउनि त्या स्वसुतसे गणी ॥
जनक जसा पुत्राची पुरवि मागणी ।

तूंहि तसा होइ अह्मा हीच विनवणी ॥ १ ॥
सरल चतुर बहु उदार तूं सुलक्षणी ।
तव मति नित दक्ष असो न्यायरक्षणी ।
सद्यश तव गाउं आह्मीं हें क्षणोक्षणी ।
सर्वेश्वर अवन करो तुज नृपाग्रणी ॥ २ ॥

(द. वि. तिनैकर.)

भूपाल पांचवे जार्ज बैसले तक्ती ।
त्यां सुख होवो ही विबुधजनाची उक्ती ॥ धृ० ॥
या हिंद्प्रजेचें भाग्य काय वर्णावें ।
मधु गीत नृपाचें यांनिं मुखानें गावें ॥
जें पुष्प उपवनीं मुग्ध असे दिन कांहीं ॥
तें प्रफुल्ल झालें गन्ध विखरितें पाहीं ॥
चाल ॥ हा सुवास गुणकीर्तीचा । संचरे ।
हे द्विरेफ गाती सारे । मुदभरें ।
हा पवन गन्ध संचारी । वनिं वनीं ॥
कीं बाल-रवीचा प्रकाश देई तृप्ती ।
हे भारत-वासी भाट होउनी गाती ॥ भूपाल० ॥ १ ॥

पद (चाल-कवणें तुज०)

पंचम नृप जॉर्ज ! जनां रमविं गुणबलें
करिं गंधित सकल दिशा कीर्ति-परिमलें ! धृ०
चढतां विधु उदयाचलिं

हास्य करी कुमुदावलि
बालरवी येतां वरि
गाय विहगकुल अंबरिं
अभ्युदयें तव बुधजन तेविं तोषले १
अवनतिपंकांत बुडे
दीन भरतभूमि रडे
उद्धरणक्षम दुसरा
न दिसे तुजविण नृवरा !
तव सुयशोमधुपानीं चित्त लोभलें ॥ २ ॥
नम्रवृत्ति, विभव अचल
बुधसंस्तुत कीर्ति विमल
प्रजाप्रेम, नय परता
सन्मति शुभगुण निरता
अवलोकुनी मोहित मन बहुत जाहलें ३
विद्यामृत दान करीं
दीनव्यसनांसि हरी
सुखशांती भरिं भुवनीं
वितारिं मोद अखिल जनी
कविगण शिरिं मुदित धरिल चरित तव भलें ॥४॥
(ए. पां. कुळकर्णी रेंदाळकर)

चाल—मूर्तिमंत भीत्ति उभी

सार्वभौम सकल मान्य, असति जॉर्ज भूपति ॥ ध्रु० ॥
शांत सुशिल भाग्यवान, कृपावंत मूर्ति ती।

चतुर बहुत कार्यदक्ष, वीर शूर गर्जती!
विविध कला न्यायनीति, शांति कीर्ति गाजती ॥ सार्वभौम० ॥ १

राग भूप, ताल–धुमाळी.

भो परमेश्वर, करुणासागर, जगदीशा । सकल शुभाकर देवा ॥
श्रीमज्जॉर्ज वराधिपतीतें । भवपथ सुखमय ।
कर, दे अक्षय । आयुर्बलजय ।
भो परमेश्वर, करुणासागर, जगदीशा । सकल शुभाकर देवा ! ॥ १ ॥
सदया, अमुच्या बादशहांचे । अरि निर्दाळुन ।
कर संरक्षण । तूं रात्रंदिन ।
भो परमेश्वर, करुणासागर, जगदीशा । सकल शुभाकर देवा ! ॥ २ ॥
आंग्लभूमिचें हिंदभूमिचें नातें प्रेमल ।
मधुतर निर्मल । कर दृढ बहुबल ।
भो परमेश्वर, करुणासागर, जगदीशा । सकलशुभाकर देवा ! ॥ ३ ॥
राज्य जगत्संग्रहकारी हें । अनुपम सुखकर ।
परिवर्धित कर । ह्या अवनीवर ।
भो परमेश्वर, करुणासागर, जगदीशा । सकल शुभाकर देवा ! ॥ ४ ॥

राग मांड (मिश्र), ताल–एका.

परमात्मन् ! परमवरद ! रक्ष, रक्ष परमवंद्य, सार्वभौम राजया
सदैव दे जया !
सतत तुझी वितत असो ईश्वरा ! दया.

तव दया अपार, शुद्ध, परमशुभमया ! ॥ धृ० ॥
तदधिकृती । शुभद अती । कर महाशया !
सदैव दे जया !
सतत तुझी विनत असो ईश्वरा ! दया. १
आयुर्बलधनसुखास
सन्तत दे भूवरास;
धन्य धन्य ही जगती । वरुन पती । हा असो सती !
पूर्ण फलवती !
सदैव दे जया !
सतत तुझी वितत असो ईश्वरा ! दया. २
निहत करी । सकल अरी । गिरिकुहरी । खल दडोत कीं !
सदा खल दडोत की !
बहुवदान्य । नृप अनन्य । अग्रगण्य ! लोकनायकी,
असो भूपनायकी !
सदैव दे जया !
सतत तुझी वितत असो ईश्वरा दया. ३
प्रीति नीति शान्ति दान्ति कान्तिमंडिता,
कीर्ति वसो स्फुर्तिप्रद जगिं अखंडिता !
सर्व धरा एक पदीं कर विभो ! युता !
परमात्मन् ! परमवरद ! रक्ष रक्ष परमवंद्य, सार्वभौम राजया
सदैव दे जया ! ४

(ना. वा टिळक.)

पंचमजॉर्जाभिनंदन.

येई, येई पंचम जॉर्जा ! सार्वभौम भूपाला !
उत्सुक आह्मी आहों सखया ! स्वागत तव करण्याला.
प्रेमल, सात्विक, नयनमनोहर, उदात्त तव वदनेंदु
पाहुनि, सांगे, उचंबळेल न कोणाचा हृत्सिंधू
बघुनी तूंतें सत्वर अमुचे हृदयकुमुद उलतील.
फुटतिल पान्हे प्रीतिस वेगें, हर्षमणी झरतील.
उल्हासाचा, भक्तिरसाचा कडेलोट होइल.
जेथें तेथें जनता सारी वेडावुनि जाईल.
कविरायांच्या दिव्य कल्पना-लहरिस येइल भरती
करितिल नृत्या हर्षोन्मादें खग पशु वृक्ष व्रतती.
कोण असा जो मंगल समया ऐशा मलिन करील ?
विश्वशत्रुही द्वेष आपुलायेथे क्षण विसरेल ?

अपूर्व अवसर असें पातला, तया साजरा करुं या
आली लक्ष्मी दूर लोटतां हांसे होईल जागीं या.
याहो ह्मणुनी हिंदु मुसल्मान् ! ख्रिस्ती जनहो या. या.
हिंदी जितुके सगळे झणिं या, विलंब न करा वायां.
चढा ओढिनें स्वागत करणें अपुल्या भूपाळाचें—'
नव्हे—हिताचें, वात्सल्याचें, उज्ज्वल दाक्षिण्याचें.
इतर कसेही असोत; अपुला राजा निर्मळ आहे.
जनहित साधनि उत्साहाने सदैव तत्पर राहे.
जन-सेवा ही ईश्वर-सेवा-नित्य मनी तो वाहे

नृप-भक्ति ही ईश्वर-भक्ति-भाव आमुचा आहे.

येई भूपा. माय भारती पुराण काळाची ही
अंकी घ्याया तुजला हर्षे सिद्ध असे बा ! पाही.
अनेक राष्ट्रं मोठ मोठाली देखिली असती तीनें;
भोजविक्रमासम नृपरत्नां खेळविलेंसे प्रेमें.
महाभारतासमयींचे ते प्रतापशाली योद्धे
पाहुनि हीच्या मधुर मुखाला पायि लागति मोदें.
पुरें, पत्तनें सुंदर सुंदर सोज्वळ रत्नमण्यांची
बांधुनि हीतें सजविति हर्षे; शोभा ये स्वर्गाची
गंगा, यमुना, तापि, नर्मदा-नांमें किति मी घ्यावी-
माळा करुनी घाली कंठी तयां भारती देवी
जिकडे तिकडे हंसे समृद्धी, अविरत नांदे शांति,
प्रीति नीतिनें राहे जनता, अखंड गाजे कीर्ति,

आहे पश्चिमदिशेस येथुनि दूर देश इंग्लंड;
तेथुनि आले राज्य कराया वीरां चेनववृंद
दृष्टिस पडतां भव्य येथलें ज्ञानाचें-भांडार
मुग्ध जहाले; ह्मणूं लागले, " करूं यांत संचार
" सोडुं हवें तर एक वेळ हो आह्मी इंग्लंदाला !
वाटे पुरिना सोडवेंसें भारतिच्या पायांला
" राहुनि येथें हळु हळु आर्यां उत्तम शिक्षण देऊं
होतां कार्यक्षम त्यां हर्षें राज्य देउनी जाऊं

"हेंच आमुचें ध्येय, हीज हो ईशेच्छेची पूर्ति
न्यावें परिणतिकडे जगाला, यांतच आमुची किर्ति"
याहुनि आहे अन्य कोणात सांगा हेतु उदात्त !
ऐशा ठायी जीवें भावें कोण न हो अनुरक्त !

यत आपुला भूपति ? येथें राहील कां तो सतत
नोहे नोहे–क्षणभर चटका लाउनि जाइल परत
स्वप्नपरि मग अमुचा सारा खटाटोप होईल ? –
नाहीं नाहीं–जागृत नित तो हृन्मंदिरिं राहील
विस्मरणाचें नांव कशाला ? जरी एकदां त्यासी
तुह्मीं पाहिलें, अक्षय ठसला हृदिं तो तेजोराशी
गाई पंचम सुरांत कोकिळ होउनि तन्मय जेंवी
तुह्मिही पंचम जॉर्जीं रमुनी गाल खचित हो तेंवी
गाणें तुमचें मग तें व्यापुनि दाहि दिशा राहील
स्वामिभक्तिचें सत्प्रीतीचें स्मारक जागें होईल

(गोविंद पांडुरंग देवधर बी. ए.)

श्लोक–(पृथ्वीवृत्त.)

प्रभो नव नृपावरी सतत सौख्य–वृष्टी करी
प्रियसह तयांवरी निजकृपाबितांना धरीं ॥
शरत्शत निरामय प्रचुर आयु देई तयां ।
स्वतातजननीपरी मधुर घालवो तो वया ॥ १ ॥

मासिक मनोरंजन—मुंबई.

ओवाळणी.

भारतमहिला जमूंचला, ओंवाळाया भूपतिला;
प्रिय भूपाला, राज्ञीला, मंगल गीते गायाला.
शुद्ध अक्षता प्रेमाच्या, घाला पात्रीं हृदयाच्या;
विश्वासाचें कुंकुंम घ्या, चला पुढें व्हाग अवघ्या
आशेचीं उधळा सुमनें धुवुनीयां हर्षाश्रूनें;
ऋद्धिसिद्धिला बोलावा, निश्चयदीपावलि लावा.
उदंड आयुष्या देवो, कीर्ति दिगंताला नेवो;
भरतभूमिच्या नाथची, इश्वर अपुल्या भक्ताची.

(श्रीमती सौ लक्ष्मीबाई टिळक. अहमदनगर.)

सम्राडभिनंदन.

भूप—दादरा

नित्य तुझा विजय असो जार्ज नृपवरा!
धन्य धन्य तूंचि जनीं नृपति भास्करा! ॥ ध्रु. ॥
विद्या मुखकमलिं वसे, करकमलीं श्री विलसे,
राजन! तवपार नसे राज्यविस्तरा!
नित्य तुझा विजय असो जार्ज नृपवरा!
धन्य धन्य तूंचि जनीं नृपति भास्करा!
अगणित सामंत सतत पूज्य चरणयुगिं तवनत,
स्वन्मंगल कीर्ति वितत भरित अंबरा!
नित्य तुझा विजय असो जार्ज नृपवरा!

धन्य धन्य तूंचि जनीं नृपति भास्करा!
सलिल शयवर्धितबल, सततोदित रवि मंडल,
शतदल तव राष्ट्रकमल शोभवि धरा!
नित्य तुझा विजय असो जार्ज नृपवरा!
धन्य धन्य तूंचि जनीं नृपति भास्करा!
सार्वभौमराज्ययोग, दीर्घकाल राजभोग,
राजेन्द्रा वपुविरोग, दे परात्परा!
नित्य तुझा विजय असो जार्ज नृपवरा!
धन्य धन्य तूंचि जनीं नृपति भास्करा!

(श्रीयुत ‘ राधारमण ’ दापोली.)

राजगीत.

घनशाम सुंदरा श्रीधरा अरुणोदय जाहला. या चालीवर.

मित्रोदय दे जसा सारसा, जार्ज नृपाला ! तसा
तव सुंदर वदनारविंद आनंद हिंद–मानसा.
होय भूमि ही सफल नृपा! तव ललित चरणतल–रजें,
भजलि न कधिंही कुणा नृपाला अशी, अशी तुज भजे.
पडतां तिजवर तव ममतेची–समतेची सावली,
रसिक–शिखी–जलधरा! धराही अमित तोष पावली!
नय–करुणालय तव शुभ गुणचय गाय मधुरही मुखें,
करिं परिपालन हिचें नृपाला! दीर्घकाल तूं सुखें,
शुचि–ललनागण–ललाम–लसना मेरीसह तोषदा,
अचल नृपश्री–विलास–क्रीला भोगिं नृपाला! सदा.

विमल चंद्रिका तुल्य यशें तव निखिल धरातल भरो!
नृपशतनत राजा धिराज! तुज चिर विजयश्री वरो!

(श्रीयुत दत्तात्रय भिमाजी रणदिव, मिरजगांव.)

भारत भाग्यदिन.

(राग बिहाग—ताल दादरा.)

सुखकर अति धन्य सुदिन भारतीजनां
चक्रवर्ति जार्ज मेरी देती दर्शना ! ॥ ध्रु० ॥
चिच्छक्ती देहातें, ज्योती कीं दीपातें
माय धेनु वत्सातें, हीच भावना !
सुखकर अति धन्य सुदिन भारती जनां !
चक्रवर्ति जार्ज मेरी देती दर्शना !

(श्रीयुत सदाशिव नारायण ठोसर, बी. ए. एल. एल. बी. मुंबई)

अभीष्ट चिंतन.

चाल—आज मीं ब्रह्म पाहिलें.

परात्पर रक्षों राजाला, परम पूज्य श्री जार्ज नृपाला
हिंदभूमिच्या प्रिय नाथला ! अमुच्या त्रात्याला. ॥ ध्रु० ॥
आयुर्बलज्य वैभव देवो, अशुभ लवाही विलया नेवो,
जगीं सर्वदा अशीच वाहो, कीर्ति नदी विमला. ॥ १ ॥
सौभाग्याची केवळ खाणी, देवा, अमुची माता राणी,
राखं सुखी दे कुल भूषविती पुत्र पौत्र माला. ॥ २ ॥
वर्धिति कर अधिकार तयांचा, नित्य असो तव आशीर्वाचा,

सदया देवा सविनय अमुचा अर्ज असा तुजला ॥ ३ ॥

(श्रीयुत रे. नारायण वामन टिळक, अहमदनगर.)

चित्रमयजगत–पुना.

राज्याभिषेकोत्सव.

जयजयजय जॉर्ज नृपा भरतभूवरा ॥
इंदिरा न कधीं त्यजो राजमंदिरा ॥ धृ० ॥
मार्गशीर्ष पुन्य मास आर्य मानिती ! ॥
सार्व भौमराज्यपद प्रथन संस्कृती ॥
आज घडति, शांति भूति लोक चिंतिती ॥
आंग्ल भौम राजनिति विबुध वर्णिती ॥
(चाल) प्रजा उभविती ध्वजा, स्तविति ईश्वरा ॥
करीं चिरायू जॉर्ज नृपा भुवन सुंदरा ॥ १ ॥
॥ धृ० ॥ जयजयजय जॉर्ज नृपा० ॥
दिल्लीपुरिं चंदनमय स्यंदनिं किती ॥
वंदनार्थ नंदनार्थ नृपति मिरवती ! ॥
भरतभूमि–मंत्रिसुधा–वाणि वर्षती ॥
आंग्लनृपा देवकृपा कुशल वांछिती ॥
(चाल) स्तवुनि मुखें पार्थिति जन संध ईश्वरा ॥
शांति असो पुष्टि असो जॉर्ज भूवरा ॥ २ ॥ धृ० जय० ॥
भरतखंडवासिजनां भेट द्यावया ॥
मार्गशीर्ष पुण्यमास एथ यात्रया ॥
नियोजिशी प्रियेनिशी राज राजया ॥
आम्हां वरीं लोभ खरा अंतरी दया ॥

(चाल) माय बाप बंधुमित्र असति तूंखरा ॥
भरतखंडवासिजनां थोर आसरा ॥ ३ ॥
॥ धृ० ॥ जयजयजय जॉर्ज नृपा० ॥

(रावसाहेब पुरुषोत्तम बाळकृष्ण जोशी ए.)

[बंगाली पद्य]

सब सम स्वरे एक तार तरे गावो सम्राट सम्राज्ञीन जयअरे ॥
शुभदिने आजी ऐस सबेसाजि मनमी विभूपदे मङ्गलतरे ॥
पुरवासी जन शंखनाद घनकरो सम्भावने दोहें सोहागभरे ॥
विपुल विधाने दम्पति सन्माने करे आयो जना अतिप्रीति दुआरे ॥
अगनित दीपे मालागांध स्तूपे भूपेर यशोराशि घोषण करे ॥
आजिकारे दिने दिल्ली पुण्यस्थाने बसे सम्राट सम्राज्ञी मञ्चपरे ॥
जेजन शासने वङ्गवासी गने भुजे शुखराशी सदा परानभरे ॥
प्रभु जगतपति पदे एई विनती मारकण्ड दीर्घआयु दानेदो हरे ॥





मुंबई समाचार. मुंबई

कसीदा तारीखी.

[उरदू पद्य]

इदे कुरबां की हुइ जलवागरी, अहले दीं को हो मुबारक ये खुशी.
नीकळे है पढकर दुगाना दीनदार, रूख से शौकत हए आयांइसलामकी,
हए मोअत्तर कुचा कुचा शहर का, इत्रमें पोशाक हए सबकी बसी.
मील रहे हैं कीस मोहब्बतसे गळे, खील रही हए हीलकी यारों के कली,
मच रही हए आमदे कएसरकी धुम, इद के दीन इद हए एक दुसरी,
की गइ हए इसतरह आरासता, अपनी खुबीपर हए नाजां बम्बइ,
आ गइ हए वो बहार जां फझा, बन गइ हए बागे जन्नत हर गली.
शहर हए अएसे करीने से सजा, एक दुलहन हर एक कोठी बनगइ.
शाह की ओर शांहबेगमकी शबीह, जाबजा हएकएसी खुबीसे लगी.
झीबो झीनत और आरायश की वाह, बात कोइ भी नहींबाकीरही,
एकझीबीशन में वो कोहे दीलफरेब, नकलमें हए शानपुरीअस्लकी.
आ गया नामी मदीना आगबोट, धुम एशरत की हएसाहीलपरमची,
आ गया वो कएसरे हींदुस्तां, जीसको हए शौके रेआयापरवरी.
आ गया वो सरवरे आली हशम, मुसतनद हए जीसकीआलीहीम्मती.
आ गया वो खुसरवे फखरे झमन, धाक हए जीसकीझमानेमेंबंधी
आ गया वो ताजदारे नामवार, आसमां करता हएजीसकीचाकरी.
आ गया वो बादशाहे रहम दील, धुम हए जीसके अताओरहमकी.
आ गया वो शहरीयारे नामदार; बख्ते अहल हींदने की यावरी.

ईंडीया में होरहा हए जल्वगर, परचमे एकबाले बख्ते कएसरी.
ये वो शहेनाशाहे आलीजाह हए, जीसका शाहों में नहींहमसरकोइ.
झक्र के लायक हऐ अखलाके हजुर, फख्र के काबील है हालेजीन्दगी.
हर सोबन से तमकनत हएआशकार, हए अयां चेहरेसेशानेबरतरी.
जो नहीं इस प्यारे शहेनशाह में,खल्क में ऐसी हए खुबी कौनसी.
गर न होता हींद वालों काखीयाल.औहक्याथीवजहेतशरीफआवरी.
मुनअकीद दरबार देहली में कीया, ता हो हमको तांजपोशीकोखुशी.
इनतेहा का ये रेआयापर हए लुत्फ, बेने हायत ये करमहएवाकेइ.
आज मनझर होगा वो पेशे नीगाह,खल्कहए मुशताक जीसके दीदकी
सुब्हसे जीसका हमे था इनतेझार,वकत वो आया वो आपहोंचो घडी.
जीस तरफसे आने वाला हएजलुस,आंख सबकीहये उसीजानीबलगी.
चोझ देते हएं तमाशाइ तमाम, हए लबोंपर नग्वरे खुश आमदी
देख लो दीदार शाहनशाह का,कर लो यारो हो सके जीतनीखुशी.
चारसु से देखो उठी उंगलीया, जॉर्ज पंजुम की सवारी आ गइ.
मरहबा कीतनाहए पुरशोक्त जलुस,मरहबा कीतनीहयेदीलचसपी भरी.
क्या रीसालोंकीहए वरदी जर्क बर्क,आंख झपकीजाती हएखुरशीदकी.
देख कर ये अझमतो जाहोजलाल,खल्क हए मसरुरभी मरउब भी.
देखा इस शोक्तका शाहाना जलुस, ये हमारी नसीबी हए बडी.
शहर के हर कुचओ बाजार में, धुमसे कल शबको होगी रोशनी.
फीर इसी शोक्तसे नीकलेंगे होझुर,फीरमीलेगी हमको दौलत दीदकी.
हीझ मॅजॅस्टी जार्जे पंजुमकी सना, हए हमारा एक फर्ज मनसबी.
आपके अहदे हुमायुं में हयें, हरतरह की हए मोयस्सर खुररमी.
कोइ बंदेश हए न कोइ रोक टोके,पुरी आझादी हए हासीलमझहबी.
अहदमें जीसके ये राहतहो नसीब.उसकी उलफत क्यौं नहोदीलमें भरी

आजगरलीखेंन मदहेशाह हम,काम फीर आएगी कीसदीनशाएंरी.
अए खुदा कएसर हमारे खुश रहें, हो तरक्की दौलतो एकबाल की.
धुम से देहली में वो दरबार हो, हो रही जीसकी तैयारी बडी.
कुल रेआया और शाहनशाह को, हो मुबारक ताजपोशी की खुशी.
वो इनायत शाहकी मबझुल हो, हींद वाले खुश रहें ता झेन्दगी.
पाएं खातीरखाहहम दीलकी मुराद,शान और अझमतबढेइगलेंडकी.
चएनसे उमरे रेआया हो बसर, झीरे झेल्ले इलतेफाते खुसरवी.
जब मीले ये मौकए अयशो तरब, क्यौं न रौनक होदुबाला इदकी.
सालेहीजरी अए तजम्मुल तुमलीखोसबके दीलकोयेहुइ दोहरी खुश

(हाजी सैयद तजम्मुलहुसैन " तजम्मुल " जलालपुरी.)

महफेलमें शबकी माहका जबतक सेराज हो !
दोन्यामें रस्मे-एश्कका जबतक रेवाज हो !
मएशुक दहर ता मोतलव्वेन मेझाज हो !
जबं तकके एन्सोरेंमें यहां एम्तेझाज हो !
जब तक सरे सेपहारका खोरशीद ताज हो !
ब्रीतानीयांके शाहका भारतमें राज हो ! ॥ १ ॥
जब तक फेराकका हो झमाना जेगरगोदाझ,
जब तक के हेज्रका हो फसाना जेगरगोदाझ,
ता नारे एश्कका हो झमाना जेगरगोदाझ,
ता अन्दलीबका हो तराना जेगरगोदाझ.
जब तक सरे सेपहरका,खोरशीद ताज़ हो !
ब्रीतानीयाके शाहका भारतमें राज हो ! ॥ २ ॥
दीलीकां कुचा•कुचा हय रश्के चमंन बना !

दील्लीका झररा झररा हय दोररे अदन बना !
दील्लीका खारभी तो हय गोल पयरहन बना !
हरएक इस तरेहसे हय गरमे सोखन बना !
जब तक सरे सेपहरका खोरशीद ताज हो !
ब्रीतानीयाके शाहका भारतमें राज हो ! ॥ ३ ॥
इन्द्रपुरी हय आज बनी मेस्ले नव अरुस !
फर्शे झरीन वहां हय जहां कलथा घास फुस !
हींदी वफा शेआरीसे होते हंय पाय बुस !
हरजा यही सदाऐं हय बजता हय तब्लो कुस !
जब तक सरे सेपहरका खोरशीद ताज हो !
ब्रीतानीयाके शाहका भारतमें राज हो ! ॥ ४ ॥
हर कुचेमें खुशी हय तो हय हर मकांमे धुम !
हय शहकी ताजपुशीकी हीन्दोस्तांमें धुम !
अयशो तरबकी आज हय सारे जहांमें ! धुम !
बुलबुल मचा रही हय यही बुस्तांमें धुम !
जब तक सरे सेपहरका खोरशीद ताज हो !
ब्रीतानीयाके शाहका भारतमें राज हो ! ॥ ५ ॥
पहनेगा " ज्यार्ज " धुमसे ताजे शहाना आज;
अकबरका याद आएगा सबको झमाना आज !
रख्खो कोइ खुशीका दकीका उठा ना आज !
सब गाओ मीलके खोरदो कलां येह तराना आज
जब तक सरे सेपहारका खोरशीद ताज हो !
ब्रीतानीयाके शाहका भारतमें राज हो ! ॥ ६ ॥
वोह शाह—जीसके अदलका हय झौ—फेगन सेराज,

वोह शाह–जीस्का दहरमें सबसे बडा हय राज,
वोह शाह–अपने फर्कपे रख्खेगा आज ताज,
क़रती हय सेदक देलसे रेआया दोआ ये आज:
जब तक सरे सेपहरका खोरशीद ताज हो !
ब्रीतानीयाके शाहका भारतमें राज हो ! ॥ ७ ॥
सबकी दोआ हय शाह ! तुजे कोइ गम न हो !
तुजको कीसी तरेहका जहां में अलम न हो !
हेन्दोस्तांपे कम तेरा लोत्फो करम न हो !
" दारा " ओ "जम" से कम तेरा जाहो हशम न हो !
जब तक सरे सेपहरका खोरशीद ताज हो !
ब्रीतानीयाके शाहका भारतमें राज हो ! ॥ ८ ॥
दोन्याको अपने अदलसे अय शाह राम कर,
" नौशीरवां " की तरहेसे मशहुर नाम कर,
होस्ने–अमलसे अपने जहांको गोलाम कर,
सब थक झबां येह होके कहे तु वो काम कर;
जब तक सरे सेपहरका खोरशीद ताज हो !
ब्रीतानीयाके शाहका भारतमें राज हो ! ॥ ९ ॥
अय शाह हो झमानेको तेरी अदा पसंद ?
बा अदल तु हो–तेरी रआया वफा पसंद !
अलकेस्से कर वोह काम के जो हो खोदा पसंद !
हरदम दोआ येह हमको हो सबसे सेवा पसंद !
जब तक सरे सेपहारका खोरशीद ताज हो !
ब्रीतानीयाके शाहका भारतमें राज हो ! ॥ १० ॥
हरसुसे अंाज आती हय हरदम सदा यही !
करते हंय अहले हीन्द वदील एलतेजा यही !

फरमां-रवाये-हींद रहे बादशाह यही !
" नाझीम " भी बम्बइसे हय देता दोआ यही !
जब तक सरे सेपहारका खोरशीद ताज हो !
ब्रीतानीयाके शाहका भारतमें राज हो !

(नाझीम.)

मद्दाह आपके हें सारी जहान वाले,
दिलीसे दुआ हें देते हीन्दुस्तान वाले.
इन्सान हों केह हयवां इन्साफ पारेह हें,
ख्वाह बेझबान हों वोह या हों झबान वाले,
मुदतके बाअद देहली दरबार येह दुवा हय,
हो आपको मुबारीक अय इझझो शान वाले,
येह जश्नभी जहांमें एक यादगार होगा,
होंगे जुलुमें तेरे सब आन वान वाले,
येह आरझु हय मेरी ओर शाह ज्यार्ज पंजुम,
कायम रहें जहांमें नामो नीशान वाले,.
बद ख्वाहसे बचाना अय मालीके हकीकी,
तु हय हफीझो नासीर अय आसमीन वाले,
मकंबुल यह दुआ हो मुन्शीकी या इलाही,
तु हय बसीरो साम्ए कोनो•मकान वाले.

(मुन्शी गुलामअली गुलाम नबी.)





काठियावाड़ महीकांठा गजट, अमदाबाद

[इंग्रेजी पद्य]

King-Emperor's Song.

" Live Long King Emperor Goerge Long live
And thrive in every way;
To heart's content your aims achieve;
We all to God thus pray.
Live long King Emperor George.

Take Hind and Britain sisters twin,
As common father be;
Their equal constant love you win,
Let none in misery.
Live long King Emperor George.

Defender of The faith wealth-life,
Rule both the realms in peace;
And hold their helms bereft of strife;
With Queen Empress in bliss.
Live long King Emperor George.

Rise you for ever our fortune's guide.
With rule benign and wise;
And glory in your crown, abide,
Get fame that mount the skies.
Live long King Emperor George.

May God pour blessings choicest–Dear !
May He all evils scourge;
Again we pray with pride and cheer,
" God, save King–Emperor George
Live long King Emperor George.
(Keshavlal V. Bhatt. B. A.)

शिक्षा, आरा

CORONATION SONG.

I.

From the land of Victoria the Noble and Great,
From the lap of Fair Albion who rules in her state
Over realms that extend to the far polar seas,
O'er regions perfumed by the bland vernal breeze,
O'er the oceans that quake,
As her thunders expand,
Over channels that shake
At her regal command,
And o'er seas that are held by the Oaks of her parks
With their corals & pearls, with their monsters & sharks,-
You are welcome to Ind—to her valley and gorge,
Thrice Gracious Queen Mary and Mighty King George !

II

From the land of King Edward the Peaceful and Kind
And the sweet Alexandra of virtues refined,
Who, 'from over the sea,' from the land of the Danes,
With her beauty enchanted the rich English plains,

From the birth-land of fighters,
Renown'd for their feats,
Of high thinkers and writers
Like Shakespeare and Keats,
Where Lore often girdles the sharp-cutting brand
And renounces her laurel to fight for her land,—
You are welcome to us—from your valley and gorge
Thrice Gracious Qeen Mary and Mighty King George

III

Oh ! we welcome you fain to the Garden of Earth
The abode of enchantment, of learning and Worth,
Where the Ganges she surges with gold' neath her tide
And the Indus and Brahmputra roll in their pride,
To the shades of our *neems*
and our *peepals* high grown,
That are water'd by streams,
Like the Poonpoon and Sone,
To our jungles where wild peoples savagely dance
To the wild-swelling strains of some sylvan romance,
To each mead and each moor, to each valley and gorge—
You are welcome, Queen Mary and Gracious King George.

IV

Oh ! we welcome you fain to our rich floral glens,
To our fields and our farms, to our groves and our dens,
To our towns and our hamlets, our hills and our mounts,
To the banks of our rills and our brisk-gushing founts,
To the lofty Himal,
Emblematic of Time,
With his pine and his *sal*,
In his grandeur sublime,

To our wild bushy jungles our forefathers trod
Where the cypress and banyan they whisper and nod,
To each mead and each moor, to each valley and gorge,--
You are welcome, Queen Mary and gracious King George!

V

To the wonders of Ind like the Taj and Minar
To the land which was first, both in learning and war,
To the land which is warm'd by the sun's merry glance,
To the throne of the fearless and warlike Pathans,
To the Great Akbar's state,
Of wich poets have sedate,
To the splendour sung,
Of the mighty Aurang,—
You are welcome, O Emp'ror and Empress of nations;-
We send you our greetings and blithe salutations
From town and from hamlet, from valley and gorge
Our Benign Empress Mary and Great Emp'ror George,

VI

From the country of faith where the Vedas were sung,
Where Religion first grew on the banks of the Gung,
From the land of Gaurang and the great Mahabir,
Of Shri Ramanand, Nanak and peerless Kabir,
From the plains of Behar,
From the gay Hindustan,
Which has brought forth a star
Like the godly Bhagwan,
From the hand of Lord Budha, the teacher of nations,
We send you our greetings and blithe salutations,
From town and from hamlet, from valley and gorge,
Our benign Empress Mary and good Emp'ror George

VII.

Oh ! upraise our poor country-she prays for your grace—
And her children expectant they gaze at your face,
while their eyes,full of tears, swim in brightness & sheen
As they witness enraptured their King and their Queen,
From their Fanes' blessed ground
where in numbers they throng,
while the churches resound
wity a joyous ding-dong.
The devoutly pronounce benidictions on you,
And they pour forth their bosoms, soloyal and true,
In a ringing acclaim from each plain and each gorge,
Our Benign Fmpress Mary and Good Emp'ror George !

VIII

'Tis a blessed occasion—a moment like this—
When our country is plunged in an ocean of bliss,
When her fond eye of hope is expectant of boons
That must brighten her huts and her princely saloons—
From the cot of the poor,
To the dome of the grand,
From the low tracts of moor
To the hills of her land—
From the heights of Himal to the far Travancore,
She will dance in her mirth and her Gratitude pour,
And will sing from each plain, from each valley & gorge,
"Heaven bless Empress Mary and good Emp'ror George !"

RAGHUBIR NARAYANA SHARAN,
Author of *A Tale of Behar.*
Scenes from the Ramayana.
&c., &c., &c.

CORONATION SONG.

Once again the plains of India
Garb themselves in princely sheen;
Once again imperial Delhi
Glories in her King and Queen !

2

Once again the flowers of India
Run to kiss the sacred Throne—
And Remembrance rakes up visions
From the wrecks of ages flown !

3

Visions of imperial grandeur
wake with all their gay romance
And the phantom from of Moghuls
Flit before our eyes and dance !

4

Prithviraj's and Khurrum's splendour,
Mighty Akber's glorious reign,
And the good old days of Bharat,—
For a moment live again,

5

As, in regal pomp and grandeur,
Hail'd with greetings warm and loyal,
Fmp'ror George and Empress Mary
Place Their feet on Indian Soil,

6

Blessed is the ancient city
where our Emp'ror wears His crown!
Blessed, we who do Him homage
Through the ruler of our town!

7

Let us sing the song which rises
from each plain and vale and gorge—
"God protect our Empress Mary!
Heaven defend our Emp'ror George!

CORONATION SONG.

From the land of good Victoria,
where the bleams of Fortune shine
And the spoils of Science and Valour
In a graceful whole combine—
From the realm of Peaceful Edward
With its wealth of floral sheen,
Over which He reign'd in glory
With his graceful Danish Queen!—
Emp'ror George and Empress Mary
They are welcome to our Plains,
Where the King of vernal season
In his freshness breathes and reigns!
To the land of worth and Greatness,
Thinkers bold and singers grand!—
To the glories of our Mountains,

and the wonders of our land !—
Welcome to our eyes expectant—
Eyes that fain swim in fearful sheen—
Eyes that fain for e'er would linger
On their smiling King and Queen
We are Theirs !-and Theirs our Country !-
Theirs the Proud imperial crown,
Worn in splendour by the Hindus
And the Moghuls of renown !
Let us pray and sing in rapture
From each laughing plain and gorge:
" God protect our Empress Mary !
Heaven defend our Emp'ror George !

RAGHUBIR NARAYANA
(Author of ' A Tale of Behar ' and other poems)
Offg. Asstt. Master Zila School, Chapra.

राष्ट्रगीत.

(बेंडकी चाल.)

गॉड् सेव्ह् अवर ग्रेशस् किंग्!
लॉंग लिव्ह् अवर नोबल् किंग्!
गॉड् सेव्ह् द् किंग्!
सेंड् हिम् व्हिक्टोरियस्!
हापि अँड् ग्लोरियस्!
लॉंग टु रेन् ओव्हर् अस्
गॉड सेव्ह् द् किंग्!



घोषणापत्र।

महाराजाधिराज राजराजेश्वर की तरफसे

शाहीइश्तिहार।

श्रीमान् महाराजाधिराज-राजराजेश्वरके राज्यमें श्रीमान् के राजतिलक की रस्मके होजाने की सूचना देनेके लिये।

श्रीमान् जार्ज पंचम महाराजा धिराज राजराजेश्वर।

जो कि हमने अपने राज्यके पहिले वर्षमें सन् उन्नीस सौदस ई० की उन्नीसवी जुलाई और सातवीं नवम्बर के अपने शाही इश्तिहारोंके ज़रिये से अपने इस शाही इरादःको जाहिर और प्रकाशित कियाथा कि सर्व शक्तिमान् परमेश्वर की कृपा और दयासे हम अपने राज तिलककी रस्म सन् उन्नीससौ ग्यारहई० की बाईसवींजून को करेंगे;

और जो कि सर्व शक्तिमान् परमेश्वर की कृपा और दयासे हमने पिछली बाईसवींजून बृहस्पति वारको वह रस्म करली है;

और जो कि हमने अपने राज्यके पहिले वर्षमें अपने शाही इश्तिहारके ज़रियेसे जो सन् उन्नीस सौ ग्यारह ई० की बाईसवीं मार्चको जारी हुआथा यह ज़ाहिर किया था कि हमारी यह इच्छा और मर्ज़ी है कि हम खुद अपनी उन सब

प्रेमी प्रजापर जो हमारे हिन्दुस्थान के राज्यमें हैं यह जाहिर करें कि वह रस्म करली गई, और अपने गवर्नरों और लेफ्टिनेन्ट-गवर्नरों और अपने दूसरे ओहदादारोंको, और उन हिंदुस्थानी रियासतों के वालियान और रईसों और अमीरोंको जो हमारी रक्षामें हैं और अपने हिंदु स्थान-के राज्यके सबसूबोंके मुख्य २ लोगोंको अपने हुजूरमें बुलाये;

इस लिये अब हम अपने इस शाही इश्तिहारके ज़रियेसे, यह ज़ाहिर करते हैं कि हमारे राज तिलककी रस्म होगई, और हम अपनी महाराजाधिराज और राजराजेश्वरकी हैसियतसे अपने सब ओहदादारोंका और सब वालियान-मुल्क और रईसोंका और सब कौमोंका जो इस वक्त दिल्लीमें जमा हैं स्वागत करते हैं, और उन सबका इसका यकीन दिलाते हैं कि हमको अपने हिन्दुस्तानके राज्यसे गहरा प्रेम है, और हम हरवक्त उसकी भलाई और खुशहाली चाहते रहते हैं और ऐसेही सदा चाहते रहेंगे।

यह इश्तिहार हमारे राज्यके दूसरे वर्षमें बारहवीं दिसम्बर सन् उन्नीससौ ग्यारह ई. को हमारी राज सभा, मुकाम दिल्ली, से ज़ारी हुआ॥

परमात्मा महा राजाधिराज-राजराजेश्वरको सलामत रक्खें॥

पुस्तक मिलनेका पता

राजेंद्रनाथ पंडित

ठि. साम सवाई मंदिर

पो. डभोई-(बड़ोदा)

तथा

साधु कार्यालय

बड़ोदा (गुजरात)

